जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

बीकानेर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 2200660 फैक्स : 0151-2527371 वर्षः 46 संख्याः 48 प्रभात बीकानेर, रविवार 8 सितम्बर, 2024 डाक प.स.बीकानेर/045/2020-22 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रू.

अपनी ''फोकस्ड'' शैली के कारण कमला हैरिस का पलड़ा भारी पड़ रहा है ट्रम्प पर

पर, भारतीयों का अमेरिका में सबसे बड़ा संगठन, ''हिन्दूज़ फॉर अमेरिका फर्स्ट'' पूर्णतया डॉनल्ड ट्रम्प के पक्ष में खड़ा है, अमेरिका के राष्ट्रपति चुनाव में

- वर्तमान राष्ट्रपति जो बाइडन, ट्रम्प के सामने कमज़ोर पड़े, क्योंकि वे अपने भाषणों में ''फोकस्ड'' नहीं थे तथा वे अपने प्रतिद्वंदी की कमज़ोरी व गलतियों का लाभ उठाने में प्रभावी नहीं पाये गए थे।
- कमला हैरिस, परन्तु, एक सफल वकील रही हैं, अतः उनकी टिप्पणियाँ प्रतिद्वंदी के खिलाफ तीखी व तिलमिला देने वाली होती हैं।
- ट्रम्प अपने भाषणों में बड़े ''नाटकीय'' व ''अनफोकस्ड'' होते हैं तथा विचारों पर अनुशासित नहीं रह पाते। उनका यह आचरण कमला हैरिस को पूर्ण मौका देता है, ट्रम्प की आँकड़ों की सच्चाई व तर्कों के सतहीपन पर सार्वजनिक रूप से आक्रमक होकर, पूरा राजनीतिक लाभ उठाने का।
- बाइडन ऐसा नहीं कर पाते थे, अतः ''रेस'' से बाहर हो गये और कमला हैरिस अच्छी तरह से कर सकती हैं, अतः ''रेस'' जीत भी सकती हैं।

-सुकुमार शाह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 सितम्बर। राष्ट्रपति जो बाइडन के साथ जून में हुई अपनी बहस में, पूर्व राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रम्प ने अपने प्रशासनिक कार्यों की अभूतपूर्व प्रकृति की डींगें मारी थीं तथा कहा था कि मेडिकल नजरिये से देखने पर भी, इससे पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था। उन्होंने ''राइट टु ट्राई'' जैसी पहलों का उल्लेख किया जिसके चलते ''टर्मिनली'' बीमार मरीजों को दूसरे देशों में इलाज के लिए जाने देने के बजाय, कटिंग-ऐज-मैटिरियल'' का उपयोग करते हुए, उनका प्रायोगिक तौर पर इलाज किया गया। ट्रम्प का अंतिम तर्क अटपटा था, लेकिन जहाँ बाइडन का प्रदर्शन उल्लेखनीय रूप से कमजोर था, वहीं उस रात को ट्रम्प की सफलता का कारण बाइडन की ओर ज्यादा बड़ी असफलता रही।

यद्यपि बाइडन के जवाब लिखित रूप में तो काफी सुसंगत थे, लेकिन अप्रभावी प्रस्तुति तथा ट्रम्प की बहुत बड़ी गलतियों का प्रभावी रूप से प्रतिकार करने में उनकी असमर्थता ने उनके जवाबों का सत्यानाश कर दिया था।

ट्रम्प की बहस में भ्रामक बयान तथा निराधार दावों की भरमार थी, जैसे उनका यह कहना, कि 6 जनवरी को संसद भवन पर हुए हमले की जिम्मेदारी हाउस स्पीकर नैन्सी पेलोसी ने ले ली थी। ''द इकॉनॉमिस्ट'' का एक लेख कहता है कि अतिशयोक्तियों तथा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'अचानक घटना से कार्डिऐक अरैस्ट हो सकता है'

जयपुर, 7 सितंबर। जिले की मोटर एक्सिडैंट क्लेम ट्रिब्यूनल (एम.ए.सी.टी.) ने एक महत्वपूर्ण फैसले में कहा है कि किसी व्यक्ति के साथ अकस्मात घटना होने पर, चोटों के बिना भी, उसे कार्डियक अरेस्ट आ सकता है। ऐसी स्थिति में बीमा कंपनी क्लेम देने की जिम्मेदारी से बच नहीं

- मोटर एक्सिडैंट क्लेम ट्रिब्युनल ने यह टिप्पणी करते हुए बीमा कम्पनी से कहा कि वह मृतक के परिवार को ''क्लेम'' की राशि दे।

सकती। वहीं कोर्ट ने विपक्षी बीमा कंपनी को निर्देश दिया कि वह प्रार्थिया को क्षतिपूर्ति के तौर पर14.31लाख रुपए की राशि ब्याज सहित दे। कोर्ट ने कहा कि यदि अकस्मात घटना नहीं होती तो उसकी मौत नहीं होती। कोर्ट ने यह आदेश लाल कंवर व अन्य की क्लेम याचिका पर दिया।

याचिका में कहा कि प्रार्थिया का पति महावीर सिंह 12 जनवरी 2022 की रात आठ बजे अपने ट्रक को कनकपुरा फाटक के पास खड़ा कर पैदल-पैदल खाना खाने होटल पर जा रहा था। वह महफिल होटल के पास पहुंचा तो नैशनल इंश्योरेंस कंपनी से बीमित मोटरसाइकिल के चालक ने गलत साइड से आकर उसे टक्कर मारी। इसमें उसे खरोंच आई और वह बेहोश

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विनेश व पूनिया के कांग्रेस में जाने से तिलमिलाई भाजपा बृज भूषण की शरण में पहुंची

बृज भूषण ने विनेश फोगाट, बजरंग पूनिया पर आरोपों की बौछार की

- बृज भूषण शरण सिंह ने कहा, 18 जनवरी 2023 को दिल्ली में जंतर मंतर पर जो आंदोलन हुआ था वह खिलाड़ियों का आंदोलन नहीं था। सारा आंदोलन कांग्रेस का षड्यंत्र था, जिसे भूपिंदर सिंह हुड्डा लीड कर रहे थे।
- बृज भूषण ने विनेश फोगाट और बजरंग पूनिया के कांग्रेस में जाने पर कहा, इससे स्पष्ट है कि उनके खिलाफ जो भी आरोप लगाए गए हैं वे सभी राजनीति से प्रेरित हैं।
- ज्ञातव्य है कि, रैसलिंग फैडरेशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष और भाजपा के बाहुबली नेता बृज भूषण पर महिला पहलवानों के यौन उत्पीड़न का आरोप है और उनके खिलाफ आंदोलन किया गया था जिसके कारण उन्हें पद छोड़ना पड़ा था।

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 सितम्बर। हरियाणा में विधानसभा चुनावों से ठीक पहले दो पहलवानों- विनेश फोगाट तथा बजरंग पूनिया के देश की सबसे पुरानी पार्टी, कांग्रेस में शामिल हो जाने के बाद भाजपा द्वारा इन दोनों ओलम्पियनों पर प्रहार करने के लिये कुख्यात बाहुबली बृजभूषण सिंह को मैदान में उतार दिया गया है ताकि कांग्रेस इन दोनों का चुनावी लाभ न ले सके। इस पृष्ठभूमि में, सत्तारूढ़ भाजपा और विपक्षी कांग्रेस में आरोप-प्रत्यारोप का दौर शुरु हो गया है।

रेसलिंग फैडरेशन ऑफ इंडिया (डब्ल्यू.एफ.आई.) के पूर्व अध्यक्ष तथा भाजपा के बाहुबली सिंह ने आज कहा कि विनेश फोगाट और बजरंग पूनिया के कांग्रेस में शामिल होने से यह सिद्ध हो गया है कि पहलवानों द्वारा उनके खिलाफ किया गया विरोध प्रदर्शन कांग्रेस की साजिश का परिणाम था तथा इसके पीछे हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हूडा का दिमाग काम कर रहा था। सूत्रों का कहना है कि भाजपा हाईकमान ने भाजपा के पूर्व सांसद सिंह से खासतौर से कहा है कि उन्हें कांग्रेस को इसका चुनावी लाभ लेने से रोकना है।

पहलवान विनेश फोगाट और बजरंग पूनिया की इस राजनैतिक छलाँग के बाद आये पूर्व डब्ल्यू.आई.एफ. अध्यक्ष सिंह के साजिश के आरोप के तुरन्त बाद वरिष्ठ कांग्रेस नेता पवन खेड़ा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

हरियाणा में नहीं होगा कांग्रेस और आप का गठबंधन?

आप की ज़िद ने दोनों दलों के बीच सीटों के बंटवारे की वार्ता में गतिरोध पैदा किया

- आम आदमी पार्टी 90 सीटों में से 10 सीटें मांग रही है, पर, कांग्रेस 5-7 देना चाहती है।
- आप नेताओं ने धमकी भी दी कि आप को कमज़ोर ना समझा जाए, वह 90 सीटों पर चुनाव लड़ने को तैयार है।
- कांग्रेस ने आप पार्टी की धमकी पर अभी तक कोई टिप्पणी नहीं की है।

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 सितम्बर। लगता है कि आम आदमी पार्टी हरियाणा में अपने पैर फैलाने की अधिक इच्छुक है, बजाय कांग्रेस के साथ मिलकर भाजपा का मुकाबला करने के, क्योंकि इण्डिया ब्लॉक की दोनों सहयोगी पार्टियों के बीच संख्याओं को लेकर सीट शेयरिंग की वार्ता विफल होने के कगार पर है।

हरियाणा विधानसभा चुनावों के लिए कांग्रेस के साथ गठबंधन को लेकर चल रही अनिश्चितताओं के बीच आज आप ने, सीट शेयरिंग वार्ता को एक मौका देने के लिए चुप्पी बनाए रखने के बजाय धमकी दे डाली, कि जो लोग पार्टी को ''कम आंक'' रहे हैं वो ''पछताएंगे।''

दिन के शुरु में आप की राष्ट्रीय मुख्य प्रवक्ता प्रियंका कक्कड़ ने कहा कि बातचीत चल रही है। उन्होंने उम्मीद जताई कि ''कुछ निर्णय'' होगा, क्योंकि, वार्ता जारी है और अभी से कुछ कहना जल्दबाजी होगी। उनसे पूछा गया था कि यदि कांग्रेस के साथ गठबंधन हो जाता है तो आप कितनी सीटों पर चुनाव लड़ेगी।

एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान, आप के राष्ट्रीय सचिव (संगठन) संदीप पाठक ने कहा, ''हम पूरी तरह तैयार हैं और पार्टी के आदेश का इंतज़ार कर रहे हैं तथा जो भी हमें कम समझेगा वो भविष्य में खुद ही पछताएगा।''

दूसरी तरफ कांग्रेस ने आप नेताओं के उकसाने पर प्रतिक्रिया ना देकर गरिमा बनाए रखने का रास्ता चुना है।

कांग्रेस तथा आप के बीच गठबंधन की वार्ता में सीट शेयरिंग को लेकर गतिरोध पैदा हो गया है। सूत्रों के अनुसार, आप ने 10 सीटों की मांग की थी, जबकि, कांग्रेस ने 5 से 7 सीटें देने का प्रस्ताव दिया था। हरियाणा में 5 अक्टूबर को चुनाव होने हैं तथा नामांकन दाखिल करने की अंतिम

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पेपर लीक केस में राईका की रिमांड बढ़ी

जयपुर, 7 सितंबर। मुख्य महानगर मजिस्ट्रेट ने एस.आई. भर्ती-2021 के पेपर लीक मामले में आर.पी.एस.सी. के पूर्व सदस्य रामू राम राईका और उसके बेटे देवेश व पुत्री शोभा सहित तीन अन्य की रिमांड अवधि दस सितंबर तक बढ़ा दी है। वहीं, 6 सितंबर को जोधपुर से गिरफ्तार ऋतु शर्मा को भी

- मुख्य महानगर मजिस्ट्रेट ने आर.पी.एस.सी. के पूर्व सदस्य रामूराम राईका, उनके पुत्र देवेश, पुत्री शोभा व तीन अन्य की रिमांड 10 सितम्बर तक बढ़ा दी है।

दस सितंबर तक रिमांड पर भेजा है।

एस.ओ.जी. की ओर से रिमांड अवधि पूरी होने के बाद राईका, मंजू देवी, अविनाश पलसानिया और विजेन्द्र कुमार को अदालत में पेश किया गया। एस.ओ.जी. ने कहा कि आरोपियों से

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

बैंगलोर में फिर गर्माया हिंदी बनाम कन्नड़ विवाद

एक्स पर कन्नड़ व हिंदी समर्थकों के बीच भारी गर्मागर्मी का माहौल

- सारा विवाद एक ऑटोरिक्शा चालक और एक प्रवासी महिला के बीच राइड कैंसिल करने को लेकर शुरु हुआ, ऑटोरिक्शा चालक ने महिला को थप्पड़ मार दिया था।
- पुलिस ने चालक की इस हरकत को गलत बताकर गिरफ्तार कर लिया, पर बैंगलोर के स्थानीय लोग ऑटोरिक्शा चालक को ''पीड़ित'' बता रहे हैं।
- स्थानीय लोगों का कहना है कि प्रवासी ना केवल उनके रोजगार छीन रहे हैं बल्कि सालों यहां रहने के बाद भी कन्नड़ भाषा का एक शब्द नहीं सीखते और स्थानीय लोगों पर हिंदी बोलने का दबाव डालते हैं।

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 सितम्बर। कर्नाटक में निकट भविष्य में तो कोई चुनाव नहीं है। लेकिन एक्स पर भाषाई मुद्दे पर भावनापूर्ण बयानों की भरमार है। कन्नड़ लोग प्रवासियों के बेतुके कटाक्षों और भाषाई के कट्टरता के प्रति भी उत्तेजक टिप्पणियां कर रहे हैं।

गत दो-तीन दिन से सोशल मीडिया साइट एक्स पर कन्नड़ भाषा के पैरोकार काफी गुस्से में हैं और तथाकथित हिंदीभाषियों को आड़े हाथों ले रहे हैं, क्योंकि हिंदी भाषा के समर्थकों का कहना है कि हिन्दी एकमात्र भाषा है जो सबको जोड़ती है उनका यह कहना है कि भारत में सभी को हिन्दी बोलनी चाहिए क्योंकि यह हमारी राष्ट्रभाषा है, जो कि सही नहीं है हिन्दी भी अंग्रेजी की तरह राजकीय भाषा है।

मामला उस समय चरम पर पहुंच गया जब एक ऑटोरिक्शा ड्राइवर ने एक प्रवासी महिला यात्री को थप्पड़ मार दिया क्योंकि उस महिला ने ऑटोरिक्शा ड्राइवर को थोड़ी देर इंतजार कराने के बाद राइड कैन्सिल कर दी थी। इसके बाद दोनों में तीखी बहस हुई लेकिन इससे स्थानीय बनाम बाहरी मुद्दा भी गर्मा गया। इसके बाद ट्विटर पर दोनों पक्षों के लोग कूद पड़े और एक प्रकार का भाषा युद्ध छिड़ गया। ऑटोरिक्शा ड्राइवर को गिरफ्तार किया गया उसे जमानत के लिए तीस हजार रुपये खर्च करने पड़े। इस सबके बाद भी मामला ठंडा नहीं हुआ। हालिया खबरों के अनुसार ड्राइवर अभी भी हिरासत में है उसकी गिरफ्तारी ने कन्नड़ लोगों को एकजुट कर दिया है। उनका कहना है कि प्रवासी यहाँ आते हैं। बरसों रहते हैं पर स्थानीय लोगों के साथ बात कर पाने के लिए कन्नड़ भाषा का एक शब्द भी नहीं सीखते हैं। इसकी बजाय वे स्थानीय लोगों पर हिन्दी बोलने का दबाव बनाते हैं। कन्नड़ लोगों ने इसका घोर विरोध किया और कहा, ऐसा लगता है कि हमारे क्षेत्र में हम ही बाहरी हो गए हैं।

बैंगलोर की पुलिस ने ड्राइवर के हिंसात्मक व्यवहार को आपत्तिजनक माना और कहा कि राइड कैन्सिल करने में हिंसा की कोई जगह नहीं है। ऑटो चालक ने कानून को अपने हाथ में लेकर गलती की है। उक्त ऑटो चालक की गिरफ्तारी के बाद कन्नड़ लोग उसे ''पीड़ित'' बता रहे हैं।

लेकिन इस मामले को अधिकांशतः नकारात्मक प्रचार मिला है और उसे देखते हुए अगर पुलिस ने सजगता नहीं बरती तो संभावना है कि इससे माहौल बिगड़ सकता है। स्थानीय लोग इस बात से भी नाराज़ हैं कि काफी तादाद में प्रवासी भी ऑटो चला रहे हैं। उन्हें डर हैं कि उनकी आजीविका छिन रही है।

इस बात से कर्नाटक सरकार के प्राइवेट सैक्टर की कम्पनियों में निचले स्तर के 80 प्रतिशत पद स्थानीय लोगों के लिए आरक्षित करने के निर्णय को समझा जा सकता है। फिलहाल इस निर्णय को होल्ड पर रखा है क्योंकि प्राइवेट सैक्टर ने इसका विरोध किया और कहा यह नीति उन्हें सही प्रतिभा ढूंढने से रोक रही है।

लेकिन ऑटोरिक्शा ड्राइवर की घटना और टाटा कम्पनी द्वारा कर्नाटक व तमिलनाडू की फैक्ट्री के लिए चार हजार टैक्नीशियन बाहर लाने के निर्णय तनाव को और ज्यादा बढ़ा रहे हैं।

नाबालिग का अपहरण और रेप, आरोपी को 20 साल की सजा

जयपुर, 7 सितंबर। जिले की पॉक्सो मामलों की विशेष अदालत ने नाबालिग का अपहरण कर उसके साथ कई बार दुष्कर्म करने वाले अभियुक्त

- पॉक्सो मामलों की विशेष अदालत ने आरोपी महादेव प्रसाद पर 1.75 लाख रूपए का जुर्माना भी लगाया। पीड़िता जब 11वीं कक्षा की छात्रा थी तब आरोपी उसका शिक्षक था।

महादेव प्रसाद को बीस साल की सजा सुनाई है। इसके साथ ही अदालत ने 29 वर्षीय इस अभियुक्त पर 1.75 लाख रुपए का जुर्माना भी लगाया है।

अभियोजन पक्ष की ओर से विशेष लोक अभियोजक विजया पारीक ने अदालत को बताया कि घटना को लेकर पीड़िता के पिता ने 13 अप्रैल, 2022 को गोविंदगढ़ थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। रिपोर्ट में कहा कि बीती रात उसकी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

यूक्रेन काफी थक गया है, अपने से एक बहुत बड़े देश के साथ लम्बे समय से युद्ध करते-करते

पश्चिमी देशों की यूक्रेन को और आधुनिकतम हवाई जहाज देने में कुछ हिचकिचाहट के कारण यूक्रेन के पास ऐसे हवाई जहाज नहीं हैं जो रूस के बहुत अंदर जाकर बमबारी कर सकें, अतः युद्ध खिंचता ही जा रहा है

- पश्चिमी देशों की हिचकिचाहट का कारण, वो यह अंदाजा नहीं लगा पा रहे हैं कि इस ''डीप बमबारी'' के बाद रूस की क्या प्रतिक्रिया होगी। रूस और आक्रामक भी हो सकता है तथा उसके मित्र राष्ट्र, जो अभी किनारे खड़े होकर सहानुभूतिपूर्ण आँखों से युद्ध देख रहे हैं, पर, युद्ध में रूस के पक्ष में कूदे नहीं हैं।
- हताश होकर यूक्रेन ने पुराना हथियार ''थरमाईट'' ढूंढकर, पोंछ पांछ कर निकाला है तथा ड्रोन्स पर चढ़ाकर, रूस पर ड्रोन्स से आक्रमण करने की रणनीति बना ली है।
- ''थरमाईट'' 2220 डिग्री सैन्टीग्रेड तक की आग बरसा सकता है तथा जमीन पर इस भारी आग से तबाही मचती ही है, साथ ही यह शत्रु के सैनिकों में भय फैला देता है तथा जंगलों में गुफाओं में छुपे सैनिक बाहर आने को मजबूर हो जाते हैं।

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 सितम्बर। हताशा से भरा यूक्रेन अब एक नए प्रकार के हथियार का प्रयोग कर रहा है, जिसने रूस के अग्रिम पंक्ति के सैनिकों में दिल दहलाने वाला भय पैदा हो रहा है।

यूक्रेन के नवीनतम ड्रोन रूसी सेना पर आग बरसा रहे हैं और ये इतने घातक हैं कि रूसी सेना आतंकित हो रही है। लेकिन, यूक्रेन के मित्र इस बात को लेकर चिंतित है कि रूस इन हथियारों के जवाब में क्या प्रतिक्रया दे सकता है।

ये ड्रोन, जिन्हें ड्रैगन ड्रोन्स कहते हैं, आकाश से अल्युमिनियम पाउडर और आयरन ऑक्साइड का मिश्रण छोड़ते हैं, जो 2,220 सैंटीग्रेड तक ''हीट'' पैदा कर सकता है और यह उस पूरे क्षेत्र को जलाने में सक्षम हैं जहाँ ड्रोन हमले किए जा रहे हैं। इस तरह की आग मनुष्य को भयंकर नुकसान पहुँचा सकती है। यदि कोई इस आग से बच भी गया तो उसे ठीक होने में महीनों लग सकते हैं।

इन दो तत्वों का मिश्रण, जिसे थरमाइट्स कहते हैं, का प्रयोग प्रथम तथा द्वितीय विश्व युद्ध में किया गया था। इस मिश्रण की प्रकृति (प्रोपर्टीज़) की खोज जर्मनी के एक वैज्ञानिक ने सन् 1890 में की थी। अपनी ''थर्मल वैल्यूज़'' के कारण यह तत्व रेलवे लाइन बिछाने और रेल लाइन को वैल्ड करने में उपयोगी पाया गया था।

बाद में, जब प्रथम विश्व युद्ध शुरू हुआ तो, जर्मनी ने दुश्मन में दहशत फैलाने के लिए मिलिटरी टूल के रूप में इसको उपयोगी पाया। इस तरह प्रथम विश्व युद्ध में इसका उपयोग शुरू हुआ।

यूक्रेन अब ड्रोन हमलों में हथियार के रूप में थरमाइट्ज का उपयोग कर रहा है। इन ड्रोन्स का उपयोग अग्रिम पंक्तियों में किया जा रहा है, तथा इससे जंगलों में गुफाओं में छुपे हुए रूसी सैनिक भी बाहर आने को मजबूर हो जाते हैं। अत्यधिक तेज आग भड़काने वाली प्रकृति के कारण, यूक्रेन ने इन ड्रैगन फायर ड्रोन्स का उपयोग हाल ही में घने जंगली क्षेत्रों में किया है, जहाँ रूसी सैनिकों ने पोज़ीशन ले रखी थी।

ये ड्रोन बड़े-बड़े क्षेत्रों में आग लगाकर छुपे रूसी सेनिकों को बाहर ला सकते हैं। इन ड्रोन्स के द्वारा पिघली धातु आकाश से गिरती है। यूक्रेन ने इस टैक्नॉलोजी की भारी सफलता का दावा किया है। यूक्रेन, रूस की बढ़ी हुई एयर स्ट्रायक्स का जवाब देने के लिए अपने पास एयर फायर पावर नहीं होने की शिकायत करता आया है। रूसी एयर फोर्स ने यूक्रेन की पोज़ीशन्स को भारी नुकसान पहुँचाया है। रूस जब चाहे तब सिविलियन टारगैट्स पर हमला कर रहा था। क्योंकि यूक्रेन की मोर्चाबंदी कुछ ढीली पड़ रही है।

यूक्रेन के मित्र राष्ट्र, अमेरिका तथा यूरोपीय देश उसे हथियार तथा असला सप्लाई करने में कुछ हिचकिचा रहे हैं। इसलिए यूक्रेन को अपने देश में ही नुकसान उठाना पड़ रहा है तथा रूस को लाभ हो रहा है।

इस हिचकिचाहट का आधार यह तथ्य है कि उन्हें लगता है यूक्रेन को लम्बी दूरी तक मार करने वाले हथियार देने का मतलब होगा कि वो रूस की सीमा के बहुत अंदर तक हमला कर पाएगा। पर इससे रूस की तरफ से अविश्वसनीय प्रतिक्रिया हो सकती है। लेकिन, यूक्रेनियन्स हताश हैं, कि उनके पास समय नहीं बचा है ना ही गतिशीलता। एक छोटा देश, यूक्रेन, लंबे समय से अपने से बहुत बड़े दुश्मन से लड़ रहा है। वो अपनी आर्मी तथा अन्य फोर्सेज में सैनिकों की कमी पूरी नहीं कर पा रहा है। यूक्रेन की हताशा की एक

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मणिपुर में उग्रवादियों के हमले में पांच की मौत

इम्फाल, 7 सितंबर। मणिपुर में बीते साल मई से चल रहा तनाव कम होने का नाम नहीं ले रहा है। बिष्नुपुर में रॉकेट अटैक के बाद अब हिंसा में कम से कम पांच लोगों की मौत हो गई है।

- मणिपुर में ताजा हिंसा की घटनाओं के बाद पिछले पांच दिनों से तनाव बहुत बढ़ गया है। शुक्रवार की रात बिष्णुपुर में एक शख्स की हत्या कर दी गई थी। इसके अलावा, मणिपुर राइफल्स के हैडक्वार्टर से हथियार लूटने की कोशिश की गई।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक यह आंकड़ा बढ़ भी सकता है। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि एक व्यक्ति की उस समय गोली मारकर हत्या कर दी गई, जब वह सो रहा था, वहीं बाद में हुई गोलीबारी में चार हथियारबंद लोग मारे गए। मणिपुर पुलिस अधिकारी के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

कोई भी इतना धनि नहीं कि पड़ौसी के बिना काम चला सके –डेनिस कहावत

गरीबी दूर किये बिना कोई व्यक्ति या समाज स्वस्थ और प्रसन्न नहीं रह सकता

बात कम से कम 5,000 से ,8000 पहले की है। उत्तर भारत के घने वनों में महर्षि-वैज्ञानिक भगवान् आत्रेय अपने शिष्यों को चिकित्सा-विज्ञान सहित आयु का समग्र विज्ञान पढा रहे थे। उनके छः दिग्गज विद्यार्थी-जो आगे चलकर प्राचीन भारत के महान चिकित्सा-वैज्ञानिक बने-चिकित्सा के मूल सिद्धान्तों को समझने में व्यस्त थे। तभी एक विचित्र बात आती है:–

;सुनो अग्निवेश! जीवन में आजीविका और धन प्राप्ति का प्रयास न करने से बडा कोई पाप नहीं।; भगवान् आत्रेय ने अपने एक शिष्य को संबोधित करते हुये कहा।

भगवान् आत्रेय ने अपनी बात को आगे बढाते हुये स्पष्ट किया (च.सू.11.5)-

अथ द्वितीयां धनैषणामापद्येत, प्राणेभ्यो ह्यनन्तरं धनमेव पर्येष्टव्यं भवति; न ह्यतः पापात् पापीयोऽस्तियदनुपकरणस्य दीर्घमायुः, तस्मादुपकरणानि पर्येषुं यतेत।

तत्रोपकरणोपायाननुव्याख्यास्यामः; तद्यथा कृषिपाशुपाल्यवाणिज्यराजोपसेवादीनि, यानि चान्यान्यपि सतामविगर्हितानि कर्माणि वृत्तिपुष्टिकराणि विद्यात्तान्यारभेत कर्तुं;

तथा कुर्वन् दीर्घजीवितं जीवत्यनवमतः पुरुषो भवति।

अर्थात् प्राणों के बाद दूसरे क्रम पर धन की इच्छा आती है। जीवन में व्यक्ति को धन कमाने या आजीविका प्राप्त करने का प्रयत्न करना आवश्यक है। पक्की तौर पर प्राणों के बाद धन ही महत्वपूर्ण है। निश्चय ही इससे बडा कोई पाप नहीं कि जिन्दगी भर स्वास्थ्य, सुख, धर्म और धन से विहीन जीवन हो। इसलिये धन प्राप्ति के उपाय करना आवश्यक है। इस हेतु जो उपकरण या साधन हैं उनमें खेती-बाडी, पशुपालन, वाणिज्य-व्यापार, सरकारी नौकरी या आजीविका को सुदृढ करने हेतु विद्वानों द्वारा सुझाये गये अन्य अच्छे कार्यों को प्रारंभ कर आजीविका तथा धन संपत्ति अर्जित करते हुये समाज में उचित सम्मान और प्रतिष्ठापूर्वक दीर्घ-जीवन जीना चाहिये।

यह सुनकर आज हमें यह आश्चर्यजनक प्रतीत हो सकता है कि आयु के विज्ञान या चिकित्सा-विज्ञान से संबंधित शिक्षा-सत्र में भगवान् आत्रेय अचानक गरीबी, धनार्जन और संपत्ति जैसे विषय पर व्याख्यान क्यों दे रहे हैं। वस्तुतः आयुर्वेद की यह शिक्षा अपने समय से बहुत आगे थी। आज विश्व के सर्वाधिक प्रतिष्ठित शोध जर्नल्स में प्रकाशित शोध विश्लेषण निर्विवाद सिद्ध करते हैं कि जो लोग गरीबी में रहते हैं, वे मानसिक बीमारियों से प्रभावित रहते हैं देखें, एम. रिडले इत्यादि, साइंस, 370(6522): 11 दिसम्बर, 2020। गरीबी बौद्धिक और संज्ञानात्मक क्रियाओं और क्षमताओं को बिगाडती है। रुपये-पैसे की कमी के कारण गरीब की निर्णय-क्षमता दुष्प्रभावित होती है। ऐसा इसलिये होता है क्योंकि गरीबी व्यक्ति के दिमाग पर संज्ञानात्मक-बोझ डालती है। यह बोझ दिमाग को इतना चूस लेता है कि उन्नति पर ध्यान देने की क्रिया बाधित होती है, व्यक्ति प्रयास ही नहीं कर पाता और गरीबी और बीमारी के भंवर में फंसा रहता है देखें, आनंदी मणि इत्यादि, साइंस, 341(6149): 976-980, 2013; एस.एल जेम्स इत्यादि, लैंसेट, 392(10159):1789-1858 2018; ई. रेनाही इत्यादि, यूरोपियन जर्नल ऑफ़ पब्लिक हेल्थ, 28 (2):269-275, 2018। गरीबी और ज़रा-जीर्णता (फ्रेलिटी) के मध्य बहुत मज़बूत रिश्ता हाल की शोध से स्पष्ट होता है देखें, ए.ए. हयाजनेह, एम. रबाबा, डेमेंशिया एंड जेरियाट्रिक कॉग्निटिव डिसऑर्डर्स, 50(5): 407-413, 2022। सकल-कारण मृत्यु दर को बढ़ाने में गरीबी एक बहुत बड़ा जोखिम कारक है और इस विषय पर 300 से अधिक शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं। दुनियाभर में गरीबी और स्वास्थ्य के मध्य रिश्तों पर 31 दिसम्बर 2022 तक 78,500 से अधिक शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं। अब आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि चिकित्सा विज्ञान में 8,000 साल पहले धनार्जन करने व गरीबी हटाने की सलाह क्यों दी गई होगी।

गरीबी में जीवन-यापन करने वाले लोग मानसिक बीमारी से क्यों प्रभावित रहते हैं? इस विषय पर गरीबी और मानसिक बीमारियों जैसे अवसाद और चिंता आदि के बीच अंतर्निहित संबंध पर हुये अध्ययन रोचक हैं। अनुसंधान से पता चलता है कि एक तरफ गरीबी मानसिक बीमारी को बढ़ावा देती है और वहीं यह रोजगार के अवसरों तक पहुँच को कम करती है। यह इस बात से भी सिद्ध होता है कि गरीबों के जीवन में आय बढ़ाने के उपाय और मनोवैज्ञानिक चिकित्सकीय हस्तक्षेप दोनों मिलकर आर्थिक लाभ उत्पन्न करते हैं और स्वास्थ्य में बेहतरी लाते हैं। इसके उलट नकारात्मक आर्थिक झटके मानसिक बीमारी का कारण बनते हैं, और कैश ट्रांसफर जैसे एंटी-पावर्टी प्रोग्राम मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करते हैं। गरीबी, स्वास्थ्य और प्रसन्नता के मध्य इन पक्के रिश्तों की समझ प्रभावी नीतियों को विकसित और क्रियान्वित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

एक अन्य उदाहरण देखें तो आर्थिक रूप से वंचित लोग कोविड-19 के कारण मृत्यु की आशंका में सर्वाधिक फंसते हुये पाये गये हैं। यह जोखिम गरीबी के कारण तनाव, कोमोर्बिडिटी, और स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच की कमी के कारण बढ़ता है। इस महामारी ने समाज में आर्थिक विषमताओं को उजागर तो किया ही है, इस विषमता को बढ़ाया भी है। यहाँ बेहतर स्वास्थ्य के लिये गरीबी दूर करने की आवश्यकता तो सिद्ध ही होती है। साथ ही, समाज में आर्थिक रूप से सर्वाधिक वंचित लोगों की कमजोरियों को दूर करने के लिये सामाजिक कल्याण में सुधार के लिये दीर्घकालिक कार्यक्रम क्रियान्वयन की अनिवार्यता भी सिद्ध होती है।

आने वाले दशकों में मानसिक बीमारी का बोझ बढ़ने की आशंका है। गरीबी और मानसिक-शारीरिक स्वास्थ्य के संबंधों की इस भयावहता को देखते हुये ही आयुर्वेद धन कमाने और गरीबी दूर करने की सलाह देता है। इसीलिये आयुर्वेद में सुखायु और हितायु की ऐतिहासिक अवधारणा सर्वकालिक रूप से उपयोगी है।

अब यह स्पष्ट रूप से ज्ञात है कि आय कम होने से मानसिक बीमारी बढ़ती है। फसलों के खराब होने से आमदनी के नकारात्मक झटके, कल-कारखाने बंद होने के कारण नौकरी का छूटना या आमदनी में गिरावट आदि मानसिक स्वास्थ्य को खराब करते हैं। इसके विपरीत अर्थशास्त्रीय क्लिनिकल ट्रायल्स में पाया गया है कि कैश ट्रांसफर और गरीबी हटाने के व्यापक प्रयास अवसाद और चिंता को कम करते हैं। जैसा कि स्वाभाविक है कि आमदनी और खर्च की अनिश्चितताओं से गरीबी का बडा रिश्ता है। अतः चिंता और अनिश्चितता मानसिक स्वास्थ्य को बिगाड़ देती हैं। इसके विपरीत स्वास्थ्य, रोजगार, बीमा और आमदनी की कमी के झटकों से उबरने के अन्य साधन प्रदान करने से अवसाद और चिंता कम हो जाती और मानसिक स्वास्थ्य ठीक रहता है। इसके अलावा गरीबी के कारण आवास की अपर्याप्त उपलब्धता, गरीबी वाले क्षेत्रों में प्रदूषण के कारण पर्यावरणीय तनाव, अपर्याप्त नींद आदि भी मानसिक बीमारी को बढ़ा देते हैं। बचपन में गरीबी की स्थिति, या यहाँ तक कि माता के गर्भाशय में अनुभव की जाने वाली गरीबी अंततः कुपोषण और अन्य तनावों की आशंका को बढ़ाती है। इन सबके कारण संज्ञानात्मक या बौद्धिक विकास गड़बड़ाने से वयस्क होते होते मानसिक बीमारी घेर लेती है। स्वाभाविक है कि गर्भवती महिलाओं और छोटे बच्चों की देखभाल करने वाले सरकारी तंत्र को वित्तीय सहायता प्रदान करने हेतु तत्पर रहना आवश्यक है। एक बात यहाँ यह भी समझना चाहिये कि गरीबी बदतर शारीरिक स्वास्थ्य से भी जुड़ी है। गरीबी के कारण आघात, हिंसा और अपराध में लिप्त हो जाने का भारी जोखिम रहता है। गरीबी निम्न सामाजिक स्थिति के लिये भी उत्तरदायी है जिसके कारण शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दुष्प्रभावित होता है।

असल में गरीबी के कारण उत्पन्न मानसिक बीमारियाँ भविष्य में आर्थिक उन्नयन के लिये किये जाने वाले प्रयत्नों के परिणामों को भी दुष्प्रभावित करती हैं। अवसाद और चिंता लोगों के सोचने-समझने के तरीके को प्रभावित करते हैं। परेशानी में ध्यान लगे रहने के कारण स्मृति में विकृति आती है। इस तरह के प्रभावों से आर्थिक प्राथमिकतायें किनारे हो जाती हैं। और इस प्रकार परेशानी में फंसे लोगों द्वारा लिये जाने वाले महत्वपूर्ण आर्थिक निर्णय गलत होने लगते हैं। गरीबी के कारण एकाग्रता की कमी और अधिक काम की थकान उत्पादकता को गिरा देती है। गरीबी-जन्य मानसिक बीमारी एक ऐसे सामाजिक कलंक को लगा देती है जिसके कारण आगे व्यक्ति को श्रम-बाजार में तवज्जो नहीं मिलती। मानसिक बीमारी के साथ अगर अन्य गैर-संचारी रोगों जैसे मधुमेह और दिल की बीमारी आदि की को-मोर्बिडिटी भी है तो उस व्यक्ति के जीवन में भयावह स्वास्थ्य व्यय की आशंका को बढ़ जाती है। मानसिक बीमारी युवाओं में शिक्षा और कौशल प्राप्त करने की दिशा में भारी बाधा उत्पन्न कर सकती है। महिलाओं में मानसिक बीमारियों का असमान रूप से अधिक प्रसार लैंगिक असमानताओं को बढ़ा देता है। माता-पिता की मानसिक बीमारी बच्चों के संज्ञानात्मक विकास और शैक्षिक गतिविधि को प्रभावित करती है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी मानसिक बीमारी और गरीबी के भंवर में फंसा सकती है। उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट हो जाता है कि क्यों आयुर्वेद वैध तरीकों से धन कमाने की सलाह देता है।

आने वाले दशकों में मानसिक बीमारी का बोझ बढ़ने की आशंका है। हालांकि अमीर व्यक्तियों के मानसिक रूप से बीमार होने की संभावना कम होती है, लेकिन अमीर देशों में मानसिक बीमारी की दर कम नहीं हो रही है। कारण अनेक हैं। जलवायु परिवर्तन से मानसिक स्वास्थ्य खराब होने की आशंका, उच्च तापमान के दुष्प्रभाव से कृषि पैदावार में कमी या सूखा के कारण बारिश और पानी की आपूर्ति में परिवर्तन, मौसमी आपदाओं और हिंसक संघर्ष की आशंका बढ़ जाती है। गरीबी और मानसिक-शारीरिक स्वास्थ्य के संबंधों की इस भयावहता को देखते हुये ही आयुर्वेद धन कमाने और गरीबी दूर करने की सलाह देता है। इसीलिये आयुर्वेद में सुखायु और हितायु की ऐतिहासिक अवधारणा सर्वकालिक रूप से उपयोगी है।

सुखमायुः हितमायुः दोनों रणनीतियों को एक साथ आजीवन क्रियान्वित करना ही स्वास्थ्य और प्रसन्नता देता है क्योंकि स्वयं के लिये सुखकारी और समाज के लिये हितकारी जीवन जीने की साझा युक्ति सर्वोपरि है। इसीलिये सुखी व दुःखी और हितकारी व अहितकारी जीवन के लक्षणों का वर्णन आयुर्वेद में एक साथ आता है (च.सू.30.24):

तत्र शारीरमानसाभ्यां रोगाभ्यामनभिद्रुतस्य विशेषेण यौवनवतः समर्थानुगतबलवीर्ययशः पौरुषपराक्रमस्य ज्ञानविज्ञानेन्द्रियेन्द्रियार्थबलसमुदये वर्तमानस्य

परमर्द्धिरुचिरविविधोपभोगस्य समृद्धसर्वारम्भस्य यथेष्टिवचारिणः सुखमायुरुच्यते; असुखमतो विपर्ययेण; हितैषिणः पुनर्भूतानां परस्वादुपरतस्य सत्यवादिनः शमपरस्य परीक्ष्यकारिणोऽप्रमत्तस्य त्रिवर्गं परस्परेणानुपहतमुपसेवमानस्य पूजार्हसम्पूजकस्य ज्ञानविज्ञानोपशमशीलस्य

वृद्धोपसेविनःसुनियतरागरोषेर्ष्यामदमानवेगस्य सततं विविधप्रदानपरस्य

तपोज्ञानप्रशमनित्यस्याध्यात्मविदस्तत्परस्य लोकमिमं चामुंचावेक्षमाणस्य स्मृतिमतिमतो हितमायुरुच्यते; अहितमतो विपर्ययेण॥

तात्पर्य यह कि यदि व्यक्ति (1) शारीरिक और मानसिक रोगों से मुक्त है, (2) विशेषकर युवावस्था में है, (3) सभी कार्य करने में समर्थ है, (4) बल, वीर्य, यश, पराक्रम, जानकारी और यथार्थ ज्ञान, कौशल युक्त हो, और पाँचों इंद्रियों और उनसे संबंधित विषयों के बल के समुच्चय से युक्त है, (5) उत्तम धन-सम्पदा वाला है और उपभोग हेतु सभी वस्तुओं से संपन्न है व इन सबके उपभोग में सक्षम है, (6) प्रारम्भ किये सभी कार्य पूर्ण हो रहे हों, (7) स्वयं की इच्छा अनुसार विचरण कर सकता हो या चल-फिर सकता हो, ऐसे व्यक्ति का जीवन सुखी जीवन होता है। और इस सबके उलट यदि इन सबका अभाव हो तो दुःखी जीवन होता है। इसी प्रकार जो व्यक्ति (1) सभी प्राणियों का हितचिंतक, (2) दूसरे का धन ना छीनने वाला, (3) सत्य बोलने वाला, (4) शांतिप्रिय, (5) कार्यों को सोच विचार कर क्रियान्वित करने वाला और सावधान, (6) अर्थ, धर्म, काम जैसे पुरुषार्थ का पालन करने वाला, (7) श्रेष्ठ व्यक्तियों का सम्मान करने वाला, (8) ज्ञानशील, विज्ञानशील, शांतिशील, (9) बड़े-बूढ़ों की सेवा करने वाला, (10) राग, क्रोध, ईर्ष्या, मद, मान के वेगों पर उच्चकोटि का नियंत्रण रखने वाला, (11) निरंतर दानशील, (12) सदैव आत्म-नियंत्रण, ज्ञान, शांति, विनम्रता वाला, (13) आध्यात्म की समझ और पालन करने वाला, (14) लोक-परलोक का विचार करने वाला, स्मरण-शक्ति और बुद्धि से युक्त हो, ऐसे व्यक्ति की आयु हितकारी कही जाती है। इसके उलट अहितकारी कही जाती है। इन सभी कारकों को ध्यान से वर्गीकृत करने पर में सुखमायुः में स्वयं की उन्नित और हितमायुः में औरों की उन्नति और परोपकार स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

इस विचार-विमर्श का मूल सन्देश क्या है? मूल सन्देश यह है कि आयुर्वेद की सलाह मानकर गरीबी दूर करने के सभी उचित प्रयत्न करना चाहिये। यही सुखकारी और हितकारी जीवन जीने का रास्ता है।

–अतिथि सम्पादक
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

अक्षरों की आवाज सुनानी होगी राजस्थान को

विश्व साक्षरता दिवस पर विशेष

राजेन्द्र जोशी

पाटी गई, कापी गई
गई पेंसिल अबकी बार
मिट गई आखर की धार
अब तो चेतो मेरी सरकार।

शिक्षा और साक्षरता उतनी ही जरूरी है जितना मनुष्य को जीने के लिए हवा और पानी की जरूरत होती है। देश भर में साक्षरता अभियानों का डंका बजने के बाद पिछले एक दशक से राजस्थान में अक्षर की धार मिटने लगी है। राजस्थान के पास साक्षरता संचालन के लिए लम्बा-चौड़ा लवाजमा मौजूद है। ब्लॉक से राज्य स्तर तक सैकड़ो अधिकारी-कर्मचारी कार्यरत है। स्थाई विभाग होने के बावजूद भी 2001 के बाद अक्षर की आवाज सुनाई नहीं दे रही। भारत सरकार की कार्य योजना के भरोसे हाथ पैर हाथ धरे बैठा राजस्थान पिछले एक दशक से निरक्षरता उन्मूलन के लिए खुद के बूते कोई बड़ी योजना नहीं बना सका। प्रदेश अपनी 36 प्रतिशत असाक्षर जनता को कब साक्षर करेगा।

राजस्थान में साक्षरता के क्षेत्र में उल्लेखनीय काम किया था। लगभग 50 प्रतिशत महिला और 21 प्रतिशत पुरुष आज भी अक्षरों के आलोक से दूर हैं। शिक्षा और साक्षरता उतनी ही जरूरी है जितना मनुष्य को जीने के लिए हवा और पानी की जरूरत होती है। देश भर में साक्षरता अभियानों का डंका बजने के बाद पिछले एक दशक से राजस्थान में अक्षर की धार मिटने लगी है। राजस्थान के पास साक्षरता संचालन के लिए लम्बा-चौड़ा लवाजमा मौजूद है। ब्लॉक से राज्य स्तर तक सैकड़ो अधिकारी-कर्मचारी कार्यरत है। स्थाई विभाग होने के बावजूद भी 2001 के बाद अक्षर की आवाज सुनाई नहीं दे रही। भारत सरकार की कार्य योजना के भरोसे हाथ पैर हाथ धरे बैठा राजस्थान पिछले एक दशक से निरक्षरता उन्मूलन के लिए खुद के बूते कोई बड़ी योजना नहीं बना सका। प्रदेश अपनी 36 प्रतिशत असाक्षर जनता को कब साक्षर करेगा। राजस्थान में साक्षरता के क्षेत्र में उल्लेखनीय काम किया था। लगभग 50 प्रतिशत महिला और 21 प्रतिशत पुरुष आज भी अक्षरों के आलोक से दूर हैं। वर्तमान में संचालित नवभारत साक्षरता कार्यक्रम पूरी तरह डिजिटल कार्यक्रम है विचारणीय सवाल तो यह है कि असाक्षर को साक्षर बनाने के लिए स्लेट-पेंसिल और कॉपी की आवश्यकता होती है। जब तक असाक्षर ग्रुप के हाथ में यह सब नहीं हो तो ऐसे लोगों को साक्षर बनाने का डिजिटल तरीका समझ से परे है। और वह भी उन लोगों के भरोसे जो खुद अभी डिजिटल तकनीक से परिचित भी नहीं है।

साक्षरता अभियानों के संचालन में स्थानीय स्तर पर परिस्थितियों के अनुरूप कार्य योजना बनाई जानी चाहिए। यह कार्य संपूर्ण साक्षरता अभियान के दौरान किया गया जब प्रत्येक जिले की अपनी कार्य योजना थी, ऐसी कार्य योजनाओं के कारण ही साक्षरता प्रतिशत बढा था। साक्षरता अभियानों की सफलता कार्यक्रम पर नहीं है, सरकारी दफ्तरों से ही संभव नहीं है बल्कि सघन वातावरण निर्माण से संभव होती है। 2047 में हमारे प्रधानमंत्री भारत को आत्मनिर्भर बनाने की बात कर रहे है। आत्मनिर्भरता संपूर्ण साक्षरता से ही संभव है। आत्मनिर्भर बनाने के लिए जिला कार्य योजनाओं का निर्माण राजस्थान को करना चाहिए। भारतवर्ष में राजस्थान अकेला ऐसा प्रदेश है जिसके पास नियमित साक्षरता निदेशालय स्थापित है। शेष प्रदेशों में ऐसी गुणवत्ता नहीं होने के बावजूद वह हमसे अधिक साक्षरता दर में वृद्धि कर रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर राजस्थान को संपूर्ण साक्षर बनाने का संकल्प एक बार फिर से दोहराना होगा।

–राजेन्द्र जोशी,
शिक्षाविद-साहित्यकार

जोधपुर एयरफोर्स स्टेशन पर चल रहे "तरंग-शक्ति" में ओपन-डे शो हुआ

आसमान में भारतीय लड़ाकू विमान सुखोई-30, तेजस और हेलिकॉप्टर ने करतब दिखाए

जोधपुर, (कासं)। भारतीय वायु सेना का सबसे बड़ा अभ्यास तरंग-शक्ति (फेज-2) जोधपुर एयरफोर्स स्टेशन पर चल रहा है। शनिवार को ओपन-डे शो हुआ। आसमान में भारतीय लड़ाकू विमान सुखोई-30, तेजस और हेलिकॉप्टर ने प्रचंड ने करतब दिखाए। सूर्यकिरण के 9 हॉक्स विमान ने आसमान में तिरंगा बनाया और दर्शकों को रोमांचित किया।

- **सूर्यकिरण के 9 हॉक्स विमान ने आसमान में तिरंगा बनाया और दर्शकों को रोमांचित किया**
- **एयरफोर्स स्टेशन पर भारत सहित 24 देशों के 400 जवानों ने सामूहिक योग किया**

जोधपुर एयरफोर्स स्टेशन पर भारतीय वायु सेना के सबसे बड़े अभ्यास तरंग-शक्ति (फेज-2) में आसमान में भारतीय लड़ाकू विमानों ने विभिन्न प्रकार के करतब दिखाये।

इससे पहले शनिवार सुबह छह बजे एयरफोर्स स्टेशन पर भारत सहित 24 देशों के 400 जवानों ने सामूहिक योग किया। एयरफोर्स स्टेशन पर हरक्यूलिस सी-130 विमान के सामने यूएई, सिंगापुर, ग्रीस, ऑस्ट्रेलिया, जापान, अमेरिका और श्रीलंका के जवानों ने प्राणायाम व आसन किए। वहीं सूर्यकिरण के 9 हॉक्स विमान ने यूथ को डेडिकेट करते हुए फॉर्मेशन बनाई। हेलिकॉप्टर प्रचंड ने जब आसमान में करतब दिखाए तो दर्शक रोमांचित हो उठे। सुबह 11 बजे ओपन-डे शो की शुरुआत में अग्निवीर वायु की महिला जवानों ने प्रस्तुति दी। इसके बाद फाइटर जेट ने करतब दिखाना शुरू किया। सबसे पहले स्वदेशी लड़ाकू विमान तेजस आसमान में उड़ा। तेजस ने करीब 10 मिनट तक आसमान में करतब दिखाए। तेजस के बाद सूर्यकिरण के हॉक्स विमान उड़े। ये दर्शकों के एकदम ऊपर से निकले तो सभी रोमांचित हो गए। सूर्यकिरण के 9 हॉक्स विमान ने लो लेवल फ्लाइंग की। धुएं से तिरंगा बनाया। इन विमान में बैठे विंग कमांडर हवा में एक-दूसरे को क्रॉस करते हुए अपने-अपने विमान को लेकर गए। हॉक्स विमान 360 डिग्री राउंड लेते हुए हवा में उड़े। सूर्यकिरण के 9 हॉक्स विमान ने यूथ को डेडिकेट करते हुए फॉर्मेशन बनाई। डीएनए और राइट एंड लेफ्ट फॉर्मेशन भी बनाई। इसके बाद सुखोई-30 एमकेआई ने उड़ान भरी। सुखोई-30 ने करीब 150 मीटर की ऊंचाई पर लूप और 180 डिग्री में उड़ते हुए वर्टिकल चार्ली फॉर्मेशन बनाया। हेलिकॉप्टर प्रचंड ने भी आकाश में कलाबाजियां दिखाईं। इंडियन एयरफोर्स की एयर वॉरियर ड्रिल टीम के 28 मेंबर ने हाथ में राइफल लेकर म्यूजिक पर परफॉर्मेंस दी।

आरपीएससी ने जालसाजी पर लगाम के लिए वन टाइम रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया में बदलाव किया

अब वन टाइम रजिस्ट्रेशन के दौरान अभ्यर्थी को वेब केम के माध्यम से लाइव फोटो भी कैप्चर करनी होगी

अजमेर, (कासं)। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा परीक्षाओं में जालसाजी व फोटों टेंपरिंग कर आवेदन करने वाले व्यक्तियों पर लगाम के लिए वन टाइम रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया में बड़ा बदलाव किया गया है। अब वन टाइम रजिस्ट्रेशन के दौरान अभ्यर्थी को वेब केम के माध्यम से लाइव फोटो भी कैप्चर करनी होगी, जिन अभ्यर्थियों द्वारा पूर्व में वन टाइम रजिस्ट्रेशन में लाइव फोटो कैप्चर करवा रखी है, वे अभ्यर्थी भी पूर्व की फोटो अस्पष्ट होने की स्थिति में ओटीआर में लाइव फोटो कैप्चर करवा सकते हैं। उनके लिए ये अवसर एक बार ही उपलब्ध होगा। आयोग की इस कार्यवाही से डमी अभ्यर्थियों पर लगाम के साथ ही आवेदन के दौरान गलत फोटों अपलोड होने का बहाना देने वाले अभ्यर्थियों की भी प्रभावी रोकथाम सुनिश्चित हो सकेगी। संशय की स्थिति में आयोग द्वारा परीक्षा दौरान की गई वीडियोग्राफी में उपस्थित अभ्यर्थी का मिलान ओटीआर में कैप्चर की गई फोटो से किया जा सकेगा। आयोग इस हेतु आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का भी इस्तेमाल करेगा।

- **जिन अभ्यर्थियों द्वारा पूर्व में वन टाइम रजिस्ट्रेशन में लाइव फोटो कैप्चर करवा रखी है, वे अभ्यर्थी भी पूर्व की फोटो अस्पष्ट होने की स्थिति में ओटीआर में लाइव फोटो कैप्चर करवा सकेंगे**

लाइव फोटो कैप्चर की प्रक्रिया :-अभ्यर्थी को अपने ओटीआर में ओटीआर ईकेवाईसी सेक्शन में जाकर लाइव फोटो कैप्चर लिंक पर क्लिक कर 5 सेकंड के टाइमर के बाद अपनी पलक दो-तीन बार झपकानी होगी। यदि फोटो बंद आंखों के साथ कैप्चर हो तो फोटो पुनः कैप्चर करनी होगी। फोटो कैप्चर करते समय अभ्यर्थी को सीधा कैमरे की तरफ देखना होगा। यदि अभ्यर्थी चश्में का इस्तेमाल करता है तो फोटो चश्में के साथ ही कैप्चर करानी होगी। इसमें यह विशेष ध्यान रखा जाना होगा कि चश्में के ग्लास पर रोशनी के प्रतिबिंब के कारण फोटो अस्पष्ट अथवा चमक के साथ कैप्चर न हो। फोटो कैप्चर के दौरान अभ्यर्थी को यह सुनिश्चित करना होगा कि फोटो साफ तथा सुस्पष्ट बैकग्राउंड के साथ हो। धुंधली अथवा अंधकारमय फोटो मान्य नहीं होगी। स्पष्ट फोटो कैप्चर होने तक अभ्यर्थी बार-बार सुस्पष्ट फोटो कैप्चर का प्रयास कर सकते हैं, किंतु एक बार ओटीपी के माध्यम से वेरिफिकेशन पश्चात फाइनल सब्मिट किये जाने के उपरांत इस सबंध में अवसर देय नहीं होगा। इसके बाद अभ्यर्थी द्वारा संबंधित चैक बाक्स में सही का निशान दर्ज कर यह प्रमाणित किया जाएगा कि "मैने उपरोक्त सारे दिशा-निर्देश पढ़ लिए हैं एवं मुझे ज्ञात है कि आवेदन-पत्र एवं प्रवेश-पत्र पर इसी फोटो का प्रयोग किया जाएगा। फोटो के साफ एवं स्पष्ट न होने के कारण यदि मेरी पहचान सुनिश्चित नहीं हो पाती है तो मुझे परीक्षा से वंचित किया जा सकता है। बिना पर्याप्त रोशनी, अस्पष्ट, धुंधली, बंद आंख अथवा आड़ी-तिरछी फोटो होने पर मेरा आवेदन निरस्त किया जा सकता है, जिसकी समस्त जिम्मेदारी मेरी स्वयं की होगी।"

यह उल्लेखनीय है कि ऑनलाइन आवेदन करने वाले अभ्यर्थी के मोबाइल नंबर पर प्राप्त ओटीपी को दर्ज करने पर ही ऑनलाइन आवेदन फाइनल सब्मिट होता है।

राशिफल रविवार 8 सितम्बर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

मार्गशीर्ष मास, शुक्ल पक्ष, पंचमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, स्वाती नक्षत्र दिन 3:31 तक, ऐन्द्रयन योग रात्रि 12:05 तक, बव करण प्रातः 6:48 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-तुला, मंगल-मिथुन, बुध-सिंह, गुरू-वृष, शुक्र-कन्या, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रवियोग दिन 3:31 से आरम्भ होगा। आज ऋषि पंचमी, भाई पांच, जैन संवत्सरी (पंचमी व्रत), रक्षा पंचमी, गुरू पंचमी है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 7:46 से 9:19 तक, लाभ-अमृत 9:19 से 12:25 तक, शुभ 1:57 से 3:30 तक।

राहूकालः 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:13, सूर्यास्त 6:36

मेष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। स्वास्थ्य में सुधार होगा। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

मिथुन
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

कर्क
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। आवश्यक कार्यों के लिए जाना पड़ सकता है।

सिंह
आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

कन्या
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। आवश्यक कार्यों के लिए बाहर जा सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

तुला
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। मनोरंजन पर धन खर्च हो सकता है।

वृश्चिक
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात वर्तमान में चल रही परेशानियां दूर होने लगेगी।

धनु
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मकर
अपने आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

कुंभ
आज धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। शुभ-मांगलिक कार्य में भाग ले सकते हैं। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

घर-घर हुई गणपति की पूजा-अर्चना, 901 किलो के लड्डू का भोग लगाया

नोखा, (कासं)। गणेश मंदिर में आज गणेश जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया। मंदिर में सुबह से ही भक्तजनों की भीड़ लगी रही। दोपहर को गाजे बाजे के साथ जन्मोत्सव तथा आरती का पूजन पंडित अशोक महाराज के सानिध्य में किया गया। इस अवसर पर महाभोग 901 किलो के मोतीचूर के लड्डू और बादाम कतली का गजानंद भगवान को अर्पित किया गया।

गजानंद भगवान को मोदक लड्डुओं का भोग लगाया गया। इस शुभ अवसर पर भक्तों का ताता लगा हुआ रहा। इस पर्व पर श्री गणेश उत्सव समिति के सभी कार्यकर्ता सेवा में लगे रहे। नोखा के तिरूपति नगर में गणेश चतुर्थी पर गणेश जन्मोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर गणेश प्रतिमा की स्थापना की गया। मीनू शर्मा ने बताया कि इस अवसर पर भगवान गणेश की विशेष पूजा अर्चना की गई।

इस अवसर पर रमेश झंवर, ऋषि झंवर, महेंद्र जैन, मीनू झंवर, नमिता जैन, सोनम झंवर, ऊषा पेड़ीवाल, युवराज शर्मा, मनीष तापड़िया, जीतू तापड़िया आदि उपस्थित रहे। राजकीय प्राथमिक स्कूल उत्तरादी ढाणिया बिलनियासर के स्कूल प्रांगण में शनिवार को गणेश चतुर्थी का त्योहार उत्साह और उमंग के साथ मनाया गया। प्रधानाध्यापक रामकिशन गोदारा ने बताया कि भगवान गणेश की स्तुति और पूजा के बाद शुरूआत गणेश मंत्र से हुई। नन्हें मुन्ने कलाकारों ने ओ माय फ्रेंड गणेशा, तू रहना साथ हमेशा के गीत पर नृत्य प्रस्तुति देकर उपस्थित सभी का मन मोह लिया। बच्चों ने मुखोटे का प्रयोग करते हुए गणपति की आकृति बनाकर कलात्मक प्रतिभा का परिचय दिया। शिक्षिका सरोज बिश्नोई ने बोर्ड पर गणेशजी की सुंदर प्रतिमा बनाई। इस दौरान अध्यापिका किरण बाला, शिक्षक मुकेश चौधरी, कुक कम हेल्पर मुन्नी कंवर, रामेति सहित बड़ी संख्या में महिला अभिभावक उपस्थित रही।

नन्हें हाथों से बनाए मिट्टी के गणेश : करूणा क्लब बीकानेर इकाई के द्वारा आज नत्थूसर गेट स्थित नालन्दा पब्लिक सी. सै. स्कूल के सृजन सदन में 121 से अधिक बच्चों के द्वारा मिट्टी व गोबर से ईको फ्रेंडली भगवान गणेश की मूर्तियों का सृजन व श्रृंगार कर एक भव्य प्रतियोगिता का आयोजन किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार कमल रंगा ने बताया कि बच्चों के द्वारा इस प्रकार की कला का निर्माण आज के युग की महती आवश्यकता है। यह कार्यक्रम हमें आध्यात्मिकता के साथ-साथ प्रकृति के साथ भी जोडता है। आज हर बड़ा त्यौहार बड़ा खर्चीला बनता जा रहा है। बच्चों के इस प्रकार के कार्यक्रम से आज समाज को एक नई दिशा का बोध होगा। जिसमें समाज का अन्तिम पड़ाव का व्यक्ति भी हमारे तीज त्यौहार को मना सकता है और यह नालन्दा की परंपरा रही है कि वह बच्चों को शिक्षा के साथ-साथ सह शैक्षणिक गतिविधयों व रोजगारमुखी कार्यक्रमों से जोड़ता है।

भगवान गणेश बुद्धि के ज्ञाता के साथ-साथ पशु पक्षी व पर्यावरण प्रेमी भी थे। तभी तो उन्होंने अपने भारी भरकम शरीर के लिए अपनी सवारी मुशक (चूहा) को बनाकर यह सिद्ध किया कि आदमी हर आवश्यकता की पूर्ति छोटी-छोटी चीजों से भी कर सकता है। इसके लिए किसी भारी वाहन या ताकत की आवश्यकता नहीं होती। इस अवसर पर शाला प्राचार्य राजेश रंगा ने बताया कि आज का यह जो कार्यक्रम है वह हमें बडी सीख देता है। अब हमें गणेश विसर्जन के लिए तालाब या नदी की आवश्यकता नहीं हम अपने घरों के आस-पास के बाग-बगीचों या घर के गमलों में भी इन मूर्तियों का विसर्जन कर सकते हैं। और पर्यावरण को भी संतुलित रख सकते हैं।

बाजार में मिलने वाली केमिकल युक्त मूर्तियां जिनको बाद में हम तालाब आदि में विसर्जन करते है। उससे जल प्रदूषण का खतरा भी मंडराता रहता है। और ये मूर्तियां हमारे भावों को दर्शाती है और बाजार में मिलने वाली मूर्तियों से लाख गुणा ज्यादा अच्छी है। करूणा क्लब प्रभारी हरिनारायण आचार्य के इस अवसर पर प्रथम व द्वितीय तृतीय के साथ-साथ सभी प्रतिभागियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

गणेश महोत्सव पूजा के साथ शुरू : बीकानेर में जोशीवाडा के हनुमान मंदिर में आज से 90 वां गणेश महोत्सव का आरंभ दोपहर पूजन आरती के साथ शुरू हुआ। कार्यक्रम से जुड़े रामेश्वर जोशी एवं रमेश आचार्य ने बताया कि आज प्रथम दिन राजेन्द्र जोशी ने सपत्नीक पूजा करवाई। इस अवसर पर मोहल्ले के गणमान्य लोग एवं पूर्व पार्षद प्रेमरतन जोशी आदि मौजूद थे।

- धूमधाम ने मनाया भगवान गणेश का जन्मोत्सव
- गणेश मंदिरों में दिनभर रही श्रद्धालुओं की भीड़

बीकानेर में नत्थूसर गेट स्थित नालन्दा पब्लिक सी. सै. स्कूल के बच्चों ने अपने नन्हें हाथों से ईको फ्रेंडली मिट्टी की गणेश प्रतिमा बनाई।

भाजपा सदस्यता अभियान के प्रभारी नियुक्त

बीकानेर, (कासं)। भारतीय जनता पार्टी बीकानेर संभाग सदस्यता अभियान के प्रभारी दशरथ सिंह शेखावत के निर्देशानुसार भाजपा शहर जिलाध्यक्ष विजय आचार्य ने सदस्यता अभियान बीकानेर शहर के प्रभारी नियुक्त किए है।

जिसमें बीकानेर पूर्व विधानसभा सत्यप्रकाश आचार्य, पश्चिम विधानसभा गोपाल गहलोत, लालगढ़ मंडल नरेश नायक, जूनागढ़ मंडल जितेंद्र राजवी, शिवबाड़ी मंडल आनंद सिंह भाटी, रानी बाजार मंडल सुशीला कंवर राजपुरोहित, गंगाशहर मंडल भगवान सिंह मेड़तिया, मुक्ताप्रसाद मंडल नारायण चौपड़ा, जस्सूसर मंडल महावीर रांका, पुराना शहर मंडल शशिकांत शर्म, नयाशहर मंडल गोकुल जोशी, गोपेश्वर मंडल बनवारी शर्मा, संयुक्त मोर्चा प्रभारी मुमताज अली भाटी, सह प्रभारी सुरेंद्र सिंह शेखावत, महिला मोर्चा इंद्रा व्यास, युवा मोर्चा भूपेन्द्र शर्मा, ओबीसी मोर्चा महावीर चारण, किसान मोर्चा सांगीलाल गहलोत, एससी मोर्चा जगदीश सोलंकी, एसटी मोर्चा अशोक मीणा, अल्पसंख्यक मोर्चा सलीम जोईया, जनप्रतिनिधि संपर्क मोहन सुराणा, वरिष्ठ कार्यकर्ता संपर्क सूरज स्वामी, संयुक्त प्रकोष्ठ प्रभारी शिवकुमार रंगा, सैनिक प्रकोष्ठ श्याम सिंह हांडला, चिकित्सा प्रकोष्ठ बाबूलाल गहलोत, पंचायती राज प्रकोष्ठ हनुमान सिंह चावड़ा, व्यापार प्रकोष्ठ दीपक पारीक, विधि प्रकोष्ठ कौशल शर्मा, खेल प्रकोष्ठ मनीष सोनी, पशुपालक प्रकोष्ठ महेश व्यास, प्रवासी प्रकोष्ठ कुणाल कोचर, सहकारिता प्रकोष्ठ कैलाश बापेउ को प्रभारी नियुक्त किया गया है।

सार-समाचार

कलेक्टर डॉ. मंजू ने पदभार संभाला

डॉ. मंजू ने गंगानगर कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट का कार्यभार संभाला।

श्रीगंगानगर, (कासं)। भारतीय प्रशासनिक सेवा की अधिकारी डॉ. मंजू ने शनिवार को जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट श्रीगंगानगर पद का कार्यभार ग्रहण कर लिया है। शनिवार को कलक्ट्रेट पहुंचकर पदभार लेने के बाद उपस्थित अधिकारियों से जिले की कानून व्यवस्था व विकास योजनाओं और विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी ली। जिला कलेक्टर डॉ. मंजू ने जिले में चिकित्सा व्यवस्था, शिक्षा, सड़क विकास, पेयजल, कृषि, नगर परिषद, नगर विकास न्यास, पौधारोपण, पंचायती राज विभाग और मनरेगा से संबंधित कार्यों की विस्तृत जानकारी ली। उन्होंने क्षेत्र में नशे की बढती प्रवृत्ति और कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों पर चिकित्सा विभाग के अधिकारियों से चर्चा की। इस अवसर पर जिला परिषद के सीईओ मृदुल सिंह, नगर विकास न्यास सचिव कैलाशचंद्र शर्मा, प्रशिक्षु आईएएस रजत यादव, एसडीएम गंगानगर जीतू कुलहरी, एसडीएम पदमपुर संदीप काकड, सीएमएचओ डॉ. अजय सिंघला, पीएमओ डॉ. दीपक मांगा, जल संसाधन विभाग के एसई धीरज चावला, पीएचईडी एसई आशीष गुप्ता, पीडब्लयूडी के पदमप्रकाश कोठारी, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के सहायक निदेशक अनिल कुमार शाक्य, सहायक जनसम्पर्क अधिकारी रामकुमार राजपुरोहित, लेखाधिकारी गुरदीप चावला, निजी सहायक कृष्ण बलाना सहित अन्य मौजूद थे।

रात्रि चौपाल में सुनी समस्याएं

ग्राम पंचायत समंदसर में एडीएम प्रशासन डॉ. दुलीचंद मीणा ने रात्रि चौपाल में ग्रामीणों की समस्याएं सुनी।

बीकानेर, (कासं)। ग्राम पंचायत समन्दसर के अटल सेवा केन्द्र पर सरपंच धन्नी देवी की अध्यक्षता में अतिरिक्त जिला कलेक्टर (प्रशासन) डॉ दुलीचंद मीना ने शुक्रवार देर रात तक रात्रि चौपाल का आयोजन किया। इस दौरान अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डॉ. प्यारेलाल शिवरान मौजूद रहे। इस दौरान उन्होंने ग्रामीणों की विभिन्न समस्याएं सुनी और उनके समाधान के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए। ग्राम माणकरासर में दो ट्यूबवैल खराब होने की शिकायत पर उन्होंने जलदाय विभाग के सहायक अभियंता को शीघ्र खराब ट्यूबवैल सही करवाने और इसकी पालना रिपोर्ट भेजने के निर्देश दिए। माणकरासर एवं समन्दसर की विद्युत लाइन को ठीक करने के लिए जोधपुर डिस्कॉम के सहायक अभियंता ने 10 से 15 दिवस का समय मांगा। गांववासियों द्वारा स्कूल प्रधानाचार्य के व्यवहार एवं मिड-डे-मील की शिकायत की। समस्त मामले की जांच कर रिपोर्ट भेजने के लिए सीबीईओ को निर्देश दिए। एडीएम ने ग्रामीणों को प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना की जानकारी नहीं होने एवं संस्थागत प्रसव की कमी पर विभागीय अधिकारियों के प्रति नाराजगी प्रकट की। ई-मित्र एवं आधार पंजीयन, पशुपालन, कृषि विकास तथा केन्द्र एवं राज्य सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के बारे में आमजन को अवगत कराया। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार के निर्देश अनुसार अधिकारी ग्रामीणों के बीच जाएं और उनकी समस्या सुनें। प्रत्येक अधिकारी को आमजन के हित से जुड़े प्रत्येक कार्य समय पर करने होंगे। इसमें किसी प्रकार की ढिलाई बर्दाश्त नहीं की जायेगी। इस अवसर पर विभिन्न विभागों के अधिकारी, ग्राम पंचायत के प्रतिनिधि तथा बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद थे।

धूमधाम से मनाया गणेश जन्मोत्सव

हुनमानगढ़, (कासं)। जंक्शन स्थित रिद्धि-सिद्धि विनायक मंदिर में शनिवार को गणेश जन्मोत्सव के उपलक्ष में 11 दिवसीय गणेश महोत्सव की शुरूआत हुई। गणेश मंदिर के मुख्य पुजारी पंडित चंदूराम शर्मा ने बताया कि अखंड रामचरित्र मानस व भजन संध्या का आयोजन किया गया। रामचरित मानस पाठ का भोग शनिवार को सुबह 10.15 बजे डाला गया। दोपहर 12 बजे सर्वप्रथम गणेश पूजन, 151 दीपकों से महाआरती एवं सवामणि के महाप्रसाद का भोग लगाया गया। एक बजे भगवान गणेश की मूर्ति स्थापना की गई। उन्होंने बताया कि 17 सितम्बर तक प्रतिदिन प्रात: गणेश पूजन व शाम को 5 से 7 बजे तक महिला मंडली की ओर से बाबा का गुणगान किया जायेगा। प्रतिदिन शाम 7 बजे महाआरती भी होगी। भगवान गणेश महोत्सव के सफल आयोजन में आमजन व श्रद्धालु सहयोग कर रहे हैं। हनुमानगढ़ में श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय में गणेश चतुर्थी के मौके पर शनिवार को भगवान गणपति की मूर्ति स्थापना की गई। सुबह 11.15 बजे पंडित रतनलाल शास्त्री की ओर से विधिवत पूजा-अर्चना करवाकर मूर्ति स्थापित करवाई गई। इस मौके पर मुख्य यजमान गुरू गोबिंद सिंह चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष बाबूलाल जुनेजा व एसकेडी के मैनेजिंग डायरेक्टर दिनेश जुनेजा सपत्नीक मौजूद थे। अध्यक्ष बाबूलाल जुनेजा ने बताया कि गणेश महोत्सव की शुरूआत आजादी आंदोलन के समय लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की ओर से प्रथम बार की गई थी। उसके बाद से ही महाराष्ट्र सहित पूरे देश भर में भगवान गणेश के प्रति आस्था व उत्साह बढ़ता गया। जंक्शन के वार्ड 12, भट्टा कॉलोनी स्थित सिंदूरी बालाजी मंदिर में गणेश चतुर्थी के मौके पर शनिवार को आठवें गणेश महोत्सव का आगाज हुआ। मोहल्ले की सुख-शांति व समृद्धि के लिए मनाए जा रहे गणेश महोत्सव के तहत मिट्टी की गणेश मूर्ति स्थापित कर मंदिर पुजारी बलवंत शर्मा की ओर से विधि-विधान से पूजा-अर्चना करवाई गई। गणपति का पूजन बच्चों व महिलाओं से करवाया गया।

नगर निगम, परिषद व पालिकाओं के चुनावों पर संशय!

बीकानेर, (कासं)। साल 2019 से 2021 तक नगर निगम और निकायों के चुनाव हुए थे। इस साल चरणबद्ध कार्यकाल खत्म होने का समय आ गया। नवम्बर में बीकानेर, नगर निगम समेत 46 नगर परिषदों और नगर पालिकाओं का कार्यकाल खत्म होने वाला है। सरकार चुनाव के मूड में नहीं लग रही। इसलिए बीकानेर नगर निगम में लगाये गए आईएएस से कयास लगाए जा रहे कि सरकार यहां प्रशासक लगायेगी।

दरअसल 2019 से 2021 तक लगातार निकायों के चुनाव चलते रहे। नवम्बर 2019 में बीकानेर, भरतपुर और उदयपुर नगर निगमों के साथ करीब 46 और नगर परिषद, नगर पालिकाओं के चुनाव हुए थे। इसलिए नवम्बर 2019 में जिन निकायों के चुनाव हुए उनका कार्यकाल अब सिर्फ ढाई महीना बचा है। हालांकि निकायों की आचार संहिता एक महीने पहले लागू कर चुनाव होते रहे हैं। इसलिए सरकार अभी भी यहां चुनाव करवा सकती है।

वन-स्टेट-वन इलेक्शन के कांसेप्ट से प्रदेश के लोग हैरान हैं। इधर सरकार कोई रूख स्पष्ट कर नहीं रही। न तो ये निर्णय हो सका कि पंचायत और समस्त निकायों के चुनाव एक साथ होंगे और न ही जिन निकायों का कार्यकाल खत्म हो रहा वहां चुनाव की तैयारी है। पंचायत और निकायों के एक साथ चुनाव में सबसे बड़ी बाधा ईवीएम की है।

सूत्र बताते हैं कि सरकार भले खत्म होने वाले कार्यकाल से पहले चुनाव कराए पर जहां कार्यकाल खत्म हो रहा वहां प्रशासक लगाने की तैयारी जरूर है। बीकानेर नगर निगम में कार्यकाल समाप्त होने से ठीक पहले आईएएस मयंक मनीष को आयुक्त लगाना इसी बात का संकेत है।

नगर निगम समेत करीब 90 नगर परिषद और नगर पालिकाओं के चुनाव हुए थे। इसी सूची में बीकानेर की श्रीडूंगरगढ़, नोखा, देशनोक नगर पालिका का चुनाव हुआ था। इस साल इन तीनों के साथ खाजूवाला नगर पालिका का भी चुनाव होगा। अगर समय पर लूणकरनसर और नापासर नगर पालिका के गठन की प्रक्रिया हो गई तो यहां भी चुनाव संभव हैं।

- नवम्बर में खत्म हो रहा है बीकानेर समेत 3 नगर निगमों समेत 46 नगर परिषद व पालिकाओं का कार्यकाल

नई पेंशन स्कीम यू.पी.एस. का विरोध

नोखा, (कासं)। केन्द्र सरकार द्वारा प्रस्तावित यूनिफाइड पेंशन स्कीम यूपीएस का विरोध करते हुए चरकड़ा, माडिया, जैसलसर आदि गांवों की विभिन्न स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों ने काली पट्टी बांध कर काम किया।

एनएमओपीएस के नोखा ब्लॉक संयोजक मोहम्मद हारून कुरैशी ने बताया कि गत दिनों केंद्रीय केबिनेट की ओर से यूपीएस के अप्रूवल के बाद राजस्थान का कर्मचारी वर्ग भी आशंकित हो गया है और राज्य सरकार से पुरानी पेंशन योजना में किसी तरह की छेड़छाड़ ना करने का भरोसा चाहता है। पांचू ब्लॉक संयोजक कानाराम मांझू ने बताया कि आंदोलन की अगली कड़ी के रूप में कर्मचारी अपने कार्यकाल में 9 सितम्बर को यूपीएस नोट की प्रतियां जलाकर विरोध करेंगे। 11 सितम्बर को पेंशन स्वाभिमान मार्च निकाल कर प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपेगे।

चोरी के मामले में दूसरा आरोपी भी गिरफ्तार

हनुमानगढ़,(कासं)। रावतसर थाना पुलिस ने दिनदहाड़े घर में घुसकर चोरी करने की वारदात को अंजाम देने के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। इस प्रकरण में यह दूसरी गिरफ्तारी है। इससे पहले पुलिस एक आरोपी को पूर्व में गिरफ्तार कर न्यायिक अभिरक्षा में जेल भिजवा चुकी है।

रावतसर पुलिस थाना प्रभारी वेदपाल शिवराण ने बताया कि रमेश कुमार पुत्र रामकुमार कड़वासरा निवासी वार्ड 33, बिश्नोई बास, रावतसर ने मामला दर्ज कराया। रिपोर्ट में बताया कि 21 अप्रैल को दिन के समय अज्ञात व्यक्तियों ने उसके घर में घुस कर ताला तोड़ कर सोने के जेवरात व नकदी चोरी कर ली।

रिपोर्ट पर मुकदमा दर्ज कर अनुसंधान शुरू किया। इस घटनाक्रम के संबंध, थाना क्षेत्र में चोरी की वारदातों पर अंकुश लगाने और चोरी करने वाली गैंग की धरपकड़ के लिए एसपी विकास सांगवान के निर्देशन में थाना स्तर पर टीम का गठन किया गया। टीम ने तकनीकी व मानवीय साक्ष्य संकलन कर पूर्व में एक आरोपी गोविन्दराम पुत्र सेठीराम ओड निवासी वार्ड 10, मौलबीबास डबलीराठान पीएस सदर हनुमानगढ़ को डिटेन कर अनुसंधान के बाद गिरफ्तार किया। घटना में शामिल दूसरे आरोपी शिशपाल पुत्र भंवरलाल बावरी निवासी चक 11 एसटीजी, डबलीबास कुतुब, पीएस सदर हनुमानगढ़ को डिटेन कर अनुसंधान के बाद गिरफ्तार किया।

- एक को पहले ही जेल भेज चुकी पुलिस
- घर से सोने-चांदी के जेवर और नकदी की थी चोरी

जयंती पर प्रो. केदार को याद किया

श्रीगंगानगर, (कासं)। प्रदेश के पूर्व गृहमंत्री प्रोफेसर केदारनाथ शर्मा की जयंती पर उन्हें याद किया गया। रेलवे स्टेशन के पास स्थित केदार चौक पर सुबह शहर के लोगों ने उनकी प्रतिमा पर पुष्प अर्पित किए।

प्रो. केदार के कार्यकाल में शहर में हुए विकास कार्यों को याद करते हुए वक्ताओं ने कहा कि प्रो. केदार को हमेशा श्रीगंगानगर और यहां के लोगों की चिंता रहती थी। प्रो. केदार हमेशा शहर हित की सोच रखते थे। शहर के आम आदमी की पीड़ा वे समझते थे। प्रो. केदार की जानकारी में आते ही वे आमजन की पीड़ा का समाधान करने के लिए खुद निकल पड़ते थे।

इस मौके पर हुए कार्यक्रम में शहर के लोगों ने केदार चौक पर पुष्पांजलि अर्पित की। रिटायर्ड प्रिंसिपल मनीराम सेतिया ने कहा कि प्रो. केदार के मन में हमेशा श्रीगंगानगर का विचार रहता था। वे हमेशा यही सोचते थे कि श्रीगंगानगर के लोगों का ज्यादा से ज्यादा भला कैसे हो। आयोजन में प्रो. केदार के पौत्र नीरज शर्मा, विप्र फाउंडेशन के जिलाध्यक्ष मदन जोशी, व्यापार मंडल के नरेश सेतिया, नरेश कपूरिया, विकास शाही शामिल थे।

- केदार चौक पर सुबह शहर के लोगों ने उनकी प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी

ई.सी.बी. के प्राचार्य डॉ. जाखड़ सम्मानित

बीकानेर, (कासं)। ईसीबी कॉलेज बीकानेर के प्राचार्य डॉ ओमप्रकाश जाखड़ को लायंस क्लब ने उनके अभूतपूर्व शैक्षणिक योगदान व सृजनात्मक प्रशासनिक व अकादमिक श्रेष्ठता हेतु शॉल पहनाकर व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

25 वर्षों से अधिक का रिसर्च व शैक्षनिक अनुभव प्राप्त डॉ. जाखड़ के कई शोध पत्र अंतर्राष्ट्रीय जर्नल्स में प्रकाशित हो चुके हैं। पूर्व में डॉ. जाखड़ बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय बीकानेर के डीन रिसर्च, मैकेनिकल विभाग के विभागाध्यक्ष, भरतपुर इंजीनियरिंग कॉलेज के उप प्राचार्य, राज्य स्तरीय कई समितियों के संयोजक व समन्वयक जैसे दायित्वों का कार्यभार भी संभाल चुके हैं।

पंजाब के बाइक चोर गिरफ्तार, गंगानगर से पांच बाइक चुराई

श्रीगंगानगर, (कासं)। शहर की कोतवाली थाना पुलिस ने मोटरसाइकिल चोरी के दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। दोनों आरोपी पंजाब के रहने वाले हैं। पुलिस रिमांड अवधि में इन लोगों ने श्रीगंगानगर शहर में पांच मोटरसाइकिल चुराने की बात कबूली है।

पुलिस इनसे चोरी की और वारदातों का भी पता लगा रही है। मामले की जांच बस अड्डा चौकी इंचार्ज स्वर्ण सिंह कर रहे हैं। श्रीबिजयनगर की राजीव कॉलोनी के रहने वाले प्रकाश शर्मा पुत्र बद्रीराम शर्मा ने इस संबंध में मामला दर्ज करवाया था। इसमें कहा गया था कि वह शहर में नेहरू पार्क के पास स्थित जेबी क्लासेज में पढ़ाता है। उसने अपना मोटरसाइकिल कोचिंग इंस्टीट्यूट के सामने रखा था। करीब दो घंटे बाद देखा तो मोटरसाइकिल गायब मिला। मामले की जांच के लिए बस स्टैंड चौकी इंचार्ज स्वर्ण सिंह की देखरेख में टीम गठित की गई।

टीम ने मोटरसाइकिल चोरी के मामलों में लिप्त रहे चोरों पर नजर रखी। वारदात में पंजाब के युवकों के शामिल होने की आशंका पर पंजाब के फाजिल्का जिले के सदर थाना क्षेत्र गांव लखों के उताड़ के रहने वाले गगनदीप सिंह पुत्र मुख्त्यार सिंह और कुलविंद्र सिंह पुत्र सुरजीत सिंह की एक्टिविटी पर नजर रखी गई। इनकी मोबाइल लॉकेशन ट्रेस की तो आरोपी के वारदात में शामिल होने का शक पुख्ता हुआ। इस पर दोनों आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। जांच अधिकारी बस स्टैंड चौकी इंचार्ज स्वर्ण सिंह ने बताया कि आरोपियों ने अब तक श्रीगंगानगर में पांच मोटरसाइकिल चुराने की बात स्वीकार की है। ये बाइक उन्होंने शहर के अलग-अलग हिस्सों से चुराई। आरोपियों से चोरी की कुछ और वारदातों के खुलने की संभावना है।

- रिमांड अवधि में चोरों ने श्रीगंगानगर से पांच बाइक चुराने की बात कबूली

सचिन पायलट के जन्मदिन पर गौशाला में गायों को हरा चारा, गुड़, लापसी खिलाई

बीकानेर, (कासं)। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के राष्ट्रीय महासचिव एवं राजस्थान के पूर्व उप-मुख्यमंत्री सचिन पायलट के 47 वें जन्मदिवस पर शनिवार को प्रात: 8:15 बजे से गंगा गोल्डन जुबली गौशाला डूडी पेट्रोल पम्प के पास, गजनेर रोड बीकानेर में देहात कांग्रेसजनों ने 60 क्विंटल हरा चारा, 121 किलो गुड़, लापसी आदि गौवंश की सेवा में अर्पित कर मनाया।

कार्यक्रम संयोजक मार्शल प्रहलाद सिंह ने बताया कि सामग्री व चारा खिलाने से पहले सत्संग व भजन का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें सचिन पायलट के दीर्घायु होने व स्वस्थ जीवन की प्रार्थना की गई। कार्यक्रम समापन पर लड्डू का प्रसाद वितरण किया गया। जिले की सभी विधानसभा क्षेत्रों में भी गौशालाओं में गौमाता को हरा चारा व गुड़ खिलाकर पायलट का जन्मदिन मनाया। मार्शल ने बताया कि इस अवसर पर पूर्व सांसद प्रत्याशी मदनगोपाल मेघवाल, पूर्व जिला प्रमुख सुशीला सींवर, भूमि विकास बैंक के चेयरमैन रामनिवास गोदारा, तेजा गार्डन के राजेश भादू, एडवोकेट श्रीकिशन सींवर, देहात कांग्रेस के पूर्व कोषाध्यक्ष कौशल दुग्गड़, पूर्व पार्षद गजानन्द शर्मा, पीसीसी सचिव शिवलाल गोदारा, गजेंद्र सांखला, देहात कांग्रेस उपाध्यक्ष सत्तू खां, अम्बाराम इनखिया, देहात सोशल मीडिया अध्यक्ष मांगीलाल खीचड़, बृजलाल लेघा, करणी सिंह राजपुरोहित, मूलचंद गुर्जर, पप्पू गुर्जर, राजेंद्र भादू, गोविंदराम भादू, आनंद सियाग, भंवर कूंकणा, भगवानराम ज्याणी, रामनिवास, रूपाराम गोदारा, हंसराज बिश्नोई, रामानंद, रामकुमार, रामकिशन गोदारा, सोनू मेघवाल, मनीराम बिश्नोई, मनोज चौधरी, पूर्व ब्लॉक अध्यक्ष अर्जुनराम कूंकणा, सुरेंद्र सिंह राठौड़ आदि मौजूद थे।

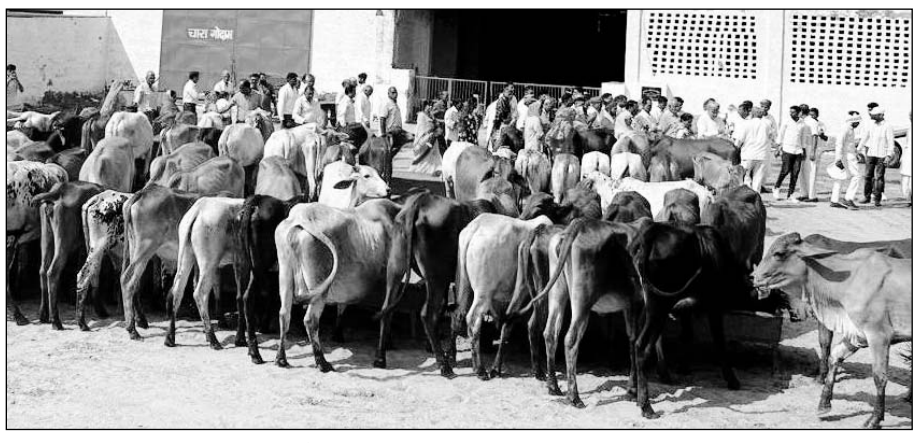

बीकानेर में गंगा गोल्डन जुबली गौशाला में गायों को हरा चारा, गुड़, लापसी खिलाकर कांग्रेसजनों ने सचिन पायलट का जन्मदिन मनाया।

- बीकानेर में कांग्रेसजनों ने सचिन पायलट के 47 वें जन्मदिवस पर गौ सेवा की

सरकारी योजनाओं की जानकारी दी

अनूपगढ़, (कासं)। मुख्य बाजार में भारतीय जनता युवा मोर्चा के कार्यकर्ताओं ने केन्द्र और राज्य सरकार की योजनाओं की जानकारी दी। कार्यकर्ताओं ने स्टॉल लगाकर लोगों को जागरूक किया। साथ ही पार्टी के नए सदस्यों को भी जोड़ा।

भारतीय जनता युवा मोर्चा के नवनियुक्त अध्यक्ष सन्नी धायल के नेतृत्व में स्टॉल लगाई गई। सन्नी धायल ने स्टॉल लगाकर सदस्यता अभियान के तहत 68 नए सदस्य बनाए। उन्होंने बताया कि आज मुख्य बाजार के गीता चौक पर स्टॉल लगाकर आमजन को केन्द्र व राज्य सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं की भी जानकारी दी गई है।

भाजपा के नगर मंडल अध्यक्ष मुकेश शर्मा ने बताया कि भारतीय जनता युवा मोर्चा के कार्यकर्ताओं के द्वारा अनूपगढ़ के सभी वार्डों में भाजपा के सदस्यता अभियान को व्यापक स्तर पर चलाया जा रहा है।

होमी भाभा सेन्टर फॉर साइन्स एजूकेशन
टाटा इन्सटीट्यूट ऑफ फंडामेन्टल रिसर्च
खगोल विज्ञान, जीव विज्ञान, रसायान विज्ञान, भौतिक विज्ञान, जूनियर साइन्स में
राष्ट्रीय ओलम्पिएड कार्यक्रम 2024-2025

इस कार्यक्रम में भाग लेने के इच्छुक सभी विद्यार्थी, इण्डियन एसोसिएशन ऑफ फिजिक्स टीचर्स (आईएपीटी) द्वारा 23 तथा 24 नवम्बर, 2024 को आयोजित संबंधित नेशनल स्टैण्डर्ड एक्जामिनेशन (एनएसईस) (विज्ञान विषयों के लिये) में अवश्य भाग लें।

एनएसई में योग्यता 2025 के संबंधित र्राष्ट्रीय ओलम्पिएड में भाग लेने के लिये पहला कदम है।

नामांकन के लिये-

एनएसई- https://www.iapt.org.in (21 अगस्त से 14 सितम्बर, 2024)

और विवरण के लिये- https://olympiads.hbcse.tifr.res.in
https://www.iapt.org.in

CBC 48143/12/0011/2425

बीसलपुर बांध में पानी की आवक जारी, छह गेट खोले

बांध के कैचमेंट एरिया में हो रही लगातार बारिश के कारण बनास नदी में पानी की आवक तेजी से बढ़ रही है

देवली/टोंक, (निसं)। जयपुर, अजमेर और टोंक की लाइफ लाइन बीसलपुर बांध में पानी की आवक जारी है। बीसलपुर बांध में पानी का स्तर लगातार बढ़ रहा है। शनिवार को बीसलपुर बांध के 6 गेट 2-2 मीटर तक खोलकर 72120 क्यूसेक पानी बनास नदी में छोड़ा गया, लेकिन रात्रि 8:30 बजे बांध में पानी की आवक की गति धीमी हो जाने के कारण चार गेटों की ऊंचाई को घटाकर एक-एक मीटर कर दिया है जिससे कि रात्रि 8:30 बजे 45255 क्यूसेक पानी छोड़ना शुरू कर दिया है।

- त्रिवेणी पुलिया पर बनास नदी का गेज चार मीटर चल रहा है, पीपलू उपखंड क्षेत्र में लगातार बारिश के चलते नदी, नाले एक बार फिर उफान पर
- शनिवार को बीसलपुर बांध के 6 गेट 2-2 मीटर तक खोलकर 72120 क्यूसेक पानी बनास नदी में छोड़ा गया

बीसलपुर बांध में पानी की आवक जारी रहने से शनिवार सुबह छह गेट खोले।

बीसलपुर परियोजना निर्माण खंड तृतीय के अधिशासी अभियंता मनीष बंसल ने बताया कि शुक्रवार को बीसलपुर बांध में भराव क्षमता तक पानी की आवक हो जाने के बाद बीसलपुर बांध के चार गेट खोलकर 54090 क्यूसेक पानी टोंक की ओर बनास नदी में छोड़ गया था। ऐसे में शनिवार को भी त्रिवेणी का गेज चार मीटर पर बना रहा। जिससे बीसलपुर बांध में लगातार पानी की अच्छी आवक होने के कारण शनिवार को बीसलपुर बांध के छह गेट दो-दो मीटर तक खोलकर 72120 क्यूसेक पानी बनास नदी में छोड़ा गया। शनिवार को बीसलपुर बांध के गेट संख्या 9,10 को दो दो मीटर और 11, 12 इन सभी को दो-दो मीटर तक खोलकर प्रत्येक गेट से 12020 क्यूसेक पानी की निकासी करवाई गई है। बाकी गेट 7,8,11,12 को एक-एक मीटर कर दिया गया है। परियोजना के अधिकारी बंसल ने यह भी बताया कि ऊपरी माल पर अच्छी बारिश की संभावना अभी बनी हुई है। ऐसे में बांध में पानी की आवक हो रही है।

इसी प्रकार पीपलू उपखंड क्षेत्र में लगातार बारिश के चलते नदी, नाले एक बार फिर उफान पर आ गए। कस्बे से नाथड़ी रपट के ऊपर से शुक्रवार देर रात पानी बहने लगा। शनिवार सुबह पानी का बहाव तेज में लोग जोखिम लेकर पार करते नजर आए। इसकी सूचना मिलने पर पीपलू थाना पुलिस ने मौके पर पहुंचकर दोनों तरफ अवरोधक लगाकर रास्ता बंद किया। दोपहर तक पानी कम होने पर कुछ देर आवागमन चला।

उदयपुर का फतहसागर छलका, चारों गेट छह-छह इंच खोले

जिला कलेक्टर ने पूजा-अर्चना कर फतहसागर के गेट खोले, सीसारमा नदी आज भी चार फीट के वेग से बह रही है

उदयपुर, (कासं)। शहर की हार्टबिट फतहसागर झील शनिवार दोपहर को छलक गई। इसके छलकने की खुशी में सैकड़ों की संख्या में लोग चादर देखने स्थल पर पहुंचे। इधर शहर में सुबह उमस के बाद दोपहर में बारिश हुई। तापमान दो डिग्री और चढ़कर 32.2 डिग्री पर जा पहुंचा। वहीं शाम पांच बजे तक उदयपुर शहर में 2 मिमी, उदयसागर 28 मिमी, वल्लभनगर में 22 मिमी बारिश रिकॉर्ड की गई। शेष जिले में कहीं बारिश के समाचार नहीं मिले है। इधर, सीसारमा नदी आज भी चार फीट के वेग से बह रही है। स्वरूपसागर के चारों गेट और कम होकर अब छह-छह इंच खुले हुए है। वहीं फतहसागर झील के 13 फीट क्षमता पार करने के बाद इसके चारों गेट भी 6-6 इंच खोल दिए गए। आयड़ नदी में प्रवाहित होकर यह पानी उदयसागर जा रहा है। उदयसागर झील में लगातार आवक को देखते हुए चौथे दिन भी उसके दोनों गेट सात-सात फीट खुले रहे। 24 अगस्त से शुरू हुई बारिश ने शहर की सभी झीलों को लबालब कर दिया है।

- 13 दिन में झीलों की स्थिति बदली, सभी लबालब

शनिवार को गणेश चतुर्थी के सुअवसर पर जिला कलेक्टर अरविन्द पोसवाल ने सैंकड़ों शहरवासियों की उपस्थिति में पूजा-अर्चना कर फतेहसागर के गेट खोले। इसके साथ ही समूचा उदयपुर खुशी से झूम उठा। उदयपुर में गत दिनों हुई लगातार बारिश से झीलों में तेजी से पानी की आवक हो रही है। गत दिनों पिछोला झील के लबालब होने पर स्वरूपसागर के गेट खोले गए थे। इससे फतहसागर का जलस्तर लगातार बढ़ रहा था। शनिवार को फतहसागर का जलस्तर 13 फीट होने के बाद दोपहर 1 बजे गेट खोलने की घोषणा की गई। दोपहर ठीक एक बजे आमजन को अलर्ट करने के लिए सायरन बजाया गया। इसके साथ ही सुरक्षाकर्मियों ने डाउन स्ट्रीम का जायजा लिया, ताकि पानी के बहाव से जनहानि नहीं हो।

इसके पश्चात जिला कलक्टर अरविन्द पोसवाल, उदयपुर विकास प्राधिकरण के आयुक्त राहुल जैन, अतिरिक्त मुख्य अभियंता संजीव शर्मा आदि ने विधिवत पूजा अर्चना की। जिला कलेक्टर ने श्रीफल वधेर कर जल देवता को पुष्प अर्पित किए। इसके पश्चात एक-एक करके फतेहसागर के 4 गेट 6-6 इंच क्षमता में खोले गए। गेट खुलने के साथ ही रपट पर जलराशि बहना शुरू हो गई। यह देखकर लोगों का उत्साह दुगुना हो गया। आमजन व पर्यटकों ने जयकारे लगाकर स्वागत किया। वीकेण्ड पर गेट खुलने से पाल पर देर रात तक लोगों का जमघट लगा रहा। लोगों ने सेल्फी लेकर तथा रिल्स बनाकर वीकेंड इंजॉय किया।

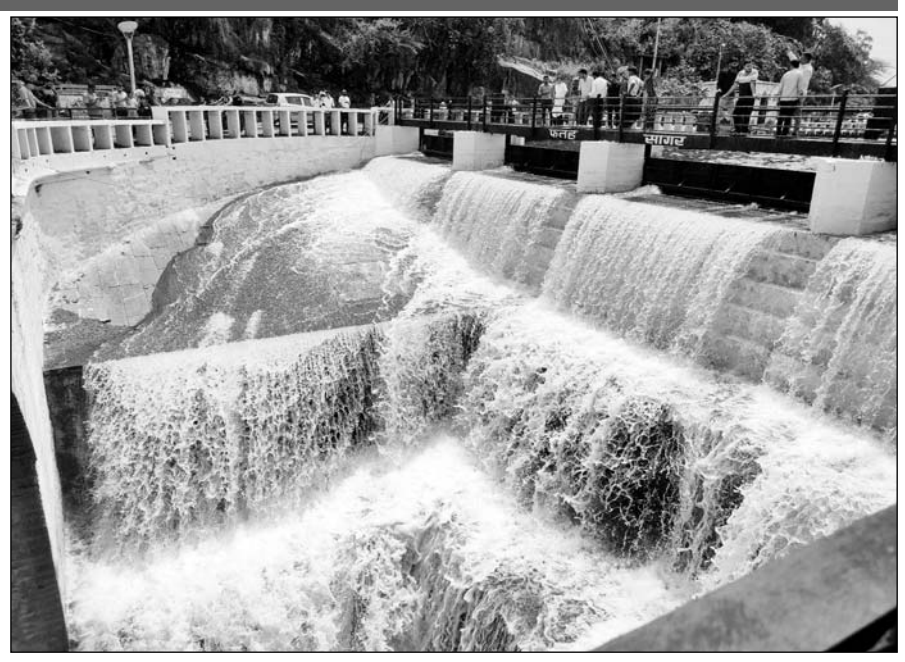

उदयपुर की फतहसागर झील छलकने पर इसके चारों गेट 6-6 इंच खोल दिए गए।

गायत्री परिवार भारत को एकजुट करने के लिए काम कर रहा है : ओम बिरला

हरिद्वार/नई दिल्ली। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने शनिवार को देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार में आयोजित "कलश यात्रा" का उद्घाटन किया। आध्यात्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण इस आयोजन में शामिल होने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए बिरला ने गायत्री परिवार और देव संस्कृति विश्वविद्यालय द्वारा शांति कुंज और देवभूमि उत्तराखंड को आध्यात्मिकता का एक प्रमुख केंद्र बनाने के लिए किए जा रहे अथक प्रयासों की सराहना की। बिरला ने गायत्री परिवार के साथ लंबे समय से अपने जुड़ाव का उल्लेख भी किया।

इस अवसर पर पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य और माता भगवती देवी को नमन करते हुए बिरला ने कहा कि उन्होंने आजीवन कलियुग के बीच एक नया सत्य युग लाने के लिए कार्य किया। संगठन की शुरुआत के दिनों का स्मरण करते हुए बिरला ने बताया कि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य और माता भगवती देवी के अटल संकल्प से गायत्री परिवार एक ऐसे केंद्र के रूप में विकसित हुआ जिससे लाखों लोगों के जीवन में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ। उन्होंने ज्ञान का प्रचार-प्रसार करने और राष्ट्र को जागृत करने के यात्रा के मिशन की सराहना की। राष्ट्र निर्माण में गायत्री परिवार की भूमिका का उल्लेख करते हुए बिरला ने इस बात पर जोर दिया कि ऐसे समय में जब भारत में कुछ ताकतें, खासकर आदिवासी बहुल क्षेत्रों में, एकता को तोड़ने की कोशिश कर रही हैं, वहीं गायत्री परिवार भारत को एकजुट करने के लिए काम कर रहा है।

बिरला ने जन जागरण की दिशा में कलश यात्रा के महत्व पर भी जोर दिया और सभी से आग्रह किया कि वे इस यात्रा से अपने मन और चेतना को आलोकित करते हुए पूरे देश में ज्ञान और प्रज्ञा का प्रसार करने का संकल्प लें। बिरला ने पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के जीवन और कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि सामाजिक सक्रियता के साथ ही उन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में भी महत्वपूर्ण योगदान किया। अध्यक्ष ने यह भी कहा कि गहन सांस्कृतिक जागृति से और अपनी समृद्ध विरासत को समझने से ही देश की प्रगति होगी और इस तरह की जागरूकता और ज्ञान को बढ़ावा देने के लिए पंडित श्रीराम शर्मा की कृतियों की सराहना की। अपने संबोधन के अंत में बिरला ने आशा व्यक्त की कि यह कलश यात्रा पूरे देश में सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जागृति लाने के एक शक्तिशाली माध्यम के साथ ही एकता का प्रतीक भी होगी। उन्होंने दीप से दीप जलाने, पूरे देश में प्रगति, समृद्धि और शांति का प्रकाश फैलाने तथा विकसित भारत के सपने को साकार करने की दिशा में सामूहिक प्रयास करने के महत्व पर बल दिया।

- लोकसभा अध्यक्ष ने देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार में कलश यात्रा का उद्घाटन किया
- 'गहन सांस्कृतिक जागृति से और अपनी समृद्ध विरासत को समझने से ही देश की प्रगति होगी'

कार्यक्रम को लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने संबोधित किया।

हिंडौन में दो दिन से बारिश का दौर जारी

हिंडौन सिटी, (निसं)। हिंडौन सिटी में शनिवार को मेघ जमकर मेहरबान हुए। इस दौरान शुक्रवार रात से शनिवार सुबह छह बजे तक 44 एमएम बारिश दर्ज हुई। इसके बाद शहर के कई हिस्सों व मुख्य बाजारों में फिर जलभराव हो गया। इधर मनीराम पार्क, जिला अस्पताल, शीतला कॉलोनी, डेम्प रोड क्षेत्र में दोपहर के वक्त सड़कों से जलस्तर घटने लगा, जिसके बाद दोपहर करीब एक बजे फिर झमाझम बारिश शुरू हुई। जिसमें शाम चार बजे तक 28 एमएम बारिश हुई, जिसके बाद सड़कों पर फिर जलभराव हो गया।

स्कूली बच्चे, महिलाओं व मरीजो को जिला अस्पताल के पास चौराहे पर पानी भरे रास्तों से गुजरना पड़ा। इधर क्षेत्र के अटकोली गांव में शुक्रवार रात करीब 7.30 बजे आकाशीय बिजली गिरने से दो महिलाएं झुलस गई। दो भैंस की आकाशीय बिजली से मौत हो गई। महिला की स्थिति सामान्य है। एक महिला जिला अस्पताल में उपचार के लिए भर्ती है। हिंडौन-बयाना मार्ग पर बाजना रोड के मोड़ पर जलभराव से दुपहिया वाहन व ऑटो वाहनों का आवागमन बंद है। हिंडौन में तेज गर्जनाओं के साथ बारिश हुई। बारिश के बाद भी घने बादल छाए हुए है।

'सचिन पायलट का संघर्षसील व्यक्तिव कार्यकर्ताओं में उत्साह का संचार करता है'

पूर्व विधायक सुचित्रा आर्य ने सचिन पायलट के जन्मदिन पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित किया।

नोहर। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी महासचिव एवं कांग्रेस वर्किंग कमेटी सदस्य सचिन पायलट के 47 वें जन्मदिन पर नोहर विधानसभा क्षेत्र के ग्राम ललाना, फेफाना, सुरपूरा, दलपतपुरा, पल्लू, बीसरासर, केलनिया एवं अन्य पंचायत मुख्यालयों पर गौमाता स्वामी के नाम से कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें गायों को दलीया, गुड़ एवं हरा चारा डाल कर गौसेवा कर पायलट के दीर्घायु एवं खुशहाल जीवन की कामना की गई पूर्व विधायक सुचित्रा आर्य ने इस अवसर पर कहा कि सचिन पायलट हिन्दुस्तान के लोकप्रिय नेताओं में से एक है उनका संघर्षसील व्यक्तिव पार्टी कार्यकर्ताओं में उत्साह का संचार करता है। पायलट ने मुद्दों एवं सिद्धांतों की राजनीति के बल पर लीक से हटकर अलग ही अपना राजनैतिक आभामंडल विकसित किया है जो अपने आप में अद्वितीय है। उन्होंने सकारत्मक राजनैतिक दृष्टीकोण से प्रदेश की राजनीति में एक लम्बी लकीर खींची है जो अन्य नेताओं से अलग ही असाधारण प्रतिभा को दर्शाती है।

- सचिन पायलट के 47 वें जन्मदिन पर नोहर में गौमाता स्वामी के नाम से कार्यक्रम आयोजित

आर्य ने पूर्व की राजनैतिक घटनाओं का जिक्र करते हुए कहा पायलट के विचारों में व्यक्तिगत लांछन एवं नकरात्मक टिक्का टिप्पणी को कोई स्थान नहीं है जिसका फायदा केवल कांग्रेस पार्टी को ही नहीं बल्कि बेहतर समाज निर्माण में भी होगा। पायलट का व्यक्तित्व जनसेवा के मार्ग पर चल रहे प्रदेश के लाखों युवाओं को बेहतर राजनैतिक शुचिता के लिए प्रेरित करता है। पूर्व विधायक आर्य के निवास स्थान पर केक काटकर पायलट को जन्मदिन की बधाई दी गई। इस दौरान कृष्ण महिया, नथूराम नैन, मांगेराम बेनीवाल, बेनीवाल कृष्ण सहारण, रवि शर्मा, जगदीश मेघवाल, हरिसिंह ऐचरा, बनवारी सहू, आदराम भाम्भू, मोहन सुथार, संतलाल सहू, कृष्ण बैरड़, गोपाल सहारन, गूगन सिहाग, फूलाराम सिहाग, बलवंत शीला, वेद तिवाड़ी सहित कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

रोडवेज की बस असंतुलित होकर खड्डे में पलटी

46 सवारियों में से 5-7 सवारियों को मामूली चोटें आई

सादुलपुर, (निसं)। राजगढ़-सिद्धमुख-भादरा सड़क मार्ग पर गांव चैनपुरा छोटा के पास शनिवार दोपहर में श्री गंगानगर से चिड़ावा के लिए राजगढ़ की ओर जा रही एक राजस्थान रोडवेज की बस संतुलन बिगड़ने से पलट गई। बस में सवार 46 सवारियों में से 5-7 सवारियों को मामूली चोटें आई हैं। घटना के बाद दूसरी बस से यात्रियों को रवाना किया गया।

- गनीमन रही कि बस 11 हजार केवी के पोल से टकराती हुई बच गई

बस चालक रामजीलाल व परिचालक प्रदीप जाट ने बताया कि वे सुबह आठ बजे हनुमानगढ़ डिपो की बस लेकर श्री गंगानगर से चिड़ावा रवाना हुए थे, जैसे ही चैनपुरा छोटा से 100 मीटर आगे निकले तभी एक बाइक सवार युवक बस के आगे आ गया तथा बस को रोकने का प्रयास किया। तभी बस असंतुलित होकर खड्डे में गिर कर पलट गई, लेकिन गनीमन ये रही कि बस11 हजार केवी के पोल से टकराती हुई बच गई, अन्यथा बड़ी जनहानि हो सकती थी। बस में सवार 5-7 सवारियों को मामूली चोटें आई हैं। वहीं घटना की सूचना पर मौके पर आसपास के ग्रामीण एवं सिद्धमुख थाना पुलिस मौके पर पहुंची। घायलों को सरकारी अस्पताल राजगढ़ ले जाया गया, जहां से प्राथमिक उपचार के बाद यात्रियों को छुट्टी दे दी गई।

घटना की मिली सूचना पर सिद्धमुख थाने के एएसआई रामनारायण मीणा मय पुलिस जाब्ते के मौके पर पहुंचे तथा घटना की जानकारी लेकर घायलों की स्वास्थ्य की जानकारी ली। एएसआई रामनारायण मीणा ने बताया कि राजस्थान रोडवेज के बस में सवार 5-7 सवारियों को मामूली चोटें आई, जिनकों वाहनों के द्वारा राजगढ़ भेज दिया गया है तथा मौके पर क्रेन का बुलाकर बस को खड़ा करवाया गया तथा बस चालक रामजीलाल पुत्र सांवरमल निवासी सिंगनौर तहसील उदयपुरवाटी जिला झुन्झुनूं व परिचालक प्रदीप पुत्र मोहन सिंह जाट निवासी ईश्वरपुरा पुलिस थाना धनूरी जिला झुन्झुनूं को अपने गंतव्य स्थान के लिए रवाना कर दिया है।

पलटी हुई राजस्थान रोडवेज बस को क्रेन की सहायता से हटवाया।

भवानीमंडी में चार इंच बारिश

भवानीमंडी, (निसं)। इस बार इंद्रदेव पूरी तरह से मेहरबान है। शनिवार को दिन उगने के साथ से ही रुक-रुककर व तेज बारिश का दौर जारी है। बारिश ने पिछले तीन वर्ष का रिकार्ड तोड़ दिया है। गत वर्ष सामन्य बारिश के अनुसार करीब बीस इंच बारिश हुई थी जबकि इस वर्ष 40 इंच के लगभग बारिश का आंकड़ा छूने को है। समय समय पर लगातार हो रही बारिश से भवानीमंडी उपखण्ड को पूर्ण रूप से फसलों को फायदा पहुंच रहा है। जहाँ नदी, नाले तलाब और बांध लबालब हो गए हैं। यहां गत 24 घंटे से बारिश का दौर जारी है जिसमें करीब चार इंच बारिश हुई है। पचपहाड़ तहसील में 1 जून से अब तक 38 इंच बारिश दर्ज की गई।

सीओ का रीडर और दलाल रिश्वत लेते गिरफ्तार

नदबई/भरतपुर, (निसं)। धौलपुर एसीबी की टीम ने उप अधीक्षक सुरेन्द्र सिंह के नेतृत्व में बड़ी कार्रवाई करते हुए भुसावर सीओ के रीडर हरिराम मीणा और एक दलाल राकेश कुमार गर्ग को रंगे हाथ 1 लाख 20 हजार रुपए की रिश्वत लेते गिरफ्तार किया है।

जानकारी के अनुसार पकड़े गए आरोपियों के द्वारा परिवादी से मामले में एफआर लगाने की एवज में रिश्वत राशि मांगी थी, जिसके चलते परिवादी ने धौलपुर एसीबी की टीम को अवगत कराते हुए सत्यापन कराया। जिसके बाद धौलपुर एसीबी के एडिशनल एसपी के नेतृत्व में नदबई के बाजार में कार्रवाई को अंजाम देते हुए दोनों को रिश्वत राशि के साथ रंग हाथ पकड़ा है। परिवादी पुष्पेंद्र सिंह बेनीवाल ने बताया कि वह वैर उपखंड के गांव सेंधली का निवासी है, जिसके खिलाफ भुसावर थाने में श्री एक्ट और 420 का मामला दर्ज हुआ था। भुसावर सीओ के रीडर हरिराम मीणा और दलाल राकेश कुमार ने मामले में एफआर लगाने के लिए 1 लाख 50 हजार रुपए की रिश्वत राशि की मांग की, लेकिन बात 1 लाख 20 हजार रुपए में बनी। जिसकी शिकायत एसीबी धौलपुर से की गई।

गिरफ्तार आरोपी।

- एसीबी ने दोनों को 1 लाख 20 हजार रुपए की रिश्वत लेते गिरफ्तार किया
- परिवादी से मामले में एफआर लगाने की एवज में 1.50 लाख की रिश्वत मांगी थी

धौलपुर एसीबी की टीम ने मामले का सत्यापन करवाया जो सही पाया गया। धौलपुर एसीबी के एडिशनल एसपी सुरेंद्र सिंह के नेतृत्व में शनिवार को दोपहर बाद नदबई के बाजार में रीडर हरिराम मीणा और दलाल राकेश कुमार को परिवादी से 1 लाख 20 हजार रुपए की रिश्वत राशि लेते रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया है। एसीबी की टीम अभी पकड़े गए दोनों आरोपियों से पूछताछ कर रही है। एसीबी की अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस स्मिता श्रीवास्तव के निर्देशन में आरोपियों से पूछताछ तथा कार्यवाही जारी है।

पदभार ग्रहण करने पर डॉ. बैरवा का स्वागत

जयपुर। राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ रुक्टा डेमोक्रेटिक ने नव पदस्थापित कॉलेज शिक्षा आयुक्त डॉ. ओमप्रकाश बैरवा के पदभार ग्रहण करने पर स्वागत किया है।

संगठन के प्रदेश संयोजक एवं राजकीय महाविद्यालय गंगापुर सिटी में राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर डॉ.रमेश बैरवा ने बताया है कि नए आयुक्त से उम्मीद है कि वे कॉलेज शिक्षा के उन्नयन के लिए हजारों की संख्या में रिक्त पड़े शैक्षिणक और गैर शैक्षिणक पदों पर भर्ती, नियमित कक्षाओं एवं अध्यापन हेतु शिक्षकों को गैरशैक्षिणक कार्यों से मुक्त किए जाने, कॉलेज शिक्षा आयुक्तालय के अधिकारियों द्वारा निष्पक्ष, न्यायपूर्ण कार्य करने तथा पद का दुरुपयोग किए जाने पर रोक लगाने, आयुक्तालय को प्रेषित शिकायतों का बिना भेदभाव समय पर निस्तारण करने, कॉलेज शिक्षक,कर्मचारी एवं छात्रों को एससी एसटी एक्ट के प्रावधानों के बारे में संवेदनशील बनाने सहित अन्य मुद्दों एवं मांगों के निराकरण हेतु सार्थक प्रयास करेंगे। जल्द ही रुक्टा डेमोक्रेटिक का प्रतिनिधिमण्डल जयपुर पहुंचकर नए आयुक्त का स्वागत करेगा,साथ ही छात्र एवं शिक्षक हित में मांगपत्र भी देगा।

डॉ. ओमप्रकाश बैरवा

युवक नदी में डूबा, मौत

हिंडौन सिटी, (निसं)। क्षेत्र के एकोरासी-बादलपुर स्थित जगर नदी में शनिवार दोपहर में एक युवक की डूबने से मौत हो गई। मौके पर पहुंची एसडीआरएफ और सूरौठ थाना पुलिस ने रेस्क्यू कर शव को बाहर निकाला।

सूरौठ थाना के एएसआई प्रतापसिंह ने बताया कि मृतक सूरौठ के मिल्कीपुरा निवासी राहुल जाटव (18) पुत्र समय सिंह है। उन्होंने बताया कि शनिवार को दोपहर में बादलपुर के नीचे नदी में एक युवक के डूबने की सूचना मिली। जिसके बाद जाब्ता लेकर मौके पर पहुंचे। वहीं प्रशासन के निर्देश पर एसडीआरएफ की टीम भी पहुंच गई। काफी प्रयास के बाद युवक को बाहर निकाला। जिसके बाद उसे जिला अस्पताल लेकर पहुंचे। जहां चिकित्सक ने उसे मृत घोषित कर दिया। मृतक के पिता समय सिंह ने बताया कि उसका पुत्र राहुल जाटव ढिंढोरा स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल में कक्षा 11 वीं में पढ़ाई कर रहा था। आज सुबह तेज बारिश होने के कारण स्कूल नहीं गया। जिसके बाद सुबह करीब 10 बजे वह भैंसों को लेकर जंगल की तरफ चला गया। इस दौरान एक भैंस गड्ढे में फंस गई। जिसे निकालने के प्रयास में वह खुद भी फंस कर डूब गया।

जयपुर की विरासत के संरक्षण के साथ विकास कार्य हो : दिया कुमारी

- चारदीवारी में बेतरतीब यातायात पर चिंता जताते हुए कहा कि इसके लिये आवश्यक उपाय किये जायें
- 'विरासत संग्रहालय (राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट) को इस तरह विकसित किया जाए जिससे कि यहां पर कलाकार और शिल्पी अपनी कलाओं का प्रदर्शन कर सके और वे अपने उत्पादों का विक्रय भी कर सके'

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी की अध्यक्षता में जयपुर में आने वाले पर्यटकों पर्यटकों को होने वाली असुविधाओं के निराकरण के सम्बन्ध में शनिवार को सचिवालय में बैठक आयोजित की गई।

जयपुर। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी की अध्यक्षता में जयपुर में आने वाले पर्यटकों के प्रवास को और अधिक खुशनुमा और सुविधा पूर्ण बनाने के लिए यहां की विरासत को कायम रखते हुए विकास कार्यों को किये जाने और पर्यटकों को होने वाली असुविधाओं के निराकरण के सम्बन्ध में शनिवार को सचिवालय में बैठक आयोजित की गई। बैठक में प्रमुख सचिव नगरीय विकास वैभव गालरिया, मुख्य वन्य जीव प्रतिपालक पवन कुमार उपाध्याय, शासन सचिव पर्यटन रवि जैन, जेडीसी आनंदी, जयपुर जिला कलेक्टर जितेन्द्र कुमार सोनी, नगर निगम हेरिटेज के आयुक्त अभिषेक सुराणा और पुलिस अतिरिक्त उपायुक्त यातायात सागर, अतिरिक्त निदेशक पर्यटन राकेश शर्मा, उपनिदेशक पर्यटन उपेन्द्र सिंह शेखावत उपस्थित रहे।

उपमुख्यमंत्री ने बताया कि जयपुर में बड़ी संख्या में पर्यटकों का आगमन होता है। यहाँ आने वाले पर्यटकों को लिए बेहतर सुविधायें विकसित हो इसके लिए कार्य किया जाना है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने बजट में चार दिवारी शहर के हेरिटेज संरक्षण और विकास के लिए 100 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है। उन्होंने कहा कि शहर में कई स्थानों पर कचरा पांइट बने हुए हैं जहां पर गंदगी देखने में आती है, इन कचरा प्लाइंट का समाधान किया जाना चाहिए। शहर की क्षतिग्रस्त लाइटों की मरम्मत की जाए। इसके साथ ही हेरिटेज शैली से भवनों एवं बाजारों में की गई रौशनी (इल्युमिनेशन) मरम्मत और उनका सुचारू रूप से संचालन सुनिश्चित हो। डस्टबिन लगाने का कार्य किया जाए एवं शहर का विरुपन करने वाले पोस्टर बैनर हटाये जाए। उपमुख्यमंत्री ने चारदीवारी में बे-तरतीब यातायात को एक बड़ी चिंता का विषय बताते हुए इसके समाधान पर चर्चा की। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि यातायात को सुगम बनाने के उपाय किए जाए। कुछ पार्किंग पाइंट निर्धारित कर वहां नियमित पार्किंग सुनिश्चित हो। रामबाग में बनी पार्किंग में व्यापारी और आगन्तुक दोनों ही वाहन पार्क कर परकोटे के यातायात को सुव्यवस्थित बनाने में सहयोग प्रदान करें। इस हेतु आवश्यक उपाय किए जाए। उन्होंने अधिकारियों को परकोटे में इलेट्रिक बसें चलाने तथा ई-रिक्शा को भी योजनागत व्यवस्थित रूप से संचालित किये जाने के निर्देश दिए।

उपमुख्यमंत्री ने कहा क परकोटा के हेरिटेज का मूल गुलाबी रंग कायम रहे। अस्त-व्यस्त तरह से लटके हुए कैबल्स वायर्स शहर की खूबसूरती को खराब कर रहे हैं, इन्हें हटाया जाए। उन्होंने कहा कि पूरे चारदीवारी क्षेत्र में विद्युतीकरण भूमिगत किया जाए अथवा एकीकृत भूमिगत लाइन विकसित की जाए, जिससे इस समस्या का स्थाई समाधान सुनिश्चित हो सके।

दिया कुमारी ने कहा कि विरासत संग्रहालय (राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट) को इस तरह विकसित किया जाए जिससे कि यहां पर कलाकार और शिल्पी अपनी कलाओं का प्रदर्शन कर सके और वे अपने उत्पादों का विक्रय भी कर सके।

बैठक में जल महल की पाल के सौंदर्यकरण, मानसागर झील में वाटर लेजेर शो तथा वहां बोटिंग की संभावनाओं पर चर्चा की गई। साथ ही आमेर मावठा पार्किंग समस्या के निराकरण पर भी चर्चा की गई।

विद्या संबल योजना में लगे शिक्षक को हटाने पर रोक

जयपुर । राजस्थान हाईकोर्ट ने विद्या संबल योजना के तहत गेस्ट फैकल्टी के तौर पर लगे व्याख्याता को हटाने पर रोक लगा दी है। इसके साथ ही अदालत ने मामले में उच्च शिक्षा सचिव और कॉलेज शिक्षा आयुक्त सहित अन्य से जवाब तलब किया है। जस्टिस महेन्द्र गोयल की एकलपीठ ने यह आदेश अमित यादव की याचिका पर प्रारंभिक सुनवाई करते हुए दिए। अदालत ने इन अधिकारियों से पूछा है कि याचिकाकर्ता का चयन करने के बाद उसे बिना सुनवाई का मौका दिए हटाया क्यों जा रहा है।

याचिका में अधिवक्ता रामप्रताप सैनी ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता का विद्या संबल योजना के तहत सीकर की राजकीय कला महाविद्यालय में व्याख्याता के तौर पर चयन हुआ था। राज्य सरकार के आदेश की पालना में उसने गत 8 जुलाई को कार्यग्रहण भी कर लिया। वहीं 15 जुलाई को राज्य सरकार ने एक आदेश जारी कर कहा कि ओपीजेएस विवि से डिग्री लेने वाले अभ्यर्थियों को अध्यापन कार्य के लिए आमंत्रित नहीं किया जाए और जो अभ्यर्थी कार्य ग्रहण कर चुके हैं, उन्हें सेवा से हटाया जाए। याचिकाकर्ता की ओपीजेएस विवि से पीएचडी की डिग्री होने के कारण उसे सेवा से हटा दिया गया। याचिका में कहा गया कि उसने इस विश्वविद्यालय से पूरा अध्ययन कर डिग्री ली है। इसके अलावा उसे सेवा से हटाने से पहले न तो नोटिस दिया गया और ना ही उसका पक्ष सुना गया। ऐसे में राज्य सरकार का यह आदेश अवैध है। इसलिए इस आदेश को रद्द करते हुए याचिकाकर्ता को सेवा में बनाए रखा जाए।

माता-पिता को मान-सम्मान देकर बाल गणेश बने प्रथम पूज्य : मदन राठौड़

गणेश चतुर्थी पर सिविल लाइंस के अजमेर रोड स्थित द ग्रैंड अनुकंपा के प्रतिष्ठा बैंक्वेट में शनिवार को विशाल गणेशोत्सव-2024 समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान मंच पर राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागडे, भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्रीय प्रचारक निंबाराम मौजूद रहे।

जयपुर । गणेश चतुर्थी पर सिविल लाइंस के अजमेर रोड स्थित द ग्रैंड अनुकंपा के प्रतिष्ठा बैंक्वेट में शनिवार को विशाल गणेशोत्सव-2024 समारोह का आयोजन किया गया। राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागडे ने समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में प्रथम पूज्य गणपति की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्जवलन कर गणेशोत्सव का श्रीगणेश किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ ने की और कार्यक्रम के मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्रीय प्रचारक निंबाराम रहे।

मदन राठौड़ ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि आज देवताओं में गणेश प्रथम पूज्य इसलिए है क्योंकि उन्होंने अपने माता-पिता को सम्मान दिया। माता-पिता को अपना संसार मानते हुए उनकी परिक्रमा करने वाले बाल गणेश ने ये सिद्ध कर दिया था कि व्यक्ति के जीवन में जो स्थान माता-पिता का है वो किसी अन्य का नहीं हो सकता। माता-पिता की सेवा, सम्मान और आदर भाव से व्यक्ति अपना बचपन, जवानी एवं बुढ़ापा सुधार सकता है।

गणेशोत्सव में विशिष्ट अतिथि सिविल लाइंस विधायक गोपाल शर्मा ने स्वागत भाषण के बाद राज्यपाल, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सहित अन्य अतिथियों का साफा, दुपट्टा, माला स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मान किया। अति विशिष्ट अतिथि जेईसीआरसी के उपाध्यक्ष अमित अग्रवाल थे। सिविल लाइंस के सबसे बड़े गणेशोत्सव में चित्रकला प्रतियोगिता ड्रॉइंग ओलम्पियाड के विजेता विद्यार्थियों को स्मृति चिह्न और सम्मान निधि देकर पुरस्कृत किया गया। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने टॉप 9 विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया।

शास्त्रीय संगीत और ओडीसी नृत्य से गुलज़ार हुआ जे.के.के. परिसर

डेल्फीक काउन्सिल ऑफ़ राजस्थान की ओर से जवाहर कला केंद्र में आयोजित किए जा रहे तीन दिवसीय सुर और ताल महोत्सव के दूसरे दिन सौरव वशिष्ठ के शास्त्रीय गायन और ओडीसी नृत्य की मनमोहक प्रस्तुति दी।

जयपुर। डेल्फीक काउन्सिल ऑफ़ राजस्थान द्वारा जवाहर कला केंद्र में आयोजित किए जा रहे तीन दिवसीय सुर और ताल महोत्सव की दूसरी संध्या सौरव वशिष्ठ के शास्त्रीय गायन और ओडीसी नृत्य की मनमोहक प्रस्तुति के नाम रहीं। पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र और उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के सहयोग से आयोजित किए जा रहे इस महोत्सव में सुबह के सत्र में प्रसिद्ध फोटोग्राफर शिरीष कराले ने विधार्थिओं को फोटोग्राफी की बारीकीयों से अवगत करवाया जिसमें स्टूडेंट्स को प्रोडक्ट फोटोग्राफी, लाइट्स का प्रयोग, पोटरैट फोटोग्राफी सीखने को मिला।

शाम को रंगायन सभागार में पंडित कुंदनमल शर्मा के शिष्य युवा शास्त्रीय गायक सौरभ वशिष्ठ नें राग हंसध्वनि में विलम्बित रचना विघ्न हरण गज वदन गजानन और द्रुत रचना में लागी लगन सखी पति सन की मनभावन प्रस्तुति दी । अपनी प्रस्तुति में उन्होंने रागदारी, आलाप, तान का अत्यंत सुंदर संयोजन प्रस्तुत किया उनके साथ तानपुरे मेन अजय कुमार, तबले पर मल्हार मुखर्जी, हारमोनियम पर गजेंद्र डांगी जी नें संगत की। कार्यक्रम की दूसरी प्रस्तुति ओडीसी के प्रसिद्ध युवा नृतक कृष्नेन्दु शाह और ग्रुप की रहीं। अपनी प्रस्तुति में उन्होंने भगवान गणेश पर आधारित मंगलाचरण और राग झिझोटी में कृष्ण और भक्त के परस्पर प्रेम को दर्शाया इस नृत्य प्रस्तुति में उनके साथ सृष्टि पांडे, शिविका माथुर, केतिकी मुंद्रा, रुद्राक्षी चतुर्वेदी, सिथू और भोलाक्षिका नें अपने सुन्दर नृत्य संयोजन से दर्शकों को रोमांचित कर दिया।

राजस्थान डेल्फिक काउंसिल की अध्यक्ष श्रेया गुहा ने बताया कि इस प्रकार के आयोजन के ज़रिये डेल्फिक काउंसिल प्रदेश की समृद्ध लोक संगीत एवं कलाओं (शास्त्रीय संगीत, भारतीय फ़िल्म संगीत, लोकप्रिय संगीत, शास्त्रीय नृत्य, लोक नृत्य, समकालीन नृत्य, फोटोग्राफी) के प्रति युवाओं की भागीदारी को बढाने के दिशा में कार्य कर रहीं है , जिसके ज़रिये कला व संस्कृति के प्रदर्शन के लिए युवाओं को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंच प्रदान किया जा रहा है।

राजस्थान विश्वविद्यालय में एडवोकेट राजदीपक रस्तोगी का अभिनंदन

राजस्थान विश्वविद्यालय की अरबों रुपये की भूमि को भू माफियाओं से बचाने के अभियान में अभूतपूर्व योगदान करने वाले अतिरिक्त सोलिसीटर जनरल राजदीपक रस्तोगी का कुलपति अल्पना कटेजा ने उनका अभिनंदन किया।

जयपुर। राजस्थान विश्वविद्यालय में इस वर्ष शोध एवं अकादमिक क्षेत्र में उत्कृष्टतम कार्य करने वाले चयनित शिक्षकों को टीचर एक्सीलैंस अवार्ड 23-24 प्रदान करने के लिए आयोजित विशेष समारोह में अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल ऑफ़ इंडिया राज दीपक रस्तोगी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। इस कार्यक्रम में रस्तोगी द्वारा एक विधिवेत्ता के रूप में उच्च आदर्शों के साथ समाज के लिए किए गए सराहनीय विशेष कार्यों का विशेष उल्लेख करते हुए उनका भावपूर्ण अभिनंदन किया गया।

राजस्थान विश्वविद्यालय के जन संपर्क अधिकारी डॉ भूपेंद्र सिंह शेखावत ने बताया कि राजस्थान विश्वविद्यालय को इसकी स्थापना और वर्ष 1961 में कुल लगभग 364 एकड़ की विशाल भूमि इसके मुख्य परिसर के लिए, जिसका वर्तमान में बाजार मूल्य अरबो रुपए में है, की वर्षों पूर्व स्वीकृति की घोषणा तो कर दी गई, लेकिन 70 वर्षों की लंबी अवधि के बावजूद भी तत्कालीन विश्वविद्यालय प्रशासन की उदासीनता या अन्य किन्हीं कारणों के चलते इस भूमि का औपचारिक रूप से स्वामित्व प्राप्त नहीं किया जा सका। राजस्व नियमों से जुड़ी इस पेचीदगी का आभास कर एक बड़े भू भाग पर बड़े-बड़े प्रभावशाली भूमाफियाओं ने, इस विश्वविद्यालय से ही जुड़े कुछ शिक्षकों एवं अन्य अशैक्षिणक कर्मियों के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग से इस भूमि पर अनधिकृत रूप से कब्जे करना प्रारंभ कर दिया।

इस भूमि को बचाने के अभियान में एडवोकेट राज दीपक रस्तोगी मानो इस अरबो रुपए मूल्य की पवित्र भूमि को बचाने के संग्राम में सारथी ही बन गए, समय-समय पर इनके द्वारा स्वैच्छिक एवं निशुल्क आधार पर दिया गया विधिक मार्गदर्शन इस कठिन अभियान की सफलता का प्रमुख आधार बना।

अपने उच्च शिक्षण संस्थान रहे, राजस्थान विश्वविद्यालय के लिए उच्च आदर्श के साथ प्रेरणादायी सम्मान रखने वाले पूर्व छात्र राज दीपक रस्तोगी के हाथों से विश्वविद्यालय के उत्कृष्टतम शिक्षकों का सम्मान किए जाने के लिए मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित करने के उत्कृष्ट विचार के लिए कुलपति प्रोफेसर अल्पना कटेजा ने उनका अभिनंदन किया।

नेट-थियेट पर भजन संध्या

जयपुर। नेट-थियेट कार्यक्रमों की श्रृंखला में आज पधारो बिंदायक कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध भजन गायक आनंद पुरोहित ने अपनी सुरीली आवाज से रिद्धि सिद्धि के दाता गजानंद के भजनों की ऐसी अविरल धारा प्रवाहित की दर्शक गणपति बप्पा की जय जयकार करने लगे।

नेट-थियेट के राजेन्द्र शर्मा राजू ने बताया कि गणेश चतुर्थी के पावन अवसर पर कलाकार आनंद ने अपने कार्यक्रम की शुरूआत रनत भंवर सु आजो, थ रिद्धि सिद्धि का भरतार से की । इसके बाद उन्होंने भजन गणपति पुरण कीजो काज, जो मांगे दाता तुरंत देते हैं, पूर्ण कीजो काज को बडे ही सरीले अंदाज में सुना कर दर्शकों को मंत्र मुग्ध किया। कलाकार आनंद पुरोहित ने अंत में गणपति का सुप्रसिद्ध भजन हे लंबोदर हे गणनायक मूसक विराजे सिद्धि विनायक, आंगन पधारो म्हारे गौरी गजानन, मोदक चढाऊ थारै लाख सवा मन को बड़े ही मनोयोग से गाकर प्रथम पूज्य गणपति को मनाया।

आनंद पुरोहित के साथ कोरस मे लवीना भार्गव, तनु कवर, योगेश शर्मा और मोहित सैनी ने सुरीला साथ निभाया।

इनके साथ तबले पर प्रसिद्ध कलाकार धनंजय डांगी ने अपनी सुरीली संगत से इस संध्या को खुशनुमा बना दिया। गिटार पर आयुष पुरोहित ने अपनी शानदार संगत से दर्शकों की तालियां बटोरी।

कलेक्टर ने हिंगोनिया गौशाला का निरीक्षण किया

जयपुर। जिला कलेक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी बेजुबानों को लेकर भी संवेदनशील हैं। जिला कलेक्टर ने शनिवार को बस्सी स्थित हिंगोनिया गौशाला का निरीक्षण किया। इस दौरान जिला कलेक्टर ने गौशाला में गोवंश के लिए चारे, पानी, रखरखाव सहित अन्य व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

जिला कलेक्टर ने नंदीशाला, नेपियर घास की खेती, बायोगैस प्लांट, पशु चिकित्सालय एवं पशु आईसीयू वार्ड का भी जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने घायल गौवंश की बेहतर देखभाल करने एवं बाड़ों में पंखे लगाने के लिए निर्देशित किया साथ ही बारिश के मौसम में गौवंश को परेशानी ना हो इसके लिए टीनशेड एवं बाड़ों गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए भी निर्देशित किया। इस दौरान जिला कलेक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने गाय के बछड़े को अपने हाथों से दूध पिलाया। साथ ही एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत गौशाला में पौधारोपण भी किया।

अदालती आदेश की पालना नहीं करने पर अफसरों को अवमानना नोटिस

जयपुर। हाईकोर्ट ने अदालती आदेश की पालना नहीं करने पर प्रमुख चिकित्सा सचिव, स्वास्थ्य निदेशक और संयुक्त स्वास्थ्य निदेशक, अजमेर सहित अन्य को अवमानना नोटिस जारी कर जवाब तलब किया है। जस्टिस उमाशंकर व्यास की एकलपीठ ने यह आदेश किरण कुमार बेदी की अवमानना याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए। याचिका में अधिवक्ता विजय पाठक ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता ने नर्सिंग ऑफिसर भर्ती-2023 में आवेदन किया था। भर्ती की मेरिट में आने पर विभाग ने उसके दस्तावेजों का सत्यापन भी कर लिया था, लेकिन अनुभव प्रमाण पत्र पर अधिकारियों के काउंटर साइन नहीं होने के कारण उसे चयन सूची में शामिल नहीं किया गया। याचिकाकर्ता ने एफआरएचएस संस्था के जरिए विभाग की परिवार नियोजन स्कीम में काम किया था। इस पर हाईकोर्ट ने गत 6 दिसंबर को विभाग को निर्देश दिए थे कि वह याचिकाकर्ता का अनुभव प्रमाण पत्र बनाए और उसे चयन प्रक्रिया में शामिल करे।

विवाहित व रिलेशनशिप वाले युगलों की सुरक्षा नीति तैयार

जयपुर । विवाहित जोड़ों और क्लोज रिलेशनशिप में रह रहे युगलों की सुरक्षा के लिए राज्य में एक मानक संचालक प्रक्रिया (एसओपी) निर्धारित की गई है। पुलिस मुख्यालय से इस संबंध में अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस सिविल राइट्स एवं एएचटी भूपेंद्र साहू द्वारा आदेश जारी किए गए हैं।

एडीजी साहू ने बताया कि राजस्थान उच्च न्यायालय जयपुर द्वारा 2 अगस्त 2024 को दिए गए आदेश की पालना में यह एसओपी निर्धारित की गई है। इसके अनुसार राज्य के विवाहित जोड़े एवं क्लोज रिलेशनशिप में रह रहे युगल स्वयं, किसी प्रतिनिधि अथवा अधिवक्ता के जरिए प्रार्थना पत्र कर सकते है। यदि उन्हें किसी से भी खतरा हो तो वे इस संबंध में नामित नोडल अधिकारी को सुरक्षा के लिए अभ्यावेदन प्रस्तुत करेंगे।

ऐसे युगल सुगम रिपोर्टिंग के लिए डायल 112, महिला हेल्पलाइन नंबर 1090, राज्य स्तरीय व्हाट्सएप हेल्पलाइन 8764871150, जिला स्तरीय व्हाट्सएप हेल्पलाइन एवं पुलिस नियंत्रण कक्ष के नम्बर, जिला स्तर पर संचालित नियंत्रण कक्ष की ईमेल आईडी पर शिकायत दर्ज कर सकते हैं। जल्द ही एससीआरबी द्वारा पुलिस वेबसाइट पर लिंक उपलब्ध करवाया जा रहा है। उस लिंक के माध्यम से आवेदक थाने पर व्यक्तिगत उपस्थित हुए बिना अपनी शिकायत दर्ज करा सकते हैं। इन माध्यमों से प्राप्त शिकायत को प्रभारी अधिकारी अविलंब नोडल अधिकारी, संबंधित वृत्त अधिकारी एवं थानाधिकारी को प्रेषित करेंगे। नोडल अधिकारी शिकायत पर तुरंत पीड़ित युगल को अंतरिम राहत प्रदान करेंगे। सीसीटीवी कैमरे की निगरानी में आवेदक के बयानों की ऑडियो व वीडियो रिकॉर्डिंग की जाएगी। यदि उन्हें किसी प्रकार का खतरा है तो पुलिस सुरक्षा उपलब्ध करवाना सुनिश्चित करेंगे। यदि सुरक्षा उपलब्ध कराने के पर्याप्त आधार नहीं है तो स्पष्ट कारण बताएंगे। संबंधित चाहे तो उनके परिजनों को बुलाकर आपसी समझाईश का प्रयास करेंगे। यदि युगल के परिजनों को किसी अन्य व्यक्ति या समूह द्वारा प्रताड़ित किए जाने की शिकायत प्राप्त हो तो तत्काल उनकी सुरक्षा एवं विधिक कार्रवाई किया जाना सुनिश्चित करेंगे।

घर से जेवरात-नकदी लेकर भागी दुल्हन

जयपुर । मालपुरा थाना इलाके में शादी के एक साल बाद लुटेरी दुल्हन घर से जेवरात व नकदी लेकर भाग निकली। भागने के बाद लुटेरी दुल्हन ने परिवार जनों को झूठे मुकदमे में फंसाने की धमकी देना शुरू कर दिया। इससे परेशान होकर ससुराल वालों ने पुलिस की शरण ली। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

पुलिस के अनुसार कृषि नगर टोल टैक्स निवासी प्रहलादी उर्फ पिल्ली देवी ने मामला दर्ज करवाया कि उसके बेटे की शादी साल 2020 में सुमन उर्फ मंजू देवी से हुई थी। शादी के एक साल बाद फरवरी 2021 में वह घर से सोने चांदी के जेवरात व नकदी लेकर भाग निकली।

अब सुमन उर्फ मंजू देवी , संतोष देवी, कानजी उर्फ कन्हैया लाल उसके परिवार को झूठे केस में फंसाने की धमकी दे रहे है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। मामले की जांच एएसआई लालचंद कर रहे है। वहीं झोटवाडा थाना इलाके में शादी के कुछ महिने बाद ही दुल्हन घर से जेवरात व नकदी लेकर भाग गई।

पुलिस के अनुसार न्यू कॉलोनी पंचायत समिति के सामने निवासी विरेंद्र शर्मा ने मामला दर्ज करवाया कि उसने किरण शर्मा से शादी की थी। शादी के कुछ दिन बाद किरण शर्मा घर से जेवरात व नकदी लेकर भाग निकली। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

प्रो-एक्टिव अप्रोच के साथ आयुष्मान राजस्थान का संकल्प साकार करें : गायत्री राठौड़

- प्रमुख शासन सचिव ने मुख्यमंत्री निशुल्क दवा एवं जांच योजना की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि दवा आपूर्ति तंत्र को सुदृढ़ बनाने के लिए ई-औषधि सॉफ्टवेयर पर रियल टाइम मॉनिटरिंग सुनिश्चित की जाए

जयपुर। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की प्रमुख शासन सचिव गायत्री राठौड़ ने कहा कि चिकित्सा तंत्र को मजबूत बनाना एवं आमजन को सुगमता के साथ स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। इसके दृष्टिगत विभाग के सभी अधिकारी एवं कार्मिक टीम भावना और प्रो-एक्टिव अप्रोच के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए आयुष्मान राजस्थान के संकल्प को साकार करें।

राठौड़ कार्यभार संभालने के बाद शनिवार को स्वास्थ्य भवन में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा बैठक को संबोधित कर रही थीं। उन्होंने कहा कि सभी चिकित्सा संस्थानों में जांच, दवा एवं उपचार सेवाएं और बेहतर करने के लिए तकनीकी नवाचारों को अपनाया जाए। साथ ही, विभाग के विभिन्न अनुभागों के बीच समुचित समन्वय रहे।

राठौड़ ने कहा कि राज्य सरकार की प्रतिबद्धता के अनुरूप बजट घोषणाओं को समय पर पूरा करने के लिए प्रभावी एक्शन प्लान बनाएं। हर घोषणा की एक टाइम लाइन निर्धारित करें और उसके अनुसार कार्य योजना को अंजाम दें। इसमें अनावश्यक विलंब नहीं हो। उन्होंने कहा लेखा शाखा के सभी अधिकारी वित्त विभाग से समन्वय कर आवश्यक स्वीकृतियां प्राप्त करने में सहयोग करें।

प्रमुख शासन सचिव ने कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए मानव संसाधन की उपलब्धता अति आवश्यक है। इसे ध्यान में रखते हुए भर्ती प्रक्रिया को गति दी जाए। विभिन्न भर्ती एजेंसी तय समय सीमा में भर्तियों के काम को पूरा करें, ताकि रिक्त पदों को जल्द से जल्द भरकर क्वालिटी सर्विसेज उपलब्ध करवाने में आसानी हो और प्रदेश के युवाओं को रोजगार के अधिकाधिक अवसर मिल सकें। उन्होंने चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की राइजिंग राजस्थान से संबंधित गतिविधियों के लिए आरएमएससीएल की प्रबंध निदेशक श्रीमती नेहा गिरि को नोडल अधिकारी नियुक्त किया।

प्रमुख शासन सचिव ने मुख्यमंत्री निशुल्क दवा एवं जांच योजना की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि दवा आपूर्ति तंत्र को सुदृढ़ बनाने के लिए ई औषधि सॉफ्टवेयर पर रियल टाइम मॉनिटरिंग सुनिश्चित की जाए। साथ ही, दवा खरीद एवं आपूर्ति निर्धारित गाइडलाइन के अनुसार की जाए। उन्होंने मुख्यमंत्री निशुल्क दवा योजना में देशभर प्रथम स्थान पर रहने पर आरएमएससीएल को बधाई दी और आगे भी इसे बरकरार रखने के निर्देश दिए।

छात्रा से ढाई लाख रु.व जेवरात हड़पे

जयपुर । प्रेम जाल में फंसा कर शादी का झांसा देकर एक युवक ने एक छात्रा से ढाई लाख रुपए और सोने चांदी के जेवरात हड़प लिए। घटना के सम्बंध में पीडिता ने सोडाला थाने में मामला दर्ज करवाया है। पुलिस के अनुसार सोडाला निवासी 19 वर्षीय युवती ने मामला दर्ज करवाया कि उसने हाल ही में 12वीं कक्षा पास की है। उसकी जान पहचान 10 वीं में पढने वाले कबीर के बड़े भाई अल्तमश कुरैशी से हुई। वह रोजाना कबीर को छोडने और लेने स्कूल आते थे।

स्वास्थ्य और शिक्षा सेवाओं का ग्रामीण क्षेत्र में और विस्तार किया जायेगा : गोदारा

बीकानेर, (कासं)। खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री सुमित गोदारा ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र के ढांचागत विकास को मजबूत बनाने तथा आमजन हेतु सुविधाओं को सुदृढ़ करने में राज्य सरकार कोई कसर नहीं रखेगी।

संसाधनों की हर संभव उपलब्ध करवा क्षेत्र के विकास को सुनिश्चित किया जायेगा। सड़क, बिजली और पानी की सुचारू आपूर्ति के साथ-साथ स्वास्थ्य और शिक्षा सेवाओं का ग्रामीण क्षेत्र में और विस्तार किया जायेगा। गोदारा ने शनिवार को बम्बलू, पनपालसर और गैरसर में विभिन्न विकास कार्यों के लोकार्पण अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों में यह बात कही। बम्बलू में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में तीन नए कक्षा कक्षा के लोकार्पण करते हुए मंत्री गोदारा ने कहा कि विद्यालय में नए कक्षा कक्ष निर्मित होने से कक्षाओं के लिए आनुपातिक रूप से कमरों की कमी दूर होगी। हर कक्षा के लिए विद्यार्थियों को अलग से कक्षा कक्ष उपलब्ध हो सकेगा।

खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री सुमित गोदारा ने बम्बलू में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में तीन नए कक्षा कक्ष के लोकार्पण कार्यक्रम को संबोधित किया।

- बम्बलू, पनपालसर और गैरसर में विकास कार्यों का लोकार्पण किया, आमजन की समस्याएं भी सुनी
- क्षेत्र में सड़क, पानी और बिजली की सुविधाओं के लिए नई स्वीकृतियां जारी की गई

उन्होंने यहां हरो जी महाराज की बाड़ी स्थित नवनिर्मित ट्यूबवैल का भी लोकार्पण किया। गोदारा ने कहा कि क्षेत्रवासियों पीने का पानी उपलब्ध रहे इस दिशा में कार्य करते हुए इस ट्यूबवैल के कार्य को समय पर पूरा करवाया गया है। अब तक आठ ट्यूबवैल ग्रामीण क्षेत्र में प्रारम्भ करवा दिये गए हैं। उन्होंने यहां आमजन के परिवाद सुने और संबंधित अधिकारियों को दूरभाष के माध्यम से निर्देश भी दिए। पनपालसर में नवनिर्मित ट्यूबवैल लोकार्पण अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री गोदारा ने कहा कि क्षेत्र में सड़क, पानी और बिजली की सुविधाओं के लिए नई स्वीकृतियां जारी की गई है। इन कार्यों को शीघ्र पूरा करवा दिया जायेगा। पनपालसर में इस ट्यूबवैल के निर्मित होने से ग्राम वासियों को लम्बे समय से हो रही पेयजल आपूर्ति में परेशानी की समस्या से भी निजात मिलेगी। गोदारा ने कहा कि गुणवत्ता परक बिजली आपूर्ति के लिए भी नए जीएसएस स्वीकृत करवाए गए हैं। इन्हें समय पर पूरा करवाते हुए आमजन को राहत दी जायेगी।

उन्होंने युवाओं से शिक्षा के अवसरों का अधिकतम उपयोग करते हुए शिक्षित होने की अपील की और कहा कि राज्य सरकार द्वारा युवाओं को रोजगार देने की दिशा में भी अभिनव प्रयत्न किये जा रहे हैं। गोदारा ने कहा कि दूरदराज के क्षेत्र तक स्वास्थ्य सेवाओं की प्रभावी उपलब्धता बनाने के लिए राज्य सरकार ने बजट में कई ऐतिहासिक पहल की है। समस्त बजट घोषणाओं के समयबद्ध क्रियान्वयन को भी सुनिश्चित किया जायेगा। गोदारा ने गैरसर में भी नवनिर्मित ट्यूबवैल आमजन को समर्पित किया।

इस अवसर पर ग्राम वासियों द्वारा मंत्री का साफा पहनकर अभिनंदन किया गया। गांव के सरपंच ने इस कार्य के प्रति मंत्री का आभार प्रकट किया। इस दौरान गोदारा ने आमजन के परिवाद सुने और समस्याओं के त्वरित निस्तारण की बात कही। इस अवसर जनप्रतिनिधियों के साथ , पीएचईडी के अधिशाषी अभियंता, सहायक अभियंता, कनिष्ठ अभियंता सहित बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

मोबाइल टावरों से चोरी वाले गिरफ्तार

घड़साना, (निसं)। सुनसान जगहों पर लगे मोबाइल टावरों से बैटरी और तांबे के वायर सहित अन्य सामान चोरी करने के आरोप में पुलिस ने शुक्रवार को पांच जनों को गिरफ्तार किया है।

गिरफ्तार आरोपियों ने अलग-अलग गांवों से 9 जगहों पर टावरों से बैटरी और कॉपर वायर चोरी करना कबूल किया है। थाना प्रभारी कलावती चौधरी ने बताया कि क्षेत्रपाल सिंह पुत्र शिवलाल जाति जाट निवासी भरतपुर, हाल नैक्सजेज कंपनी के स्टेट मैनेजर ने एक अगस्त को पुलिस थाना में हाजिर होकर रिपोर्ट दर्ज करवाई थी।

मैनेजर ने बताया कि बीएसएनएल दूर संचार विभाग के अलग-अलग गांवों में लगे मोबाइल टावरों से अज्ञात चोरों ने बैटरी, कापर वायर और अन्य सामान चोरी कर लिया। पुलिस ने अज्ञात चोरों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच एएसआई सज्जन सिंह मीणा को सौंपी थी। चोरों को पकड़ने के लिए पुलिस ने मुखबिरों और तकनीकी मदद से सुरेश कुमार पुत्र हेतराम जाति बिश्नोई निवासी 3 एमएलके सी जालवाली, दिनेश कुमार जाति जाट निवासी 4 एनएम, भीमसेन पुत्र पूर्णाराम जाति मेघवाल निवासी तीन एमएलके डी, विकास पुत्र राजाराम जाति नाई, निवासी फकीरवाली 32 आरबी, पुलिस थाना घमूड़वाली और रोहिताश निवासी गुंसाईणा, पुलिस थाना महाजन जिला बीकानेर सहित पांचों को चोरी के आरोप में गिरफ्तार किया है।

सार-समाचार

ध्यान दिवस के रूप में मनाया पर्युषण

पर्युषण महापर्व के अंतिम दिन शासन गौरव साध्वी राजीमती ने ध्यान दिवस पर ज्ञान की महत्ता बताई।

नोखा, (कासं)। आत्मशुद्धि के लिए ध्यान करना अत्यंत आवश्यक है। यह विचार शनिवार को नोखा के महावीर चौक स्थित तेरापंथ भवन में पर्युषण महापर्व के अंतिम दिन को ध्यान दिवस के अवसर पर, ज्ञान की महत्ता बताते हुए शासन गौरव साध्वी राजीमती ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि किसी भी आध्यात्मिक साधना के लिए ध्यान करना आवश्यक है। ध्यान के माध्यम से ही एकाग्रता, लीनता, और गहराई में जाकर अंतिम लक्ष्य मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। साध्वी प्रभात प्रभा ने सामूहिक रूप से प्रेक्षाध्यान, कायोत्सर्ग और महाप्राण ध्वनि का अभ्यास करवाया। सभा के उपाध्यक्ष लाभचंद छाजेड़ ने जैन भागवती दीक्षा के तीन दिवसीय कार्यक्रम तथा सभा के स्वर्ण जयंती समारोह, जो 14,15,16 सितम्बर को आयोजित होगा की विस्तृत जानकारी दी। उत्तराध्ययन सूत्र की 15 वीं प्रतियोगिता की जानकारी इंदरचंद बैद ने साझा करते हुए सम्मिलित होने की प्रेरणा दी। सभा अध्यक्ष शुभकरण चौरडिया और मंत्री मनोज घीया ने संवत्सरी महापर्व पर उपवास, पोषध और तपस्या का आव्हान किया। युवकों, कन्याओं, और भाई-बहनों में तपस्या की विशेष लहर देखी जा रही है और तप के गीतों की गूंज नोखा के जोरावरपूरा में सुनाई दे रही है। रविवार को संवत्सरी महापर्व बड़े उत्साह के साथ त्याग, तप और पोषध के माध्यम से मनाया जायेगा।

अनूपगढ़ विधायक ने की जनसुनवाई

एक एमडी गांव में ग्रामीणों ने विधायक को वाटर वर्क्स की डिग्गी निर्माण कार्य के अधूरे कार्य को दिखाया।

अनूपगढ़, (कासं)। विधायक शिमला नायक ने घड़साना पंचायत समिति के गांव एक एमडी में जनसुनवाई की। इस दौरान ग्रामीणों ने उन्हें विभिन्न समस्याएं बताई। ग्रामीणों ने बताया कि गांव में वाटर वर्क्स की डिग्गी का निर्माण कार्य शुरू करवाया गया था, लेकिन पिछले दिनों निर्माण कार्य को बीच में ही बंद कर दिया गया है। वाटर वर्क्स में पूर्व में बनी डिग्गियां क्षतिग्रस्त होने के कारण इन डिग्गियों में गंदा पानी स्टोरेज हो रहा है और वही पानी घरों में पीने के लिए छोड़ा जा रहा है। ग्रामीणों ने विधायक को बताया कि जलदाय विभाग के द्वारा गांव के वाटर वर्क्स में डिग्गी का निर्माण कार्य करवाया जा रहा था मगर इस कार्य को बीच में ही बंद कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि डिग्गी के लिए गड्ढा खोदा गया है। वह घरों के काफी नजदीक है। गड्ढा खुदा होने के कारण बरसात के दिनों में आसपास बने घरों की दीवारों को भी खतरा उत्पन्न हो जाता है। ग्रामीणों ने विधायक से डिग्गी का निर्माण कार्य पूरा करवाने और गांव में पेयजल की व्यवस्था सुचारू रूप से करवाने की मांग की है। विधायक शिमला नायक ने बताया कि ग्रामीणों की समस्या सुनने के बाद मौके पर ही जलदाय विभाग के एसई देवपाल गिरी से फोन पर बात की गई। उन्होंने बताया कि एसई देवपाल गिरी और ठेकेदार को निर्देश दिए गए हैं कि वाटर वर्क्स परिसर में निर्माणाधीन डिग्गी का निर्माण कार्य शीघ्र पूरा किया जाए।

अस्थि रोग चिकित्सकों की कांफ्रेंस

बीकानेर, (कासं)। बीकानेर आर्थोपेडिक सर्जन सोसायटी के तत्वावधान में रिद्धि-सिद्धि रिसोर्ट में दो दिवसीय मिडटर्न रोजाकोन 2024 का आगाज किया गया। कार्यक्रम की थीम 'जोड़ों के आंतरिक फैक्चर्स' का इलाज रखी गई है। कांफ्रेंस का शुभारंभ सरदार पटेल मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ गुंजन सोनी ने किया। कार्यक्रम में डॉ अनिता पारीक, रोजा के अध्यक्ष डॉ जसवंत सिंह, नवनिर्वाचित अध्यक्ष डॉ रमेश विजय, सचिव डॉ विक्रम शर्मा, डॉ आर. पी. लोहिया मनचस्श थे। कार्यक्रम में आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ बी. एल. खजोटिया ने स्वागत करते हुऐ कांफ्रेंस के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि 27 वर्ष बाद हो रही यह कांफ्रेंस मील का पत्थर साबित होगी। प्राचार्य डॉ गुंजन सोनी ने कहा किट इस कांफेंस के माध्यम से बीकानेर मेडिकल कॉलेज के ऑर्थोपेडिक्स छात्र नई तकनीकों और अनुभवों का लाभ उठा सकेंगे। शनिवार को 7 सत्रों में भुजाओं, कोहनियों, कलाई, हाथों, कुल्हें, घुटनों, टखनों ,पांवों, बच्चों के जोड़ों के इलाज पर नई तकनीकों पर पत्रवाचन, विचार विमर्श एवं अनुभव साझा किए गए। रविवार को पीजी क्विज, पीजी पेपर एवं पोस्टर प्रस्तुतीकरण होंगे। दोपहर में हड्डियों के इलाज पर कार्यशाला होगी।

फर्जी फर्म बनाकर 19 करोड़ की जी.एस.टी. चोरी

श्रीगंगानगर, (कासं)। आधार और पेन कार्ड को चोरी कर इस पर एक नकली फर्म बनाकर करीब 19 करोड़ रूपए की जीएसटी चोरी का मामला सामने आया है। इस तरह की गड़बड़ी का यह संभवतया बीकानेर संभाग का पहला ही मामला है।

पीड़ित युवक की ओर से हिन्दुमलकोट थाने में परिवाद देकर घटनाक्रम बताया गया है। पुलिस ने पीड़ित की ओर से प्रस्तुत किए गए दस्तावेजों व साक्ष्यों के आधार पर अज्ञात फर्म और जीएसटी नंबर पर धोखाधड़ी का मुकदमा दर्ज किया है। कोनी चौकी के प्रभारी एएसआई गुरदेवसिंह को मामले की जांच सौंपी गई है।

सीए धीरज लीला ने बताया कि जीएसटी नंबर जारी करने में पहले एक सप्ताह का समय लगता था। विभाग आवेदक के दस्तावेजों का ऑफिस से ही जांच कर एक सप्ताह में जीएसटी नंबर जारी कर देता था। लेकिन इस तरह की गड़बड़ी रोकने को अब विभाग ने फर्म के एड्रेस पर जाकर भौतिक सत्यापन शुरू कर दिया है। आवेदक से

- फर्म पीडित के आधार कार्ड और पेन कार्ड चोरी कर रजिस्टर्ड करवाई गई
- जबकि पीड़ित को इस बारे में कुछ भी पता नहीं है

मौके पर सवाल-जवाब और फोटो व दस्तावेजों का मिलान भी किया जा रहा है। इसलिए जीएसटी नंबर जारी करने को अब 30 दिन का समय तय किया है। पीड़ित युवक ने परिवाद में बताया कि अज्ञात आरोपी ने नई वेस्ट दिल्ली के चंद्र विहार, टेंपकॉन निलोथी एक्सटेंशन रोड, प्रिंसिपल पैलेस ऑफ बिजनेस हाउस 91 ए, बिल्डिंग नंबर 27/20/02 के नाम से फर्म का रजिस्ट्रेशन करवाया। यह फर्म 8 अगस्त 2023 को शुरू होकर 31 मार्च 2024 तक वर्किंग में रही। इसके बाद यह जीएसटी रजिस्ट्रेशन कैंसिल करवा दिया गया। यह फर्म पीडित के आधार कार्ड और पेन कार्ड पर रजिस्टर्ड करवाई गई। जबकि पीड़ित को इस बारे में कुछ भी मालूम नहीं है। सीए के पास रिटर्न भरने गया तब इस फर्जी फर्म और ट्रांजेक्शन का चला पता। पीड़ित युवक जगदीपसिंह ने पुलिस को दिए परिवाद में बताया कि जब वह अगस्त माह में अपने सीए के पास रिटर्न दाखिल करवाने गया तो पीड़ित के पेन कार्ड पर सालभर के ट्रांजेक्शन निकाले गए। ट्रांजेक्शन हिस्ट्री सामने आई तो सीए और पीड़ित हैरान रह गए। पीड़ित के दस्तावेजों से बनाई गई फर्म और फिर उस पर 8 माह में ही किए गए 19 से 20 करोड़ के जीएसटी ट्रांजेक्शन का पता चला।

इसके बाद जीएसटी विभाग के अधिकारियों से संपर्क किया तो मुकदमा दर्ज कराने को कहा गया। इस जीएसटी नंबर से बनाई गई फर्म का धातु का कारोबार किया गया है। डिटेल निकालने पर सामने आया कि कॉपर बेस्ट एंड स्वैप एल्युमिनियम बेस्ट एंड स्केप व कॉपर वायर आदि का व्यापार किया गया है।

जोशी विप्र सेना के तहसील अध्यक्ष मनोनीत

नोखा, (कासं)। विप्र सेना बीकानेर देहात की कार्यकारिणी का विस्तार करते हुए संभाग प्रभारी पवन सारस्वत ने संभाग अध्यक्ष हरिगोपाल उपाध्याय, प्रदेश उपाध्यक्ष धर्मेन्द्र सारस्वत, प्रदेश महामंत्री रविन्द्र जाजड़ा की अनुशंसा पर बीकानेर देहात की कार्यकारिणी का विस्तार किया। जिसमें नोखा के हेमन्त जोशी को नोखा तहसील अध्यक्ष नियुक्त किया।

लूणकरनसर से शंकरलाल उपाध्याय, कोलायत से कन्हैयालाल सांखी, खाजूवाला से गणेश राजपुरोहित, श्रीडूंगरगढ़ से गोपाल व्यास, अनूपगढ़ से विनोद पारीक को अध्यक्ष पद पर मनोनीत किया है। जोशी की विप्र समाज में मजबूत पकड़ है और वे समाज के जनपरोपकार से जुड़े कार्यों में हमेशा अग्रणी रहते हैं। इसके साथ राजनीतिक क्षेत्र से भी जुड़े हैं। जोशी के अध्यक्ष बनने पर पुखराज पंचारिया, कैलाश कठातला, पुखराज सांखी, जितेश पंचारिया, एडवोकेट राजेश पंचारिया, पार्षद प्रमोद पंचारिया, पंकज पंचारिया सहित विप्र सहित अन्य समाज के कई मौजिज लोगों ने बधाई दी है।

हेरोइन व हथियार सहित तीन युवक गिरफ्तार

हनुमानगढ़, (कासं)। जंक्शन थाना पुलिस ने 6.76 ग्राम हेरोइन (चिट्टा) बरामद कर एक युवक को गिरफ्तार किया है। यह कार्रवाई को बाइपास रोड स्थित राजकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज के पास की गई। वहीं रावतसर थाना पुलिस ने धारदार हथियार सहित दो युवकों को गिरफ्तार किया है।

जंक्शन पुलिस थाना प्रभारी सतपाल बिश्नोई ने बताया कि थाना के एसआई गजेन्द्र शर्मा के नेतृत्व में गठित टीम गश्त कर रही थी। गश्त के दौरान पुलिस टीम अबोहर-श्रीगंगानगर बाइपास स्थित राजकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज के पास पहुंची तो वहां घूम रहे एक युवक की गतिविधियां संदिग्ध पाई गई। शक के आधार पर पुलिस ने युवक की तलाशी ली तो उसके कब्जे से 6.76 ग्राम हेरोइन बरामद हुई। पुलिस ने मौके से अरविन्द्र सिंह (25) पुत्र राजप्रीत सिंह जटसिख निवासी वार्ड दो, चक ज्वालासिंहवाला पीएस टाउन के रूप में हुई। पुलिस ने एनडीपीएस एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज कर जांच साइबर पुलिस थाना के एसआई सुरेन्द्र मीणा को सौंपी है।

हनुमानगढ़ जिले की रावतसर थाना पुलिस ने धारदार हथियार सहित दो युवकों को गिरफ्तार किया है। इस संबंध में आर्म्स एक्ट के तहत अलग-अलग मुकदमे दर्ज किए गए हैं। रावतसर पुलिस थाना प्रभारी वेदपाल शिवराण ने बताया कि थाना के हेड कॉन्स्टेबल महेन्द्र सिंह के नेतृत्व में गठित टीम गश्त कर रही थी। गश्त के दौरान टीम ने रावतसर के वार्ड 17 में धारदार कापा लेकर घूम रहे अजीत सिंह (21) पुत्र ओमप्रकाश ओड निवासी वार्ड 17, रावतसर को गिरफ्तार कर कापा बरामद किया।

दूसरी कार्रवाई में हेड कॉन्स्टेबल महेन्द्र सिंह ने खेतरपाल मन्दिर के नजदीक कार्रवाई करते हुए अजय (26) पुत्र रोशनलाल बावरी निवासी वार्ड 24, रावतसर को धारदार कापा सहित गिरफ्तार किया।

- जंक्शन थाना पुलिस ने 6.76 ग्राम हेरोइन सहित एक युवक को दबोचा

सरकारी स्कूल में तालाबंदी और धरना खत्म

सूरतगढ़, (कासं)। गांव मालेर के राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल में तालाबंदी और ग्रामीणों का स्कूल गेट के समक्ष धरना के बाद शनिवार को तीसरे दिन दोपहर के समय ग्रामीणों के बीकानेर पैदल कूच कर दिए जाने के बाद शिक्षा विभाग के अधिकारियों द्वारा कार्यवाहक प्रिंसिपल भानुप्रिया गहलोत को गांव के स्कूल में स्थायी प्रिंसिपल लगाने के निर्देश देने और ग्रामीणों द्वारा चाही गई जांच में समुचित कार्रवाई करने का भरोसा दिलाने के बाद धरना समाप्त कर दिया गया।

ग्रामीणों द्वारा अपनी पूर्व घोषणा के अनुसार पैदल कूच शुरू करने के साथ ही तहसीलदार हाबूलाल मीणा भी कई किलोमीटर तक उनसे समझाइश करते रहे। मगर ग्रामीणों का पैदल कूच जारी रहा। इस बीच सूरतगढ़ के पूर्व विधायक राजेंद्र भादू और जनप्रतिनिधि मौके पर पहुंच गए तथा स्थानीय शिक्षा विभाग के अधिकारियों को खरी खोटी सुनाई।

इसके बाद तहसीलदार हाबूलाल मीणा ने पुलिस प्रशासन के आलाधिकारियों को अवगत करवाया। जिस पर अतिरिक्त जिला कलेक्टर कन्हैयालाल सोनगरा और डीएसपी प्रतीक मील सहित श्रीगंगानगर के जिला शिक्षा अधिकारी पन्नालाल कड़ेल और राजियासर पुलिस का जाप्ता मौके के लिए रवाना हुए।

बैडमिंटन-कुश्ती प्रतियोगिता

बीकानेर, (कासं)। 68वीं जिला स्तरीय विद्यालयी बैडमिंटन और कुश्ती प्रतियोगिता का उद्घाटन रविवार प्रात: 10:30 बजे जवाहर नगर स्थित एलएम स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स (लोडा मोडा बगीची) में होगा।

राजकीय मोहता मूलचंद उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्राचार्य राजेश गोस्वामी ने बताया कि उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि बीकानेर (पश्चिम) विधायक जेठानंद व्यास होंगे। बैडमिंटन प्रतियोगिता में अंडर-17 और 19 आयु वर्ग की छात्र-छात्राएं तथा कुश्ती में अंडर-14, 17 और 19 वर्ष आयु वर्ग की छात्र-छात्राएं भाग लेंगी। बैडमिंटन के मुकाबले एलएम स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में होंगे।

धूमधाम से मनाया गया भगवान गणेश जन्मोत्सव

हनुमानगढ़, (कासं)। जंक्शन स्थित रिद्धि-सिद्धि विनायक मंदिर में शनिवार को गणेश जन्मोत्सव के उपलक्ष में 11 दिवसीय गणेश महोत्सव की शुरूआत की गई।

गणेश मंदिर के मुख्य पुजारी पंडित चंदूराम शर्मा ने बताया कि अखंड रामचरित्र मानस व भजन संध्या का आयोजन किया गया। रामचरितमानस पाठ का भोग शनिवार को सुबह 10.15 बजे डाला गया। दोपहर 12 बजे सर्वप्रथम गणेश पूजन, 151 दीपकों से महाआरती एवं सवामणि के महाप्रसाद का भोग लगाया गया। एक बजे भगवान गणेश की मूर्ति स्थापना की गई।

उन्होंने बताया कि 17 सितम्बर तक प्रतिदिन प्रात: गणेश पूजन व शाम को 5 से 7 बजे तक महिला मंडली की ओर से बाबा का गुणगान किया जायेगा। प्रतिदिन शाम 7 बजे महाआरती भी होगी। भगवान गणेश महोत्सव के सफल आयोजन में आमजन व श्रद्धालु सहयोग कर रहे हैं।

हनुमानगढ़ में श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय में गणेश चतुर्थी के मौके पर शनिवार को भगवान गणपति की मूर्ति स्थापना की गई। सुबह 11.15 बजे पंडित रतनलाल शास्त्री की ओर से विधिवत पूजा-अर्चना करवा कर मूर्ति स्थापित करवाई गई। इस मौके पर मुख्य यजमान गुरु गोबिंद सिंह चैरिटेबल ट्रस्ट अध्यक्ष बाबूलाल जुनेजा व एसकेडी के मैनेजिंग डायरेक्टर दिनेश जुनेजा सपत्नीक थे। अध्यक्ष बाबूलाल जुनेजा ने बताया कि गणेश महोत्सव की शुरुआत आजादी आंदोलन के समय लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की ओर से प्रथम बार की गई थी। उसके बाद से ही महाराष्ट्र सहित पूरे देश भर में भगवान गणेश के प्रति आस्था व उत्साह बढ़ता गया।

कलेक्टर ने बदलते परिवेश में ऊंटों के संरक्षण के लिए किए जा रहे प्रयासों के बारे में जाना

बीकानेर, (कासं)। जिला कलेक्टर नम्रता वृष्णि ने शनिवार को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा संचालित राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र का अवलोकन किया। केन्द्र के निदेशक डॉ. आर. के. सावल ने उन्हें संस्थान के अनुसंधान कार्यों एवं उपलब्धियों के बारे में बताया।

जिला कलेक्टर ने बदलते परिवेश में ऊंटों की संख्या व उपादेयता पर चर्चा की और इनके संरक्षण के लिए किए जा रहे प्रयासों के बारे में जाना। उन्होंने कहा कि यह संस्थान अपना विशेष महत्व रखता है। इसने बीकानेर को नई पहचान दिलाई है। देश और दुनियां के पर्यटक इसका अवलोकन करते हैं। इसके मद्देनजर इसे और अधिक टूरिज्म फ्रेंडली बनाया जाए।

निदेशक डॉ. सावल ने बताया कि वैज्ञानिक शोध में ऊंटनी का दूध मधुमेह, टीबी, ऑटिज्म आदि रोगों के प्रबंधन में लाभदायक पाया गया है। साथ ही अन्य रोगों के निदान के मद्देनजर अनुसंधान किया जा रहा है।

बीकानेर कलेक्टर नम्रता वृष्णि ने एनआरसीसी का दौरा कर वहां के कार्यों को जाना।

उन्होंने बताया कि केन्द्र के वैज्ञानिकों ने ऊंटनी के दूध से विभिन्न मूल्य संवर्धित उत्पाद तैयार किए हैं। बाजार में इनकी मांग लगातार बढ़ रही है।

उन्होंने कहा कि केन्द्र द्वारा उष्ट्र पर्यटन विकास गतिविधियों को बढ़ावा दिया जा रहा है, जिससे अधिक से अधिक ऊंट पालक प्रेरित हों और इस

- ऊंटनी के दूध से बनी कुल्फी व लस्सी का स्वाद चखा व डेयरी इकाई में कैमल मिल्किंग की

व्यवसाय के रूप में अपना रोजगार प्राप्त कर सकें। जिला कलेक्टर ने ऊंटनी के दूध की औषधीय उपयोगिता को देखते हुए कहा कि केन्द्र इन गतिविधियों को सतत रूप से जारी रखें, जिससे ऊंट प्रजाति के संरक्षण व विकास के साथ उष्ट्र पालकों के सामाजिक और आर्थिक स्तर सकारात्मक सुधार किया जा सके।

कलेक्टर ने उष्ट्र संग्रहालय, उष्ट्र डेयरी, डेयरी प्रौद्योगिकी एवं प्रसंस्करण इकाई, कैमल मिल्क पार्लर, कैमल स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स आदि का अवलोकन किया। उष्ट्र पर्यटन गतिविधियां एनआरसीसी में आयोजित होने व उष्ट्र उत्पादों के निर्माण के संबंध में जानकारी दी। उन्होंने डेयरी इकाई में कैमल मिल्किंग की तथा ऊंटनी के दूध से बनी कुल्फी व लस्सी का स्वाद चखा।

इस अवसर पर केन्द्र के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. राकेश रंजन, वैज्ञानिक डॉ. शांतनु रक्षित व पशु चिकित्सक डॉ. काशीनाथ आदि मौजूद थे।

बीकानेर बॉयज स्कूल में जेम्स थॉमस के जन्म दिवस के मौके पर स्मरण सभा और एलुमिनी मीट का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि जिला पुलिस अधीक्षक बीकानेर तेजस्विनी गौतम और मेजर जेम्स थॉमस के परिजनों ने शहीद स्मारक का लोकार्पण किया। इस अवसर पर विद्यालय में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन से हुई।

विद्यालय मैनेजर फादर साजू ने साफा पहनाकर अतिथियों का स्वागत किया। विद्यालय छात्रों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी।

पर्युषण महापर्व का सातवां दिवस ध्यान दिवस के रूप में मनाया

बीकानेर, (कासं)। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा गंगाशहर के तत्वावधान में तेरापंथ भवन में साध्वी चरितार्थ प्रभा एवं साध्वी प्रांजल प्रभा के सान्निध्य में शनिवार को पर्युषण महापर्व का सातवां दिवस ध्यान दिवस के रूप में मनाया गया।

साध्वी चरितार्थ प्रभा ने कहा कि दुनिया में कुछ लोग जागते हुए भी सोते है और कुछ लोग सोते हुए भी जागते है। कुमार वर्धमान की भीतर की चेतना जागृत थी भोग और एश्वर्य उनके पीछे पीछे चल रहे थे। लेकिन भगवान की आत्मा सांसारिक सुखों को छोड़कर साधु जीवन जीने को तड़प रही थी। उनका संकल्प था की जब तक माता पिता की जीवत अवस्था में है तब तक मैं दीक्षा नहीं लुंगा। वो किसी की आत्मा को दुख नहीं पहुंचाना चाहते थे।

भगवान महावीर ने भाई और चाचा सुपार्श्व से दीक्षा की अनुमति मांगी। भाई ने कहां कि अभी तो माता-पिता का देहांत हुआ है। दो वर्ष घर में रहकर ही साधना करनी चाहिए। इन दो वर्षों में सत्य अहिंसा और ब्रह्मचर्य की साधना की। भगवान महावीर की साधना काल के प्रथम दिन से ही परिषह का सामना करना पड़ना शुरू हो गया। ध्यान करने से शरीर की सभी कामनाएं शान्त हो जाती है ध्यान चिकित्सा का माध्यम है तो कर्म निर्जरा का भी महत्वपूर्ण साधन है। भगवान महावीर के ने खड़े खड़े पद्मासन मुद्रा में ध्यान किया। भगवान महावीर के परिषह इतने आये जितने 23 तीर्थंकरों के मिलकर भी नहीं आये। छोटे से जीवन काल में भगवान महावीर ने अनेक कष्ट सहे।

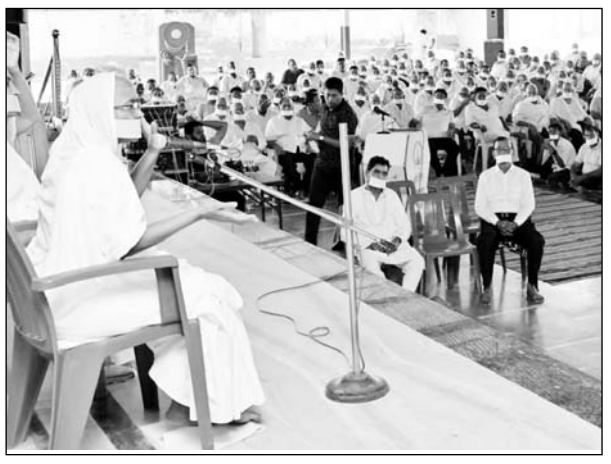

पर्युषण महापर्व पर साध्वी चरितार्थ प्रभा ने तेरापंथ भवन में कार्यक्रम को संबोधित किया।

भारत में खेलने के पिछले अनुभव का हमें फायदा मिलेगा। नोएडा और लखनऊ हमारे घरेलू मैदान रहे हैं। हमने यहां कई मैच खेले हैं और अभ्यास शिविर लगाए हैं। हम भारत के मौसम और पिच की स्थिति से भी परिचित हैं। **-रहमत शाह**

अफगानिस्तान के बल्लेबाज, न्यूजीलैंड के खिलाफ मैच के बारे में कहा।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

एंड्रयू फ्लिंटॉफ

इंग्लैंड के दिग्गज ऑलराउंडर एंड्रयू फ्लिंटॉफ इंग्लैंड लायंस टीम के हेड कोच बनाए गए हैं। लायंस टीम इंग्लैंड की ए टीम को कहते हैं। फ्लिंटॉफ ने इंग्लैंड के लिए 79 टेस्ट खेले हैं, वह पिछले साल ही सीनियर टीम के असिस्टेंट कोच बने थे। वह श्रीलंका के खिलाफ सीरीज में भी टीम के असिस्टेंट कोच हैं। फ्लिंटॉफ अपने नए रोल की शुरुआत अक्टूबर में साउथ अफ्रीका दौरे से करेंगे। ए टीम फिर अगले साल जनवरी में ऑस्ट्रेलिया-ए के खिलाफ टेस्ट सीरीज खेलेगी। जिसकी मदद से 2025-26 ऐशेज सीरीज के लिए नए प्लेयर्स भी तैयार होंगे।

क्या आप जानते हैं ?... टेस्ट क्रिकेट इतिहास का पहला टेस्ट इंग्लैंड व ऑस्ट्रेलिया के मध्य 1877 में मेलबोर्न में खेला गया था। इसे ऑस्ट्रेलिया ने 45 रन से जीता था।

घरेलू क्रिकेट में डीआरएस से युवा बल्लेबाजों को फायदा मिलेगा : अश्विन

नयी दिल्ली, 7 सितम्बर। सीनियर स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने मौजूदा दलीप ट्रॉफी में निर्णय समीक्षा प्रणाली (डीआरएस) को लागू करने के भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के फैसले का स्वागत करते हुए कहा कि इससे युवा बल्लेबाजों

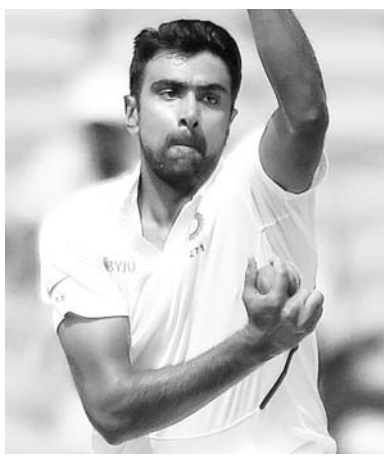

को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेलने से पहले आवश्यक तकनीकी बदलाव करने में मदद मिलेगी। अश्विन शुक्रवार की शाम को अनंतपुर में खेले जा रहे दलीप ट्रॉफी मैच के दौरान भारत डी के बल्लेबाज रिकी भुई को पगबाधा आउट दिए जाने के बाद चली चर्चा पर प्रतिक्रिया व्यक्त कर रहे थे।मैदानी अंपायर ने तब बल्लेबाज को आउट नहीं दिया था लेकिन भारत सी ने डीआरएस का सहारा लिया जिसके बाद भुई को पवेलियन लौटना पड़ा। अश्विन ने एक्स पर लिखा"घरेलू क्रिकेट के लिए डीआरएस सिर्फ सही निर्णय लेने तक सीमित नहीं है। कल शाम मानव सुथार की गेंद पर रिकी भुवी (भुई) का आउट होना एक बल्लेबाज का उत्कृष्ट मामला है जो प्रथम श्रेणी क्रिकेट में इस तकनीक के नहीं होने पर आउट होने से बच जाता।" उन्होंने कहा, "डीआरएस से पहले आगे बढ़कर खेलना कोई दोषपूर्ण तकनीक नहीं थी लेकिन अब यह है। पुराने जमाने में बल्लेबाजों को सिर्फ इसलिए नॉट आउट दिया जाता था क्योंकि वे फ्रंटफुट पर खेलने में कामयाब रहते थे।"

मार्क वुड चोट के कारण पाकिस्तान और न्यूजीलैंड श्रृंखला से बाहर

नई दिल्ली, 7 सितम्बर। इंग्लैंड के तेज गेंदबाज मार्क वुड दाहिनी कोहनी की चोट के कारण इस साल होने वाले बाकी मैचों में नहीं खेल पाएंगे। इस तरह से वह अक्टूबर में पाकिस्तान और दिसंबर में न्यूजीलैंड के खिलाफ होने वाली टेस्ट श्रृंखला से बाहर हो गए हैं। इंग्लैंड के सबसे तेज गेंदबाज वुड

ने जुलाई में वेस्टइंडीज के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला के दौरान अपनी कोहनी में दर्द महसूस किया था जिससे उन्हें गेंदबाजी करने में परेशानी हो रही थी। इस दर्द के बावजूद वह श्रीलंका के खिलाफ मैनचेस्टर में पहले टेस्ट मैच में खेले थे। इस मैच में उनकी दाहिनी जांघ में भी चोट लग गई थी और इस कारण वह श्रीलंका के खिलाफ दूसरे और तीसरे टेस्ट मैच में नहीं खेल पाए थे। इंग्लैंड एवं वेल्स क्रिकेट बोर्ड ने कहा कि वुड का लक्ष्य अगले साल के शुरू तक पूरी फिटनेस हासिल करना है। तब इंग्लैंड की टीम को सीमित ओवरों की श्रृंखला खेलने के लिए भारत का दौरा करना है जबकि फरवरी में पाकिस्तान में चैंपियंस ट्राफी खेली जाएगी।

दूसरा टी-20 जीतकर ऑस्ट्रेलिया ने सीरीज पर कब्जा किया

एडिनबरा, 7 सितम्बर। ऑस्ट्रेलिया और स्कॉटलैंड के बीच खेली जा रही तीन मैचों की टी-20 सीरीज के दूसरे मुकाबले में ऑस्ट्रेलिया ने स्कॉटलैंड को 70 रन से हरा दिया। इसी के साथ ऑस्ट्रेलिया ने सीरीज पर भी कब्जा कर लिया है। एडिनबरा में खेला गया मुकाबला बारिश की वजह से देरी से शुरू हुआ। स्कॉटलैंड के कप्तान रिची बैरिंगटन ने टॉस जीतकर गेंदबाजी का फैसला लिया। ऑस्ट्रेलिया ने शानदार बल्लेबाजी करते हुए 4 विकेट पर 196 रन बनाए। जोश इंग्लिश ने अपने करियर का दूसरा शतक लगाया। उन्होंने 103 रन की पारी खेली। 197 रन का पीछा करने उतरी स्कॉटलैंड टीम की शुरुआत खराब रही। 20 रन के अंदर दोनों ओपनर्स पवेलियन लौट गए। टॉप ऑर्डर बैट्समैन ब्रेंडन मैक्मुलेन 59 और जॉर्ज मुन्से 19 रन के अलावा कोई भी बल्लेबाज दहाई का आंकड़ा भी नहीं छू पाया। पूरी टीम 126 रन पर ऑलआउट हो गई। ऑस्ट्रेलिया की तरफ से मार्कस स्टोइनिस ने 4 विकेट लिए। जोश ने ऑस्ट्रेलिया के लिए टी-20 में सबसे तेज सेंचुरी लगाई। उन्होंने 43 बॉल पर अपना शतक पूरा किया। 103 रन की पारी में उन्होंने 7 चौके और 7 सिक्स लगाए। ऑस्ट्रेलिया के पावर हीटर ट्रैविस हेड को ब्रैड क्यूरी ने शून्य के स्कोर पर बोल्ड कर दिया। लड़खड़ाती पारी को हेड और ग्रीन ने संभाला। दोनों ने मिलकर 52 बॉल पर 92 रन जोड़े। ग्रीन ने 36 रन की पारी खेली। ग्रीन के आउट होने के बाद मार्कस स्टोइनिस बल्लेबाजी करने आए।

शरद कुमार ने पैरा एथलेटिक्स में भरी ऊंची उड़ान

पुरुषों की ऊंची कूद टी-63 में रजत पदक हासिल किया

नई दिल्ली, 7 सितंबर। भारत के पैरा-एथलीट शरद कुमार ने पेरिस पैरालिंपिक 2024 में पुरुषों की ऊंची कूद टी63 में रजत पदक हासिल कर अपनी उपलब्धि में एक और इजाफा किया। एक मार्च 1992 को बिहार के मोतीपुर में जन्मे शरद को दो साल की उम्र में ही पोलियो हो गया था। उनका बचपन स्वास्थ्य संबंधी जटिलताओं से भरा हुआ था, जिससे उन्हें ठीक करने के लिए अस्पतालों के दौरे के साथ-साथ आध्यात्मिक अनुष्ठानों की आवश्यकता पड़ी। चार साल की उम्र में, शरद को एक बोर्डिंग स्कूल में भेज दिया गया जहाँ उन्हें खेलकूद से बाहर रखा गया। ऐसी स्थिति ने उसे बहुत निराश किया। इन सीमाओं से मुक्त होने की इच्छा ने खेल, विशेषकर ऊंची कूद में उनकी रुचि जगाई। अपने बड़े भाई, जो एक स्कूल रिकॉर्ड धारक था, से प्रेरित होकर, शरद ने ऊंची कूद पर अपना ध्यान केंद्रित किया और फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

शरद कुमार के एथलेटिक करियर की उड़ान तब शुरू हुई जब उन्होंने 2009 में छठी जूनियर नेशनल पैरा-एथलेटिक्स चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीता। इस शुरुआती जीत के कारण 2010 में चीन के गुआंगज़ौ में एशियाई पैरा खेलों में उनका अंतरराष्ट्रीय पदार्पण हुआ। इन वर्षों में, शरद ने व्यक्तिगत और शारीरिक दोनों बाधाओं

को पार करते हुए अपने कौशल को निखारा। उनकी कुछ प्रमुख उपलब्धियों में पुरुषों की ऊंची कूद टी42 में टोक्यो पैरालिंपिक 2020 में कांस्य पदक, 2019 और 2017 में विश्व पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप में रजत पदक और 2018 और 2014 में एशियाई पैरा खेलों में स्वर्ण पदक शामिल हैं। इसके अलावा, उन्होंने मलेशिया ओपन पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक हासिल किया, जिससे भारत के प्रमुख पैरा-एथलीटों में से एक के रूप में उनकी स्थिति मजबूत हुई। पैरा-एथलेटिक्स में शरद कुमार की सफलता को केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं के जरिये काफी बढ़ावा मिला है। उनके प्रशिक्षण, प्रतियोगिताओं और विशेषज्ञ कोचिंग के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की गई है, जो उनके विकास और प्रदर्शन के लिए आवश्यक है।

शरद कुमार की कहानी सभी बाधाओं के बावजूद जीत की कहानी है। पोलियो के प्रभाव से जूझने से लेकर टोक्यो और पेरिस पैरालिंपिक में पोडियम पर खड़े होने तक, उनकी यात्रा महत्वाकांक्षी एथलीटों के लिए प्रेरणा है। अपने नाम के साथ कई पुरस्कारों के साथ, शरद लगातार बाधाओं को तोड़ रहे हैं और देश को गौरवान्वित कर रहे हैं।

होकाटो ने शॉटपुट स्पर्धा में जीता कांस्य पदक

कश्मीर में आतंकवाद विरोधी अभियान में अपना बांया पैर गंवाया था

पेरिस, 7 सितंबर। भारतीय एथलीट होकाटो सेमा ने पहली बार पैरालिंपिक खेलों में भाग लेते हुए पुरुषों की शॉटपुट एफ57 के फाइनल मुकाबले में अपने व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ थ्रो के साथ कांस्य पदक जीता। नागालैंड के रहने वाले एथलीट होकाटो सेमा ने शुक्रवार देर रात खेले गये गोला फेंक मुकाबले मे 14.65 मीटर के अपने व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ थ्रो के साथ तीसरे स्थान पर रहे और कांस्य पदक अपने नाम किया। इसके साथ पैरालिंपिक में छह स्वर्ण, नौ रजत, 12 कांस्य के साथ भारत के पदकों की संख्या 27 हो गई है। इस स्पर्धा में ईरान के यासिन कोसावनी ने 15.96 मीटर थ्रो के साथ स्वर्ण पदक और वहीं थिएगो पॉलिनो ने 15.06 मीटर के थ्रो के साथ रजत पदक मिला। 24 दिसंबर 1983 को जन्में होकाटो सेमा नागालैंड के किसान परिवार से आते है। वह सेना में थे और वर्ष 2002 में जम्मू कश्मीर के चौकीबल में आंतकवाद विरोधी अभियान में होकाटो सेमा ने भाग लिया। इस दौरान बारूदी सुरंग में विस्फोट उन्हें अपना बायां पैर गंवाया पड़ा। पैर गवांने के बाद उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और कई चुनौतियों के बावजूद उन्होंने 2016 में पैरा एथलीट बनने की ओर रूख किया। सेमा ने एशियाई पैरा खेल 2022 (2023) कांस्य पदक, विश्व चैम्पियनशिप 2024 में चौथा स्थान पर रहे और मोरक्को ग्रैंड प्रिक्स 2022 में रजत पदक जीता।

ओलिंपिक पदक विजेता भारत एशियाई चैम्पियंस ट्रॉफी के लिए तैयार

मोकी (चीन), 7 सितंबर। पेरिस ओलंपिक में कांस्य पदक विजेता भारतीय टीम आठ सितम्बर से यहां शुरु होने वाली हीरो एशियन चैंपियंस ट्रॉफी में अपने खिताब की रक्षा के लिये कमर कस चुकी है। मोकी हॉकी ट्रेनिंग बेस पर शुरू होने वाली प्रतियोगिता में भारत खिताब बचाने के प्रबल दावेदार के रूप में शुरुआत कर रहा है, जबकि मेजबान चीन, जापान, पाकिस्तान, कोरिया और मलेशिया इस टूर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन की उम्मीद के साथ पहुंचे हैं।

पिछले साल, भारत ने घरेलू मैदान पर चैंपियंस ट्राफी का खिताब जीता था और इसके साथ ही वह टूर्नामेंट के इतिहास में चार खिताब जीतने वाली एकमात्र टीम बन गई थी। टीम के कप्तान हरमनप्रीत सिंह इस साल भी महाद्वीपीय चैंपियनशिप में भारत का दबदबा जारी रखना चाहते हैं। उन्होंने कहा, पिछले साल एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी ने हमें एशियाई खेलों में जाने के लिए सही शुरुआत हासिल की और इसके बाद ओलंपिक खेलों में फिर से पोडियम पर पहुंचने की जीत हासिल की। इस बार भी, हम यह टूर्नामेंट जीतकर नए सिरे से ओलंपिक चक्र शुरू करना चाहते हैं।

हालांकि इस टूर्नामेंट में हमारे ओलंपिक टीम के दस सदस्य खेल रहे हैं, हमारे पास कुछ युवा खिलाड़ी हैं जो टीम में अपना प्रभाव डालने की कोशिश कर रहे हैं। हरमनप्रीत ने कहा कि खेल के दृष्टिकोण से, हमारे आक्रमण और पेनल्टी कॉर्नर हमारी ताकत हैं लेकिन हम ऐसा करेंगे विशेष रूप से जापान, मलेशिया और पाकिस्तान जैसी टीमों के खिलाफ एक संरचित रक्षा खेलना चाहते हैं। विश्व रैंकिंग अंकों के मामले में यह हमारे लिए एक महत्वपूर्ण टूर्नामेंट है और हम चुनौती के लिए तैयार हैं।

कानपुर सुपरस्टार्स ने रोमांचक मुकाबले में नोएडा किंग्स को हराया

लखनऊ, 7 सितंबर। समीर रिजवी (46) की उपयोगी पारी के बाद गेंदबाजों के अनुशासित प्रदर्शन के दम पर कानपुर सुपरस्टार्स ने शनिवार को यूपीटी20 लीग के एक रोमांचक मुकाबले में नोएडा किंग्स को मात्र दो रन से हरा दिया। इकाना स्टेडियम पर कानपुर ने पहले बल्लेबाजी करते हुये निर्धारित 20 ओवर में सात विकेट खोकर 119 रन बनाये जिसके जवाब में नोएडा की टीम 117 रन ही बना सकी।

गेंदबाजों की मददगार पिच पर समीर रिजवी की पारी कानपुर के लिये जिताऊ साबित हुयी। उन्होने 38 गेंदों की पारी के दौरान चार चौके और एक छक्का लगाया। समीर के अलावा मोहसिन खान (19 नाबाद) का योगदान अहम साबित हुआ। दूसरी ओर, राहुल राजपाल (13) और हर्षित सेठी (30) ने सधी शुरुआत की मगर कानपुर के गेंदबाजों ने अनुशासित गेंदबाजी का मुजाहिरा किया जिसके चलते नोएडा के बल्लेबाजों को रन बनाने में मुश्किलात का सामना करना पड़ा।

जननिक सिनर और टेलर फ्रिट्ज यूएस ओपन के फाइनल में

वाशिंगटन, 7 सितंबर। शीर्ष वरीयता प्राप्त जननिक सिनर शुक्रवार को यहां यूएस ओपन के फाइनल में पहुंचने वाले पहले इतालवी खिलाड़ी बन गए, जबकि टेलर फ्रिट्ज ने पांच सेटों के कठिन मैच के बाद फाइलज में अपनी जगह बनायी। सिनर ने ब्रिटिश उभरते सितारे जैक ड्रेपर को सीधे सेटों में 7-5, 7-6(3), 6-2 से हराया। मैच के बाद उन्होने कहा, यह एक बहुत ही कठिन मैच था। मैं बस मानसिक रूप से वहां रहने की कोशिश कर रहा था। ड्रेपर को हराना आसान नहीं था। यदि सिनर फाइनल जीतते हैं, तो वह एक ही सीज़न में ऑस्ट्रेलियन ओपन और यूएस ओपन दोनों जीतने वाले इतिहास के चौथे पुरुष खिलाड़ी बन जाएंगे। दूसरे सेमीफाइनल में, 12वीं वरीयता प्राप्त फ्रिट्ज़ ने साथी अमेरिकी फ्रांसिस टियाफो को रोमांचक मुकाबले में 4-6, 7-5, 4-6, 6-4, 6-1 से हराया। इसके लिए उन्होने तीन घंटे और 18 मिनट तक संघर्ष किया और वापसी की। 2006 के बाद से यूएस ओपन पुरुष फ़ाइनल में जगह बनाने वाले पहले स्थानीय खिलाड़ी थे। फ्रिट्ज़ ने आंसुओं के साथ कहा, यही कारण है कि मैं इतनी कड़ी मेहनत करता हूं।" मैं यूएस ओपन के फाइनल में हूं। यह एक सपने के सच होने जैसा है, और मैं इसमें अपना सब कुछ देने जा रहा हूं।

उत्तरी क्षेत्र को हरा कर साई शक्ति बना इंटर जोन चैम्पियन

लखनऊ, 7 सितम्बर। साई शक्ति ने शनिवार को दमदार खेल की बदौलत एकतरफा मुकाबले में उत्तर जोन को 5-1 से हरा कर प्रथम हाकी इण्डिया जूनियर पुरुष इंटर जोन प्रतियोगिता जीत ली है। गोमतीनगर विजयंतखण्ड स्थित पदमश्री मो शाहिद हाकी स्टेडियम में खेले गये फाइनल में जिरामे साई शक्ति की टीम ने 5-1 के अन्तर से विजयश्री प्राप्त की जबकि तीसरे स्थान के मैच में साई बल ने ईस्ट जोन को 6-4 के अन्तर से परास्त कर विजयश्री प्राप्त की। फाइनल मैच में सर्वश्रेष्ठ खिलाडी उत्तर जोन के राहुल राजभर एवं तीसरे स्थान के मैच में साईं बल के राहुल को चुना गया। इस प्रतियोगिता में छः टीमो ने प्रतिभाग किया था।

इंग्लैंड पहली पारी में 325 रन पर ऑलआउट

कप्तान ओली पोप ने 154 रन बनाए, दूसरे सेशन में श्रीलंका ने 142 रन पर 5 विकेट गवाएं

लंदन, 7 सितम्बर। इंग्लैंड और श्रीलंका के बीच टेस्ट सीरीज का तीसरा मुकाबला लंदन के द ओवल मैदान पर खेला जा रहा है। शनिवार को मैच के दूसरे दिन पहले सेशन में इंग्लैंड की टीम पहली पारी में 325 रन पर ऑलआउट हो गई। इंग्लैंड के लिए ओली पोप ने 154 रन की कप्तानी पारी खेली। दूसरा सेशन खत्म होने तक श्रीलंका ने अपनी पहली पारी में 5 विकेट खोकर 142 रन बना लिए। टीम से कप्तान धनंजय डी सिल्वा और कमिंडु मेंडिस नॉटआउट लौटे। पाथुम निसांका ने फिफ्टी लगाई। इंग्लैंड की टीम दूसरे दिन 221/3 के स्कोर से आगे खेलने उतरी, लेकिन हैरी ब्रूक (19), जेमी स्मिथ (16), क्रिस वोक्स (2) और गस एटकिंसन (5) सस्ते में पवेलियन लौट गए। हालांकि, कप्तान ओली पोप ने अपनी शतकीय पारी को आगे बढ़ाते हुए 150 रनों का आंकड़ा पार किया।

पेरिस पैरालिंपिक के मेडलिस्ट भारत लौटे, दिल्ली एयरपोर्ट पर जोरदार स्वागत

नई दिल्ली, 7 सितम्बर। पेरिस पैरालिंपिक 2024 में पहला गोल्ड दिलाने वाली अवनी लेखरा, ब्रॉन्ज मेडलिस्ट मोना अग्रवाल और शूटर मनीष नरवाल समेत कई प्लेयर शनिवार को भारत लौटे। दिल्ली एयरपोर्ट पर उनका जमकर स्वागत किया गया। फैंस ने पैरा एथलीट्स के पहुंचते ही ढोल-नगाड़े बजाए और उन्हें मालाएं पहनाई। 2 बार की गोल्ड मेडलिस्ट शूटर अवनी लेखरा ने एयरपोर्ट पर कहा- पेरिस पैरालिंपिक की जर्नी अच्छी थी, इस बार हमने कई मेडल जीते। भारतीय पैरालिंपियन शूटर मनीष नरवाल ने 10 मीटर एयर पिस्टल में सिल्वर मेडल जीता था। दिल्ली एयरपोर्ट पर फैंस ने उन्हें कंधे पर उठा लिया। मनीष ने कहा- इतना प्यार और सपोर्ट देने के लिए सभी का धन्यवाद। पैरा आर्चर राकेश कुमार ने पेरिस पैरालिंपिक के आर्चरी मिक्स्ड डबल्स में ब्रॉन्ज मेडल जीता है। भारत लौटने पर फैंस ने उन्हें फूल मालाएं पहनाई। राकेश ने कहा- मेरी जीत का क्रेडिट मेरे कोच को जाता है, हम साथ मिलकर कड़ी मेहनत करके और अच्छा परफॉर्म करेंगे। पेरिस पैरालिंपिक के 10 मीटर एयर राइफल में ब्रॉन्ज मेडल जीतने वाली मोना अग्रवाल का एयरपोर्ट पर शानदार स्वागत किया गया।

इंडिया-सी ने इंडिया-डी को 4 विकेट से हराया

इंडिया-ए के खिलाफ इंडिया-बी को 240 रन की बढ़त, ऋषभ पंत की फिफ्टी

नई दिल्ली, 7 सितम्बर। दलीप ट्रॉफी के तीसरे दिन शनिवार को इंडिया-सी ने इंडिया-डी को 4 विकेट से हरा दिया। 233 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी इंडिया-सी की टीम ने आर्यन जुयाल के 47 और कप्तान ऋतुराज गायकवाड के 46 रन के चलते जीत दर्ज की। इंडिया-डी की तरफ से सारांश जैन ने 4 विकेट लिए। एक अन्य मुकाबले में इंडिया-बी की टीम ने दूसरी पारी में तीसरे दिन के अंत तक 6 विकेट के नुकसान पर 150 रन बना लिए हैं। इसके साथ ही इंडिया-बी की टीम की कुल बढ़त 240 रन की हो गई है। इंडिया-बी की तरफ से ऋषभ पंत ने 61 रन की पारी खेली। जबकि इंडिया-ए के लिए खलील अहमद और आकाश दीप ने 2-2 विकेट हासिल किए। बता दें कि, इंडिया बी के टॉप क्रम के बल्लेबाज फ्लॉप साबित हुए। यशस्वी जायसवाल इस पारी में सिर्फ 9 रन बनाकर आउट हो गए जबकि कप्तान अभिमन्यू ईश्वरन ने 4 रन की पारी खेली।

राजस्थान के मानव सुथार का दिलीप ट्रॉफी में शानदार प्रदर्शन

मानव के ऑलराउंडर प्रदर्शन से जीती इंडिया-सी टीम

जयपुर, 7 सितम्बर। बीसीसीआई द्वारा आयोजित की जा रही महत्वपूर्ण दिलीप ट्रॉफी में इंडिया सी टीम ने राजस्थान के युवा आल राउंडर मानव सुथार के शानदार प्रदर्शन के दम पर इंडिया डी टीम को हराया। राजस्थान (श्रीगंगानगर) के युवा खिलाड़ी मानव सुथार ने बीसीसीआई द्वारा आयोजित की जा रही मल्टी डेज प्रतियोगिता दिलीप ट्रॉफी में शानदार आल राउंडर प्रदर्शन करके न केवल बीसीसीआई के चयनकर्ताओं का ध्यान अपनी तरफ खींचा है साथ ही भारत की टेस्ट टीम के लिए भी अपना मजबूत दावा पेश किया है। अनंतपुर में खेली जा रही बीसीसीआई द्वारा आयोजित दिलीप ट्रॉफी में इंडिया सी टीम के लिए खेलते हुए मैच में मानव सुथार ने कुल 7 विकेट प्राप्त किये। जिसमे इंडिया डी टीम के विरुद दूसरी पारी में 7 विकेट लिए व इंडिया सी टीम के लिए दूसरी पारी में महत्वपूर्ण नाबाद 19 रन बनाते हुए टीम को 4 विकेट से जीत दिलाई।

इंडिया डी पहली पारी 164 आल आउट हुई, वही इंडिया सी के लिए मानव सुथार ने 1 विकेट प्राप्त किया। इंडिया सी पहली पारी 168 आल आउट हुई, वही इंडिया डी टीम दूसरी पारी 236 आल आउट हुई।

5 प्लेयर्स नहीं जीत सके मेडल

पेरिस, 7 सितम्बर। पेरिस पैरालिंपिक गेम्स का आज 10वां दिन है। भारत से आज शनिवार को 5 प्लेयर्स मेडल नहीं जीत सके। अब एथलेटिक्स के 3 ही इवेंट में चुनौती बची है। तीनों मुकाबले रात 10:30 बजे के बाद शुरू होंगे। भारत ने अब तक पैरालिंपिक गेम्स में 27 मेडल जीत लिए हैं। भारत मेडल टैली में 17वें नंबर पर है। भारतीय खिलाड़ियों ने अब तक 6 गोल्ड, 9 सिल्वर और 12 ब्रॉन्ज मेडल जीते हैं। यह देश का पैरालिंपिक में ऑलटाइम बेस्ट परफॉर्मेंस है। इससे पहले टोक्यो पैरालिंपिक में भारतीय खिलाड़ियों ने 5 गोल्ड समेत 19 मेडल जीते थे। वह 15वें नंबर पर रहीं। मेंस रोड साइक्लिंग इवेंट में अरशद शेख भी रेस पूरी नहीं कर सके, वह 28वें नंबर पर रहे। मेंस की 50 मीटर बटरफ्लाई 7 कैटेगरी में भारत के सुयश जाधव 5वें नंबर पर रहे। विमेंस में 2 कैटेगरी की 200 मीटर विमेंस पैरा कनोइंग फाइनल में भारत की प्राची यादव 8वें नंबर पर रहीं। उन्होंने 1.08.55 मिनट में रेस पूरी की। मेंस 1 कैटेगरी के 200 मीटर कैनो स्प्रिंट सेमीफाइनल में यश कुमार 5वें नंबर पर रहे। वह फाइनल में जगह नहीं बना सके।

अभिजीत तोमर, रोहन राजभर व रजत बघेल सम्मानित

अभय शर्मा विशेष अवार्ड से सम्मानित

जयपुर, 7 सितम्बर। राजस्थान ब्लूज क्रिकेट क्लब की ओर से हर वर्ष की भांती राजस्थान कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष एवं राजस्थान सरकार में मंत्री रहे मथुरा दास माथुर जी की स्मृति में उनके जन्म दिवस के अवसर पर होटल हिलटन में प्रात: 11.30 बजे समारोह में 31वां मथुरा दास माथुर अवार्ड समारोह सम्पन्न हुआ। समारोह में राजस्थान के लिए सत्र 2023-24 में उत्कृर्ष प्रर्दशन करने पर सीनियर वर्ग में अभिजीत तोमर, जुनियर वर्ग में रोहन राजभर व सब जूनियर वर्ग में रजत बघेल को अवार्ड से सम्मानित किया गया तथा विजय मर्चेन्ट ट्रॉफी में उल्लेखनीय प्रदर्शन करने पर अभय शर्मा को उदयमान खिलाड़ी के रुप में अवार्ड से सम्मानित किया। अवार्ड्स के तहत सीनियर वर्ग में 15000 (पन्द्रह हजार) तथा जूनियर व सब जूनियर वर्ग में कमश: साढ़े सात हजार रुपए नकद व सर्टिफिकेट ऑफ एक्सिलेंस, स्मृति चिन्ह, व सम्पूर्ण किट बैग प्रदान किये गये। अवार्ड समारोह के मुख्य अतिथि यूनुस खान (विधायक डीडवाना एवं पूर्व केबीनेट मंत्री), रामारोह के अध्यक्ष डॉ. महेश जोशी (पूर्व केबीनेट मंत्री) व क्लब के अध्यक्ष विनोद माथुर के द्वारा अवार्ड प्रदान किये गये। अवार्ड पाने वाले खिलाड़ियों में सीनियर कैटेगरी में अभिजीत तोगर दायें हाथ के बल्लेबाज, जनियर कैटेगरी में रोहन राजभर दायें हाथ के बल्लेबाज व ऑफ स्पीनर, सी के नायडू तथा सब जूनियर कैटेगरी में रजत बघेल धोलपुर, दायें हाथ का बल्लेबाज एवं विकेट कीपर को अवार्ड्स से सम्मानित किया गया। विजय मर्चेन्ट ट्रॉफी अण्डर 16 में (उदयमान खिलाड़ी) स्पेशल अवार्ड अभय शर्मा दायें हाथ के बैट्समैन को सम्मानित किया गया। समारोह के अन्त में राजस्थान ब्लूज किकेट क्लब की ओर से विनोद माथुर ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

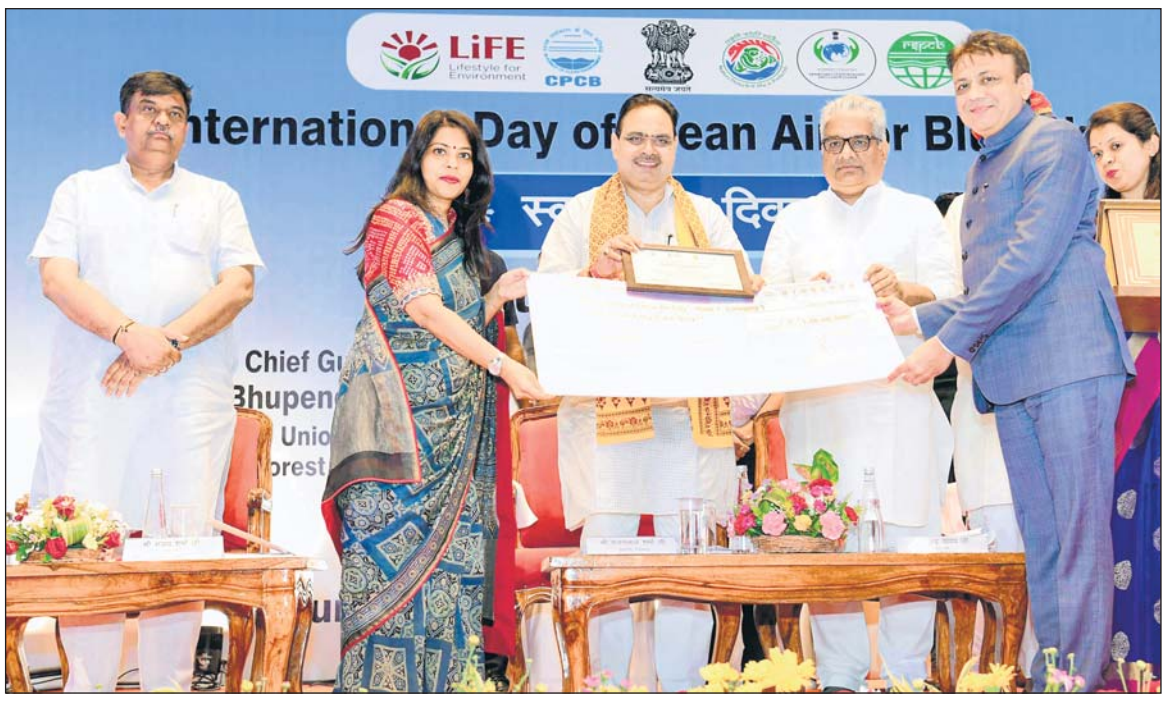

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और केन्द्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेन्द्र यादव ने शनिवार को जयपुर एग्ज़िबिशन एण्ड कन्वेन्शन सैंटर में अंतर्राष्ट्रीय स्वच्छ वायु दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह में स्वच्छ वायु सर्वेक्षण के तहत तीन श्रेणियों (बड़े, मध्यम एवं छोटे शहर) में देश के नौ शहरों को अवॉर्ड दिया। इस कार्यक्रम में नगरीय विकास एवं स्वायत्त शासन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) झाबर सिंह खर्रा, वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संजय शर्मा सहित बड़ी संख्या में पर्यावरणविद् एवं आमजन उपस्थित हुए।

अन्तर्राष्ट्रीय स्वच्छ वायु दिवस पर कई शुभ व नेक इरादे देखने को मिले

मुख्यमंत्री भजनलाल ने कहा कि राज्य में 7 करोड़ पौधे लगाये हैं, 5 वर्ष में 50 करोड़ पौधों का लक्ष्य है

- **मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि अगले वर्ष राज्य का ग्रीन बजट पेश किया जायेगा।**
- **उन्होंने कहा, प्रकृति का संरक्षण हम सब की सामूहिक जिम्मेदारी है, छोटे प्रयासों से बड़ा बदलाव ला सकते हैं।**

जयपुर, 7 सितम्बर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रकृति का संरक्षण हम सब की सामूहिक जिम्मेदारी है। प्रकृति किसी न किसी रूप में मानव जाति को निरंतर सौगातें देती है। बदले में हमें भी प्राकृतिक संसाधनों के सीमित उपयोग और वृक्षारोपण से प्रकृति संरक्षण में अपना योगदान देना चाहिए। उन्होंने कहा कि पानी की व्यर्थ बर्बादी रोकने, थाली में आवश्यकतानुसार ही भोजन लेने और परिवहन के साधनों को साझा रूप से इस्तेमाल करने जैसे छोटे-छोटे प्रयासों से हम बड़ा बदलाव ला सकते हैं। शर्मा शनिवार को जयपुर एग्ज़ीबिशन एंड कन्वेंशन सेंटर में पांचवें स्वच्छ वायु दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 7 सितंबर को नीले अंबर के लिए स्वच्छ वायु का अंतर्राष्ट्रीय दिवस घोषित किया है। इसका उद्देश्य पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाना और वायु गुणवत्ता में सुधार के लिए कार्रवाई को प्रोत्साहन देना है। हमें अपने वर्तमान एवं भविष्य को सुरक्षित रखने तथा जीवन को स्वस्थ बनाए रखने के लिए ये कदम उठाने अति आवश्यक हैं। हम सब जागरूक नागरिक होने का कर्तव्य निभाते हुए वायु प्रदूषण को कम करने में सरकार के प्रयासों में भागीदार बनें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार पर्यावरण संरक्षण की दिशा में प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा चलाए गए एक पेड़ मां के नाम अभियान से प्रेरणा लेकर विश्व पर्यावरण दिवस पर राज्य में वृक्षारोपण महाअभियान शुरू किया है, जिसके तहत 7 करोड़ से अधिक पौधे लगाए जा चुके हैं तथा 5 वर्षों में 50 करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है। साथ ही, मिशन हरियालो राजस्थान के तहत 5 सालों में 4 हजार करोड़ रुपये का निवेश किया जा रहा है। शर्मा ने कहा कि प्रदेश में सभी विकास योजनाओं में ग्रीन ग्रोथ के सिद्धांत तथा पर्यावरण संरक्षण के साथ आगामी वर्ष से राज्य का ग्रीन बजट पेश करने का भी निर्णय लिया गया है। साथ ही, प्रदूषण मुक्त राजस्थान की संकल्पना हेतु बड़े शहरों में 1000 इलेक्ट्रिक बसें शीघ्र ही संचालित की जाएंगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में नेशनल क्लीन एयर प्रोगाम के तहत वायु प्रदूषण की समस्या के समाधान के लिए राज्य स्तरीय कार्य योजना बनाई गई है। अधिक प्रदूषित 5 शहरों के लिए शहरी कार्य योजना भी तैयार की गई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राजस्थान प्रदूषण नियंत्रण मंडल द्वारा वायु गुणवत्ता निगरानी स्टेशन, मोबाइल वैन के माध्यम से वायु गुणवत्ता का मापन, 600 से अधिक उद्योगों में ऑनलाइन प्रदूषण निगरानी प्रणाली भी स्थापित की गई है। उन्होंने कहा कि राज्य में प्रदूषण नियंत्रण मंडल की 13 प्रयोगशालाओं में से 5 प्रयोगशालाओं का आधुनिकरण किया गया है।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए केन्द्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेन्द्र यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मिशन लाइफ का उद्देश्य पर्यावरण हितैषी जीवन शैली अपनाकर प्रकृति का संरक्षण करना है। उन्होंने कहा कि देश के 131 शहरों में नवाचारों एवं तकनीक के उपयोग के संयुक्त प्रयासों से पर्यावरण प्रदूषण को कम किया गया है। केन्द्रीय मंत्री ने कहा कि भारत सरकार आईडियाज फोर लाइफ कार्यक्रम के माध्यम से सात विभिन्न विषयों पर कार्य कर रही है। उन्होंने राजस्थान में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की पहल पर चलाए गए वृक्षारोपण महाभियान की भी सराहना की। इस दौरान स्वच्छ वायु सर्वेक्षण के तहत तीन श्रेणियों (बड़े, मध्यम एवं छोटे शहर) में देश के नौ शहरों को अवार्ड भी दिया गया।

कार्यक्रम में नगरीय विकास एवं स्वायत्त शासन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) झाबर सिंह खर्रा, वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संजय शर्मा, विशिष्ट सचिव केन्द्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालयतन्मय कुमार, अतिरिक्त मुख्य सचिव वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन अपर्णा अरोडा, अतिरिक्त सचिव केन्द्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय नरेशपाल गंगवार सहित कई लोग मौजूद थे।

हरियाणा के पूर्व मंत्री ने भाजपा से इस्तीफा दिया

नई दिल्ली, 7 सितंबर। हरियाणा के पूर्व मंत्री बचन सिंह आर्य ने विधानसभा चुनाव में भाजपा से टिकट नहीं मिलने पर शनिवार को पार्टी से इस्तीफा दे दिया। जींद जिले के सफीदों

- **पूर्व मंत्री बचन सिंह ने टिकट नहीं मिलने से नाराज होकर पार्टी से इस्तीफा देने के बाद बतौर निर्दलीय नामांकन दाखिल कर दिया।**

निवासी आर्य ने बीजेपी की ओर से टिकट नहीं दिए जाने पर निराशा जताई। उन्होने शनिवार को ही सफीदों सीट से बतौर निर्दलीय उम्मीदवार अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। भाजपा ने इस बार जननायक जनता पार्टी के पूर्व विधायक रामकुमार गौतम को सफीदो से अपना उम्मीदवार बनाया है। पूर्व मंत्री बचन सिंह आर्य साल 2019 के विधानसभा चुनाव में करीब 3 हजार वोटों से हार गए थे।

बचन सिंह ने कहा, मैं यह बात पहले भी कह चुका हूं। आज जनता ने मुझे पार्टी छोड़ने के लिए कहा और आपने देखा होगा कि 10 हजार लोगों की भीड़ थी। जब मैं भाजपा में शामिल हुआ तो जनता ने ही मुझसे यह कहा था। लोग उनके काम से संतुष्ट नहीं थे। साथ ही, जींद उनकी कार्यशैली के अनुकूल नहीं है। उन्होंने कहा कि इलाके के लोगों ने बीजेपी को नजरअंदाज किया है। अब मैं जनता के टिकट पर चुनाव लड़ रहा हूं। उन्होंने ही मुझे ऑफर दिया और मैंने इसे स्वीकार कर लिया है। जनता को ही वोट देना है। जो लोग बाहर से आए हैं, उन्हें कभी जीत हासिल नहीं हुई।

गुड़गांव विधानसभा क्षेत्र से टिकट नहीं मिलने से नाराज भाजपा नेता जीएल शर्मा ने शुक्रवार को पार्टी से इस्तीफा दे दिया था। सूत्रों ने बताया कि शर्मा कांग्रेस में शामिल होंगे।

पायलट का जन्मदिन समर्थकों ने पूरे राज्य में गौ सेवा करके मनाया

समर्थकों ने कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव सचिन पायलट का 47वां जन्मदिन गौसेवा दिवस के रूप में मनाया। इस मौके पर कांग्रेस के सभी जिला एवं तहसील मुख्यालयों से गौशालाओं को हजारों क्विंटल चारा वितरित किया गया।

- **सभी जिला व तहसील मुख्यालयों पर जनप्रतिनिधियों, पार्टी पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने हजारों क्विंटल चारा गौशालाओं में वितरित किया।**

जयपुर, 7 सितम्बर (का.प्र.)। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव एवं राज्य के पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट का 47वें जन्मदिन पर प्रदेशभर में कांग्रेसजनों ने गौशालाओ में गौ-सेवा की। इस दौरान सभी जिला मुख्यालयों, तहसील मुख्यालयों पर गौशालाओ में हजारों क्विंटल चारा वितरण किया गया। इन कार्यक्रमों में संबंधित जिलों के वर्तमान एवं पूर्व जनप्रतिनिधिगण, पार्टी पदाधिकारीगण, एवं कार्यकर्तागण मौजूद रहे। इससे पहले भी सचिन पायलट के जन्मदिवस पर प्रतिवर्ष वृक्षारोपण, रक्तदान जैसे कार्य किए जाते रहे हैं। जयपुर में कांग्रेस जनों ने पिंजरापोल गौशाला में गायों के लिए सूखा और हरा चारा उपलब्ध करवाया। यहां चारे की गाड़ियां भेजी गईं। साथ ही गायों को लापसी भी खिलाई गई। जयपुर में ही पूर्व पार्षद इकरामुद्दीन खान के नेतृत्व में भी कांग्रेस जनों ने गायों को हरा चारा खिलाया।

केकड़ी के कार्यकर्ताओं ने जयपुर रोड़ स्थित गौशाला में गायों हरा चारा और गुड खिलाया गया। कई कांग्रेस नेताओं ने इस अवसर पर केक भी काटा। कार्यक्रम में कांग्रेस नेता शैलेंद्र सिंह शक्तावत मुख्य अथिति थे। इस अवसर पर सांवरलाल गुर्जर, रतन पंवार, धनेश जैन, नगर अध्यक्ष हेमंत जैन सहित कई नेता व कार्यकर्ता मौजूद थे।

चुरू जिला मुख्यालय पर कांग्रेसजनों ने पिंजरापोल सोसायटी गौशाला में गाय माता की सेवा पूजा कर केक काटा एवं गौशाला में चारा खिलाया। इस दौरान में पूर्व सभापति गोविंद महँसरिया व क्षेत्र के कई कार्यकर्ता व नेता उपस्थित थे।

झालावाड़ में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने बेसहारा गायों को गुड़ व चारा खिलाकर सचिन पायलट को जन्मदिन की बधाई व शुभकामनायें दी। इस अवसर पर नगर पालिका झालरापाटन के पूर्व चेयरमैन अनिल पोरवाल, ब्लॉक कांग्रेस कमेटी झालरापाटन के पूर्व अध्यक्ष फरीद चौधरी, पूर्व ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष मंजू पोरवाल, पूर्व पार्षद एवं फ्रेंडस क्लब के अध्यक्ष हैदर अली उपस्थित थे। अजमेर उत्तर से कांग्रेस उम्मीदवार रहे महेंद्र सिंह रलावता के नेतृत्व सचिन पायलट के जन्म दिवस पर नारेली गौशाला में गायों को चारा और गुड खिलाया और दरगाह में चादर चढ़ा कर लंबी उम्र की कामना की गई।

'भारत जोड़ो यात्रा ने हमें हिम्मत दी, हमारा हौसला बुलन्द किया'

नयी दिल्ली, 7 सितंबर (वार्ता)। कांग्रेस ने कन्याकुमारी से कश्मीर के श्रीनगर तक के लिए दो साल पहले आज ही के दिन शुरु हुई भारत छोड़ो यात्रा को पार्टी के इतिहास में महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक लम्हा करार देते हुए कहा है कि इससे पार्टी की हिम्मत बंधी और उसके हौसले बुलंद हुए हैं।

कांग्रेस ने कहा ऐतिहासिक लम्हा था जिसने हमें यकीन दिलाया कि सब ठीक हो जाएगा, जिसने हमें हिम्मत दी, हमारा हौसला बना और कहा- डरो मत।

खड़गे ने कहा, भारत जोड़ो यात्रा एक ऐतिहासिक जन-आंदोलन है, जो समाज को एकजुट करने का पर्याय बन गया है। राहुल गांधी जी व हमारे भारत जोड़ो यात्रियों ने कन्याकुमारी से कश्मीर तक पैदल जो दूरी तय की, उससे करोड़ों लोगों के दिलों में प्रेमभाव, आपसी सौहार्द और बंधुत्व की अभूतपूर्व जनचेतना जागृत हुई। भारत जोड़ो यात्रा की दूसरी वर्षगाँठ के अवसर पर मैं देशवासियों से केवल इतनी ही अपील करता हूँ कि संविधान और लोकतंत्र को संजोए रखने का संघर्ष जारी रखें।

- **राहुल गांधी ने भारत जोड़ो यात्रा की दूसरी वर्षगांठ के मौके पर कहा, भारत जोड़ो यात्रा ने मुझे मौन का सौंदर्य सिखाया।**

उन्होंने कहा, आर्थिक असमानताओं, महँगाई, बेरोज़गारी, सामाजिक अन्याय, संविधान के विध्वंस, सत्ता के केंद्रीकरण के वास्तविक मुद्दों पर हमारा संघर्ष जारी है। न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के हमारे संवैधानिक मूल्यों को सुरक्षित रखने का संकल्प और मज़बूत होना चाहिए। नफ़रत और विभाजन के एजेंडे को हम कामयाब नहीं होने देंगे। मोहब्बत और इंसानियत की जीत निश्चित है। कांग्रेस पार्टी थमेगी नहीं, रुकेगी नहीं।

मणिपुर में...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मुताबिक, उग्रवादी जिला मुख्यालय से करीब पांच किलोमीटर दूर एक सुनसान स्थान पर अकेले रहने वाले व्यक्ति के घर में घुसे और उसकी गोली मारकर हत्या कर दी। अधिकारी ने बताया कि हत्या के बाद जिला मुख्यालय से करीब सात किलोमीटर दूर पहाड़ियों में युद्धरत समुदायों के हथियारबंद लोगों के बीच भारी गोलीबारी हुई, जिसमें तीन पहाड़ी उग्रवादियों सहित चार हथियारबंद लोगों की मौत हो गई। गोलीबारी में मरने वाले कुकी और मैतेई दोनों ही समुदायों से हैं। मणिपुर में ताजा हिंसा की घटनाओं के बाद पिछले पांच दिनों से तनाव बहुत बढ़ गया है। शुक्रावर की रात बिष्नुपुर में एक शख्स की हत्या कर दी गई ती। इसके अलावा 2 मणिपुर राइफल्स और 7 मणिपुर राइफल्स के हेडक्वार्टर से हथियार लूटने की कोशिश की गई।

विनेश व पूनिया के कांग्रेस में जाने से तिलमिलाई...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

ने प्रतिक्रिया दी और कहा कि जहाँ भाजपा उनके साथ खड़ी है, जो गलत करते हैं, वहीं कांग्रेस सदैव उनके साथ खड़ी है, जिनके साथ गलत होता है।

उन्होंने कहा, "जो लोग भी गलत काम करते हैं, भाजपा उनके साथ खड़ी है और वे लोग भाजपा के साथ होते है। जिन-जिन लोगों के साथ गलत होता है, कांग्रेस उनके लिये लड़ती है, उनकी आवाज़ उठाती है तथा भविष्य में भी उठाती रहेगी तथा यही कारण है कि वे लोग भी कांग्रेस को पसंद करते हैं।"

खेड़ा ने आगे कहा कि बृज भूषण शरण सिंह के खिलाफ छः खिलाड़ियों ने एफ.आई.आर. दर्ज करायी थी तथा पार्टी को गर्व है कि पार्टी उनके साथ खड़ी है। उन्होंने कहा, "बृज भूषण शरण सिंह के खिलाफ छः खिलाड़ियों ने एफ.आई.आर. दर्ज करायी थी। हमें गर्व है कि हम अपनी उन बेटियों के साथ खड़े थे, खड़े हैं तथा खड़े रहेंगे। हमें भी इसका अफसोस नहीं होगा कि हम अपनी बेटियों के साथ खड़े थे। उन्हें (भाजपा) को इसका अफसोस होना चाहिये।"

ये दोनों पहलवान 2023 में सिंह के खिलाफ हुये व्यापक विरोध-प्रदर्शन में सबसे आगे थे तथा इन्होंने सिंह पर आरोप लगाया था कि उन्होंने डब्ल्यू.एफ.आई. प्रमुख के अपने कार्यकाल के दौरान बहुत सी महिला पहलवानों का यौन-उत्पीड़न किया था।

सिंह ने कहा, "18 जनवरी, 2023 जिस दिन जंतर-मंतर पर यह विरोध शुरु किया था, मैंने कहा था कि यह आंदोलन खिलाड़ियों का नहीं है, इसके पीछे कांग्रेस है। (इसके पीछे) खासतौर से भूपेन्द्र हूडा, दीपेन्द्र हूडा, प्रियंका जी तथा राहुल जी हैं। यह कांग्रेस का आंदोलन है तथा आज यह बात सिद्ध हो गई है। उस पूरे आंदोलन में हमारे साथ साजिश रची गई थी, उसमें कांग्रेस शामिल थी तथा भूपेन्द्र हूडा उसका नेतृत्व कर रहे थे।

सिंह, विनेश फोगाट तथा बजरंग पूनिया के साथ ही कांग्रेस नेताओं, जिन्हें वे उस विरोध प्रदर्शन के लिये जिम्मेदार मानते हैं, पर जबरदस्त बरसे।

सिंह ने कहा, "मैं हरियाणा की जनता को बताना चाहता हूँ कि भूपेन्द्र हूडा, दीपेन्द्र हूडा, बजरंग और विनेश लड़कियों की गरिमा की खातिर (विरोध पर) नहीं बैठे थे। उनके कारण ही हरियाणा की बेटियाँ परेशानियों का सामना कर रही हैं। इसके लिये जिम्मेदार हम नहीं, भूपेन्द्र हूडा और दीपेन्द्र हूडा जिम्मेदार हैं तथा ये विरोध-प्रदर्शन करने वाले जिम्मेदार हैं।

भाजपा नेता ने यह सवाल भी किया कि अगर यह सिद्ध हो जाये कि वे उस घटना वाले दिन दिल्ली में नहीं थे, जिस घटना को लेकर उनके खिलाफ आरोप लगाये गये थे तो उस स्थिति में उनकी निन्दा करने वाले क्या कहेंगे। उन्होंने कहा, "उन्होंने राजनीति के लिये बेटियों का उपयोग किया तथा बेटियों को, खासतौर से महिला एथलीट्स को बदनाम किया। वे लोग बेटियों के सम्मान के लिये नहीं लड़ रहे थे, वे लोग राजनीति के लिये लड़ रहे थे।"

भाजपा नेता ने दावा किया कि वे उस मामले में निर्दोष हैं तथा उन्होंने इन पहलवानों तथा कांग्रेस पार्टी पर बेटियों का असम्मान करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा, "बेटियों के असम्मान का दोषी मैं नहीं हूँ।

अगर बेटियों के असम्मान का कोई दोषी है, तो वे बजरंग और विनेश है तथा वह व्यक्ति है, जिसने इस साजिश की पटकथा लिखी। वह व्यक्ति भूपेन्द्रसिंह है। एक दिन कांग्रेस को इस पर अफसोस होगा। उनकी ये टिप्पणियाँ विनेश फोगाट तथा बजरंग पूनिया के विविवत कांग्रेस में शामिल होने के एक दिन बाद आई हैं। कांग्रेस ने बजरंग पूनिया को ऑल इंडिया किसान कांग्रेस का कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त कर दिया है। 90 सदस्यों वाली हरियाणा विधानसभा के चुनाव 5 अक्टूबर को होने हैं तथा मतगणना 8 अक्टूबर को होगी।

पेपर लीक केस...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पूछताछ पूरी नहीं हुई है। ऐसे में उनके पुलिस रिमांड की अवधि को छः दिन के लिए और बढाया जाए। इस पर अदालत ने आरोपियों की रिमांड अवधि 10 सितंबर तक बढ़ा दी। सुनवाई के दौरान रामू राम राईका ने कहा कि उसे जो भी जानकारी थी, वह उसने एस.ओ.जी. को बता दी है। इसके साथ ही राईका रुआंसा हो गया। गौरतलब है कि पेपर लीक मामले में एस.ओ.जी. ने गत एक सितंबर को राईका सहित अन्य आरोपियों को गिरफ्तार किया था।

'अचानक घटना से...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हो गया। उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उसकी मौत हो गई। प्रार्थिया ने याचिका दायर कर बीमा कंपनी सहित अन्य से क्लेम दिलवाने का आग्रह किया। बीमा कंपनी ने जवाब में कहा कि बीमित वाहन से एक्सीडेंट नहीं हुआ व मृतक के हार्ट की कई बीमारियां थीं। उसने शराब पी रखी थी और उसके कोई प्राण घातक चोटें नहीं आई। उसकी मौत एक्सिडैंट का परिणाम नहीं थी बल्कि उसकी मौत कार्डियक अरेस्ट से हुई है। इसलिए बीमा कंपनी क्लेम राशि देने के लिए जिम्मेदार नहीं है। प्रार्थी पक्ष का जवाब था कि एफ.एस.एल. रिपोर्ट में सामने आया है कि मृतक ने एल्कोहल ले रखा था, लेकिन मेडिकल जूरिस्ट का कहना है कि जितनी मात्रा में उसने शराब पी रखी थी, उससे कार्डियक अरेस्ट नहीं आ सकता। ऐसा अकस्मात हादसे से हुआ है। इस लिए बीमा कंपनी मृतक के आश्रितों को क्लेम राशि का भुगतान करे।

यूक्रेन काफी...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अभिव्यक्ति वो थी जब उसने अचानक सीमावर्ती क्षेत्रों में रूस के शहरों पर कब्जा करना शुरू कर दिया। यूक्रेन को कुछ सफलता मिली और वो रूसी क्षेत्रों तक पहुंच गया था। इससे भी यूक्रेन के कुछ यूरोपीय मित्र राष्ट्र थोड़ा घबरा गए। दूसरी तरफ, रूस भी युद्ध की थकान के संकेत दे रहा है और पुतिन ने समझौते के कुछ संदेश भी भेजे हैं। भारत के प्र.मंत्री की कीएव यात्रा के बाद रूस ने अन्य देशों के साथ भारत का नाम लिया है, मध्यस्थता करने वाले संभावित देश के रूप में।

नाबालिग का अपहरण...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

16 वर्षीय पुत्री घर से लापता हो गई। वहीं उससे मिलने वालों का पता किया तो महादेव प्रसाद भी रात से गायब है। ऐसे में उसे शक है कि वह उसकी बेटी को बहला फुसला कर ले गया है। रिपोर्ट पर कार्रवाई करते हुए पुलिस ने अभियुक्त को गिरफ्तार कर अदालत में आरोप पत्र पेश किया।

सुनवाई के दौरान पीडिता ने अदालत को बताया कि जब वह 11वीं कक्षा में थी, तो महादेव उसका शिक्षक था। इसके चलते दोनों में बातचीत होती थी। महादेव ने उस पर दबाव डालकर घर छोड़ने का पत्र लिखवाया और दस्तावेजों सहित 12 अप्रैल की रात घर के बाहर बुलाया। जब वह बाहर गई तो महादेव उसे अपनी कार से सीकर ले गया। यहां उसे दो दिन तक एक मकान में रखा और कई बार दुष्कर्म किया। वहीं 15 अप्रैल को पुलिस वहां आ गई और उन्हें लेकर चली गई। वहीं अभियुक्त की ओर से कहा गया कि उसे प्रकरण में झूठा फंसाया गया है। दोनों पक्षों की बहस सुनने के बाद अदालत ने अभियुक्त को सजा सुनाई और जुर्माना लगाया।

हरियाणा में नहीं होगा...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

तारीख 12 सितम्बर है। आप हरियाणा में चुनाव प्रचार में जुटी हुई है। पार्टी चीफ, अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल राज्य में जनसभाएं करेंगी।

कक्कड़ ने कहा, "हम, सभी 90 सीटों पर चुनाव लड़ने को तैयार है।"

शुक्रवार को आप के सूत्रों ने कहा था कि गठबंधन को लेकर वार्ता विफल होने के कगार पर है।

इण्डिया ब्लॉक के घटक, आप और कांग्रेस ने हरियाणा, गुजरात और दिल्ली में गठबंधन करके चुनाव लड़ा था। हरियाणा में, आप ने कुरुक्षेत्र सीट से चुनाव लड़ा था, जहाँ से उसके राज्य इकाई अध्यक्ष, सुशील गुप्ता भाजपा के नवीन जिंदल से हार गए थे।

अपनी "फोकस्ड" शैली के कारण हैरिस का...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अन्धाधुंध वक्तव्यों के प्रति ट्रम्प के झुकाव को बाइडन की ओर से कोई चुनौती नहीं दी गई थी। जबकि बाइडन ने स्पष्टता और फोकस कायम रखा था।

अगर हम आगे की बात करें तो उपराष्ट्रपति कमला हैरिस 10 सितम्बर की आगामी बहस में ट्रम्प के लिए बहुत मुश्किल, बल्कि दुर्जेय प्रतिद्वन्द्वी सिद्ध हो सकती हैं। हैरिस की बहसों का इतिहास, जिसमें केलिफोर्निया में उनके राज्यपाल-विषयक आन्दोलन भी शामिल हैं, बताता है कि वे सटीक बात कहने में निपुण हैं तथा अपने विरोधियों की कमजोरियों का उनके ही खिलाफ इस्तेमाल करना उन्हें खूब आता है। उनकी वकालत की पृष्ठभूमि ने उन्हें किसी विषय का प्रतिपादन करने में तथा तर्क देने में सटीक बना दिया है, जबकि इसके विपरीत, ट्रम्प की प्रवृत्ति तथ्यात्मक प्रस्तुति के बजाय आडम्बरपूर्ण शब्दों का प्रयोग करने की है।

पिछली बहसों में, हैरिस ने अपने विरोधियों की बातें बड़े प्रभावी तरीके से काटी हैं तथा टकराव के क्षणें में आत्मसंयम बरतने तथा उन्हें हैंडल करने की अपनी क्षमता प्रदर्शित की है। उदाहरण के लिए, 2019 के दौरान, एक प्राथमिक डेमोक्रेटिक बहस में, हैरिस ने जो बाइडन के दावे को चुनौती दी थी, तथा इसके लिए बाइडन सीनेट की एक अन्य अफ्रीकन-अमेरिकन महिला के समर्थन का उल्लेख किया था, हैरिस व बाइडन की गलती को उजागर करने परिहास एवं आत्मविश्वास का सहारा लिया था। इसी प्रकार, 2010 में केलिफोर्निया के अटॉर्नी जनरल के प्रचार में, उन्होंने अपने विरोधी की पेंशन के बारे में की गई उसकी भारी भूल का इस्तेमाल अपने पक्ष में किया था। उनकी तीखी शैली ट्रम्प की अपेक्षाकृत गतिशीलता पर बहुत भारी है।

हैरिस यह भी दर्शा चुकी हैं कि वे अपने आक्रोश को अपने मजबूत जवाबों के रूप में ढ़ाल सकती हैं, जिसका प्रमाण उन्होंने अक्टूबर 2020 की बहस में उन्होंने माइक पेन्स को फटकारते हुए दिया था। अपनी कमजोरी को ताकत के प्रदर्शन का रूप देने की उनकी क्षमता उन्हें ट्रम्प पर बढ़त दिला सकती है क्योंकि ट्रम्प बहसों में प्राय: भावनात्मकता से बचते हैं और उनमें खुद को अनुशासित करने की क्षमता नहीं है।

राष्ट्रीय स्तर पर ट्रम्प की तुलना अपेक्षाकृत अनुभवहीन होने के बावजूद, हैरिस ने बहस के लिए रणनैतिक कुशलता विकसित कर ली है तथा उससे वे अपना काम अच्छी तरह चला सकती हैं दूसरी तरफ, ट्रम्प उनके खिलाफ सुसंगत तथा रणनैतिक हमला करने में हाथ-पैर मारते प्रतीत होते हैं। वे उनकी विश्वसनीयता को कमजोर करने तथा उन्हें एक मामूली खतरा मानने की बीच पेन्डुलम बन सकते हैं। हैरिस अपनी स्थितियों में ज्यादा व्यवस्थित प्रतीत होती हैं, जबकि ट्रम्प अभी तक "प्रजनन-अधिकारों" जैसे प्रमुख मुद्दो पर अपना रुख साफ तौर पर परिभाषित नहीं कर पाए हैं तथा ये चीजें उनके प्रभाव को कम कर सकती हैं।

इसके अलावा, हैरिस का आत्मविश्वास उनकी बहस की रणनीति में साफ झलकता है, जैसे वे माइक्रोफोन को खुला रखना पसन्द करती है तथा इससे ट्रम्प बचाव करने की मुद्रा में आते प्रतीत होते हैं। हैरिस की इस विशिष्टता के विपरीत, बाइडन, ट्रम्प की दखलन्दाजी को रोकने के लिए माइक्रोफोन को बन्द रखने का आग्रह करते थे। हैरिस की माइक्रोफोन को खुला रखने की प्रवृति दर्शाती है कि अपनी सामर्थ्य पर भरोसा है।

कुल मिलाकर, ये बहसें जहाँ परम्परागत रूप से केन्द्रीय महत्व की नहीं रही हैं, लेकिन हैरिस और ट्रम्प के बीच की आगामी बहस बहुत महत्वपूर्ण एवं निर्णायक सिद्ध हो सकती है। स्वयं को एक सक्षम एवं सामर्थ्यवान नेता के रूप में अपनी विश्वनीयता स्थापित करने की हैरिस की कोशिशों तथा ट्रम्प की असंगत प्रस्तुतियाँ तथा खुद को बचाने की कोशिशों के चलते, यह बहस हैरिस को एक ऐसा महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करेगी कि वे चुनाव से पूर्व अपनी स्थिति को मजबूत कर सकें।

इस बीच, एक पृथक रिपोर्ट के अनुसार, जमीनी स्तर के एक नये संगठन "हिन्दूज फॉर अमेरिका फर्स्ट" ने राष्ट्रपति पद के लिए डॉनल्ड ट्रम्प का समर्थन किया है तथा इस संगठन ने पेनसिलवेनिया जॉर्जिया एवं नार्थ कैरोलाइना जैसे अनिश्चित रुख वाले राज्यों में डेमोक्रेटिक उम्मीदवार कमला हैरिस के खिलाफ सक्रियतापूर्ण प्रचार शुरू कर दिया है।

इस ग्रुप के अध्यक्ष उत्सव सन्दुजा ने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा है कि हैरिस के राष्ट्रपति बनने से भारत-अमेरिका सम्बन्ध अस्थिर हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि हैरिस उदार जजों को नियुक्त कर सकती हैं, जो सर्वोच्च न्यायालय के महत्वपूर्ण फैसलों को उलट सकें, तथा उनका असर एशियन-अमेरिकन मतदाताओं पर पड़ सकता है।

सन्दुजा ने सीमा-सुरक्षा की बाइडन-हैरिस प्रशासन द्वारा की गई हैंडलिंग की आलोचना की तथा कहा कि हैरिस ने गैर-कानूनी तौर पर विदेशियों के आने तथा अमेरिका में बसने को रोकने के लिये कुछ नहीं किया। इसके द्वारा अपराध तथा ड्रग-स्मगलिंग, जिनमें एशियन-अमेरिकन बिजनैस-मालिक भी शामिल हैं, पर नकारात्मक असर पड़ा। इसके विपरीत, सन्दुजा ने ट्रम्प की प्रशंसा करते हुए कहा कि उन्होंने मैरिट-आधारित अप्रवासन-सुधार किए हैं तथा उन्होंने भारत के साथ रक्षा तथा टैक्नोलॉजी सम्बन्ध मजबूत किए थे। सन्दुजा ने ट्रम्प की प्रशंसा करते हुए कहा कि ट्रम्प भारत के प्रबल समर्थक हैं, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ उनके अच्छे एवं सकारात्मक सम्बन्ध हैं तथा उन्होंने रक्षा-प्रोजेक्टों में सहभागिता की है जिससे चीन का प्रतिकार किया जा सके।

उन्होंने हैरिस पर आरोप लगाया कि वे भारत के बारे में नकारात्मक टिप्पणियाँ करती हैं। उन्होंने कहा कि ट्रम्प भारत के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप करने से बचते थे। "हिन्दूज फॉर अमेरिका फर्स्ट" महत्वपूर्ण राज्यों में हिन्दुओं में समर्थन के रैलियाँ आयोजित कर रहा है। इस संगठन ने बाँग्लादेश जैसे देशों में हिन्दुओं के उत्पीड़न को लेकर चिन्ता व्यक्त की हैं तथा ट्रम्प की प्रशंसा करते हुए कहा है कि उन्होंने अपने राष्ट्रपति काल में इन मुद्दों की अहमियत समझी थी।

मार्डन मीडिया, बीकानेर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 35214/79, जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय:-राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908